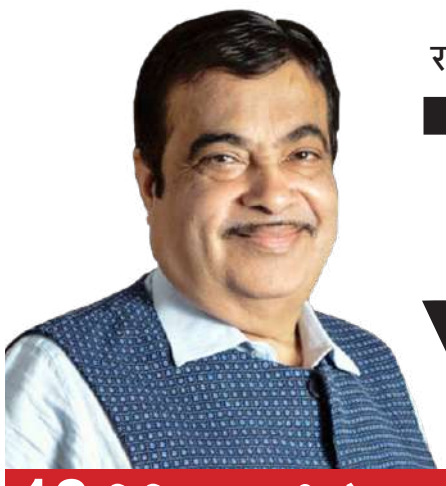

राष्ट्रीय दैनिक

प्रातः किरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

12 नितिन गडकरी को धमकी के आरोपी ने निगला तार, हालत खतरे से बाहर.... यूपी एक बीमारू राज्य से एक समृद्ध राज्य के रूप मे अपनी पहचान बना रहा है... 12

वर्ष : 14 | अंक : 149 | नई दिल्ली, सोमवार, 09 अक्टूबर, 2023 | विक्रम संवत् 2080 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

तृणमूल कांग्रेस का राजभवन के समक्ष अनिश्चितकालीन प्रदर्शन चौथे दिन भी जारी

कोलकाता, एजेंसी

तृणमूल कांग्रेस महासचिव अभिषेक बनर्जी के नेतृत्व में पार्टी कार्यकताओं का राजभवन के समक्ष प्रदर्शन रविवार को लगातार चौथे दिन भी जारी रहा। तृणमूल कांग्रेस के कार्यकताओं ने जोर देकर कहा कि उनका प्रदर्शन तब तक जारी रहेगा जबतक राज्यपाल सी.वी.आनंद बोस प्रदर्शन स्थल पर आकर उनसे नहीं मिलते हैं। तृणमूल कांग्रेस के तीन सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने शनिवार को दार्जीलिंग में राज्यपाल से मुलाकात की थी और उनसे मनरेगा योजना के तहत राज्य की बकाया राशि के भुगतान का मुद्दा केंद्र के समक्ष उठाने का आह्वान किया। उन्होंने राज्यपाल से राजभवन के समक्ष प्रदर्शन कर रहे प्रदर्शनकारियों से भी मुलाकात करने का अनुरोध किया। बनर्जी ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' (पूर्व में ट्विटर) पर पोस्ट किया, ''हमारे धरना का तीसरा दिन दो नैतिक जीत के साथ संपन्न हुआ। जमीनदार दिल्ली का

एकांतवास छोड़कर कोलकाता आने को मजबूर हुए हैं, राज्यपाल अंततः हमारे प्रतिनिधिमंडल से यथाशीघ्र मिलने के लिये सहमत हो गए हैं। मुझे भरोसा है कि बंगाल अपने लोगों की लड़ाई में जीत दर्ज करेगा।'' मनरेगा योजना के तहत राज्य की लंबित राशि के मुद्दे पर पश्चिम बंगाल का सियासी पारा शनिवार को चढ़ गया। पिछले दिन कोलकाता के दौरे पर आईं केंद्रीय मंत्री साध्वी निरंजन ज्योति और तृणमूल के राष्ट्रीय महासचिव अभिषेक बनर्जी ने मनरेगा के बकाए को लेकर नई दिल्ली में केंद्रीय मंत्री के साथ तृणमूल कांग्रेस प्रतिनिधिमंडल की निर्धारित बैठक को लेकर एक-दूसरे के बारे में झूठ बोलने का आरोप लगाया है। केंद्रीय ग्रामीण विकास राज्यमंत्री ज्योति ने जोर देकर कहा कि केंद्र सरकार ने गत नौ साल में नियमित तौर पर मनरेगा योजना के तहत पश्चिम बंगाल को राशि आवंटित की है। उन्होंने साथ ही आरोप लगाया कि पश्चिम बंगाल के कई जिलों में इस राशि के खर्च में अनियिमतता सामने आई है। तृणमूल कांग्रेस के प्रतिनिधिमंडल से दिल्ली में मुलाकात नहीं करने के आरोपों का खंडन करते हुए ज्योति ने कहा कि पश्चिम बंगाल की सत्तारूढ़ पार्टी राजनीति कर रही है जबकि वह चर्चा को तैयार हैं। केंद्रीय मंत्री की टिप्पणी पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए तृणमूल सांसद अभिषेक बनर्जी ने कहा कि वह दिल्ली में बैठक को लेकर झूठ फैला रही हैं और जोर देकर कहा कि पार्टी उनसे राजभवन में मुलाकात करने को तैयार है।

मौसम

अधिकतम तापमान 35.6°C

न्यूनतम तापमान 26.9°C

राजधानी दिल्ली व आसपास के क्षेत्रों में आज भी बारिश के आसार

हां	30%
नहीं	50%
कह नहीं सकते	10%

बाजार

सोना 61,140

चांदी 73,500

सेंसेक्स 67,597

निफ्टी 20,133

सिक्किम में बाढ़ से मरने वालों की संख्या बढ़कर 30 हुई, 81 लोग अभी भी लापता

गंगटोक, एजेंसी

सिक्किम में पिछले दिनों आई अचानक बाढ़ में मरने वालों की संख्या रविवार को बढ़कर 30 हो गई, जबकि 81 लोग अभी तक लापता हैं। यह जानकारी राज्य सरकार ने दी। उत्तरी सिक्किम में लोनक झील में बादल फटने से चार अक्टूबर को तीस्ता नदी बेसिन में अचानक बाढ़ आ गई थी, जिसके कारण यह त्रासदी हुई। इस बीच, केंद्रीय गृह राज्य मंत्री अजय कुमार मिश्रा ने सिक्किम के मुख्य सचिव वीबी पाठक, भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण, सीमा सड़क संगठन, भारत-तिब्बत सीमा पुलिस, य सेना और नेशनल हाइड्रोइलेक्ट्रिक पावर कॉरपोरेशन के अधिकारियों के साथ ताशिलिंग सचिवालय में एक आपातकालीन समीक्षा बैठक की। सरकारी विज्ञप्ति के अनुसार, लगभग 1320 घर बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए और शनिवार शाम तक 2563 लोगों को बचाया गया। बचाए गए लोगों में से 26 लोग गंभीर रूप से घायल थे जिन्हें विभिन्न अस्पतालों में भर्ती किया गया। यह त्रादसी चार अक्टूबर को सुबह छह बजे हुई, जिसमें तीस्ता-वी पनबिजली स्टेशन के नीचे की ओर 13 पुल बह गए, जो जलमग्न हो गए थे, जिसके कारण संचार बाधित हो गया। केंद्रीय राज्य मंत्री अजय कुमार मिश्रा ने कहा कि स्थिति पर पूरी नजर रखी जा रही है और राज्य के लिए

सभी आवश्यक समर्थन और सहायता प्रदान की जा रही है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह नुकसान का आकलन और बचाव एवं राहत कार्य के संबंध में मुख्यमंत्री पी एस तमांग के साथ लगातार संपर्क में हैं। श्री मिश्रा को मुख्य सचिव पाठक ने अक्टूबर से राहत एवं पुनर्वास के लिए उठाए गए कदमों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि राज्य की मांगों को तुरंत पूरा किया जाएगा। केंद्रीय मंत्री ने कहा,ह्लसामान्य जीवन बहाल करने के लिए केंद्र और राज्य को मिलकर काम करना होगा। हम प्राथमिकताओं की पहचान कर रहे हैं और यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि जनता की आवश्यकताओं को पूरा किया जाए।ह्व उन्होंने स्थिति पर पूरा ध्यान रखने और प्रभावित लोगों तक पहुंचने के लिए मुख्यमंत्री तमांग के उत्साह और समर्पण की सराहना की। एक सवाल के जवाब में श्री मिश्रा ने कहा कि प्रधानमंत्री बहुत संवेदनशील हैं। हम हर चीज को राजनीतिक चश्मे से नहीं देखते और हमने हमेशा मानव संसाधन को महत्व दिया है। सिक्किम बहुत महत्वपूर्ण है और दूसरे राज्यों से अलग है और इसकी तुलना अन्य राज्यों से नहीं की जा सकती है। राज्य मंत्री ने कहा कि केंद्र ने एक अंतर-मंत्रालयी समिति का गठन किया है जिसमें भारत सरकार के पांच मंत्रालयों कृषि, सड़क परिवहन और राजमार्ग, जल शक्ति, ऊर्जा और वित्त मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी शामिल हैं। यह टीम रविवार से राज्य का दौरा करेगी और जमीनी स्थिति और नुकसान का आकलन करेगी और जहां कहीं भी आवश्यक होगा, सहायता प्रदान करेगी। मंत्री ने कहा कि केंद्र सरकार ने 2023-24 के लिए एनडीआरएफ और एसडीआरएफ के लिए आवंटित बजट को अग्रिम मंजूरी प्रदान की है जिससे राज्य में तत्काल बचाव, राहत और बहाली की जा सके। राज्य मंत्री मिश्रा ने राज्य सरकार के अधिकारियों को जल्द से जल्द पुनर्निर्माण करने के लिए अल्पकालिक और दीर्घकालिक योजनाएं तैयार करने का निर्देश भी दिया।

सिक्किम बाढ़ की स्थिति की समीक्षा के लिए पहुंचे केंद्रीय मंत्री

केंद्रीय गृह राज्य मंत्री अजय कुमार मिश्रा ने सिक्किम में बाढ़ की स्थिति को एक बड़ी त्रासदी बताते हुए कहा है कि मानव जीवन को बचाना अब प्राथमिकता है। श्री मिश्रा ने शनिवार को एक उच्च स्तरीय बैठक में राज्य में बाढ़ की स्थिति का जायजा लिया। ताशिलिंग सचिवालय में विचार-विमर्श के दौरान मुख्य सचिव वीबी पाठक और राज्य सरकार और भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण, सीमा सड़क संगठन, भारत-तिब्बत सीमा पुलिस, भारतीय सेना और राष्ट्रीय जलविद्युत ऊर्जा निगम के अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित थे। श्री मिश्रा ने अक्टूबर के बाद से राहत और पुनर्वास के लिए उठाए गए कदमों के बारे में जानकारी ली और मुख्य सचिव पाठक ने उन्हें जानकारी दी। उन्होंने कहा कि राज्य की मांगें तुरंत पूरी की जाएंगी। मंत्री मिश्रा ने कहा, 'सामान्य जीवन बहाल करने के लिए हमें (केंद्र और राज्य) मिलकर काम करना होगा। हम प्राथमिकताओं की पहचान पर काम कर रहे हैं और यह सुनिश्चित करने के लिए कि जनता की आवश्यकताएं पूरी हों।' उन्होंने स्थिति की देखभाल करने और प्रभावितों तक पहुंचने में सीएम पीएस तमांग के उत्साह और समर्पण की सराहना की।श्री मिश्रा ने कहा कि अचानक आई बाढ़ से हुए नुकसान का आकलन करने और जहां भी आवश्यक हो सहायता प्रदान करने के लिए गठित एक अंतर मंत्रालयी समिति रविवार से प्रभावित क्षेत्रों का दौरा करने जा रही है। राज्य मंत्री ने राज्य सरकार के अधिकारियों को जल्द से जल्द पुनर्निर्माण के लिए अल्पकालिक और दीर्घकालिक योजनाएं तैयार करने का निर्देश दिया।

कंपनी के खाते को हैक करके निकाले 16,180 करोड़ रुपये

ठाणे, एजेंसी

महाराष्ट्र के ठाणे में लोगों के एक समूह ने भुगतान गेटवे सेवा मुहैया कराने वाली एक कंपनी के खाते को कथित रूप से हैक कर अलग-अलग बैंक खातों से 16,180 करोड़ रुपये निकाल लिए। ठाणे पुलिस ने यह जानकारी दी। नौपाडा थाने के एक अधिकारी ने बताया कि यह धोखाधड़ी लंबे अरसे से चल रही थी लेकिन मामला तब सामने आया जब महाराष्ट्र के ठाणे शहर में श्रीनगर थाने में एक शिकायत दर्ज कराई गई। पुलिस के मुताबिक, शिकायत में अप्रैल 2023 में यहां कंपनी के भुगतान गेटवे खाते को हैक कर उसमें से 25 करोड़ रुपये निकालने का आरोप लगाया गया था। अधिकारी ने प्राथमिकी का हवाला देते हुए बताया कि जब पुलिस ने मामले की जांच की तो 16,180 करोड़ रुपये का बड़ा घोटाला सामने आया। ठाणे अपराध शाखा के एक अधिकारी की शिकायत के बाद नौपाडा थाने में शुक्रवार को संजय सिंह, अमोल अंदाले, अमन,केदान, समीर दिघे, जितेन्द्र पांडेय और अज्ञात लोगों के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धारा 420 (धोखाधड़ी), 409 (विश्वास का आपराधिक उल्लंघन), 467, 468 (जालसाजी), 120 बी (आपराधिक साजिश), 34 (समान इरादा) और सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम के प्रावधानों के तहत मामला दर्ज किया गया है। पुलिस ने बताया कि मामले में अभी तक कोई गिरफ्तारी नहीं हुई है। प्राथमिकी के मुताबिक, आरोपी जितेन्द्र पांडेय ने पूर्व में आठ से 10 वर्षों तक बैंकों में रिलेशनशिप एवं सेल्स मैनेजर के रूप में काम किया था। अधिकारी ने बताया कि पुलिस को संदेह है कि इस मामले में कई बड़े लोग शामिल हो सकते हैं और हो सकता है कि गिरोह ने पूरे भारत में कई कंपनियों और लोगों को अपना शिकार बनाया हो। अधिकारी ने बताया कि मामले की जांच जारी है।

संक्षिप्त खबरें

इजरायल पर आतंकी हमले की कांग्रेस ने की निंदा, कहा- हिंसा समाधान नहीं

कांग्रेस ने इजरायल पर हमास आतंकियों के हमले की निंदा करते हुए कहा है कि हिंसा कभी भी कोई समाधान नहीं दे सकती है और इसे रोकना चाहिए। पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने एक्स पर कहा कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस इजराइल के निर्दोष नागरिकों पर हुए क्रूर हमलों की कड़े शब्दों में निंदा करती है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का सदैव मानना रहा है कि आत्म-सम्मान, समानता और गरिमा के जीवन के लिए फिलीस्तीनी लोगों की वैध आकांक्षाओं को इजराइल के वैध राष्ट्रीय सुरक्षा हितों को सुनिश्चित करते हुए केवल बातचीत की प्रक्रिया के जरिए पूरा किया जाना चाहिए। किसी भी प्रकार की हिंसा कभी भी कोई समाधान नहीं दे सकती है और इसे रोकना चाहिए। उल्लेखनीय है कि हमास आतंकियों ने फिलीस्तीन-इजरायल संघर्ष के तहत शनिवार को गाजापट्टी से एक बड़ा हमला किया। हमले में 200 से ज्यादा इजरायली नागरिकों की मौत हुई है और कई नागरिक हमास आतंकियों की कैद में हैं। भारत ने इस पूरे घटनाक्रम में इजरायल के साथ एकजुटता दर्शाई है और आतंकी हमले की निंदा की है।

इसरो ने आदित्य-एल1 के प्रक्षेपण को किया पूरा

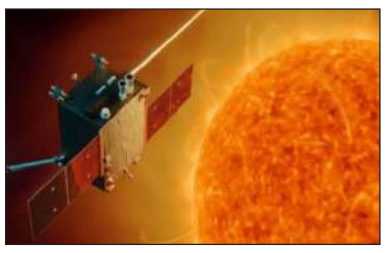

बेंगलुरु, एजेंसी

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने रविवार को कहा कि उसने देश के पहले सौर मिशन आदित्य एल1 अंतरिक्ष यान के प्रक्षेपण पथ संशोधन संबंधी प्रक्रिया (टीसीएम) को पूरा कर लिया है। इसरो ने कहा कि अंतरिक्ष यान ठीक तरीके से काम कर रहा है। इसरो ने 'एक्स' (पूर्व में ट्विटर) पर कहा, ''अंतरिक्ष यान बिल्कुल सही स्थिति में है और सूर्य की तरफ बढ़ रहा है। छह अक्टूबर को इसके प्रक्षेपण पथ में लगभग 16 सेकंड के लिए सुधार किया गया था। इसे ट्राजेस्टरी करेक्शन मैनुवर (टीसीएम) कहा जाता है।'' इसरो ने कहा कि 19 सितंबर, 2023 को किए गए ट्रांस-लैग्रेंजियन प्वाइंट1 इंसर्शन (टीएल1आई) को ट्रैक करने के बाद मूल्यांकन किए गए प्रक्षेपण पथ को सही करने के लिए इसकी आवश्यकता थी। आदित्य-एल1 को सूर्य-पृथ्वी के लैग्रेंजियन बिंदु (एल1) से अवलोकन के लिए तैयार किया गया है। एल1 पृथ्वी से लगभग 15 लाख किमी दूर स्थित है। इसरो के अनुसार, टीसीएम प्रक्रिया यह सुनिश्चित करती है कि अंतरिक्ष यान एल1 के आसपास 'हेलो' कक्षा में प्रवेश की दिशा में अपने निर्धारित पथ पर है। अंतरिक्ष एजेंसी ने कहा, ''जैसे-जैसे आदित्य-एल1 आगे बढ़ता रहेगा, मैग्नेटोमीटर कुछ दिनों के भीतर फिर से चालू हो जाएगा।'' आदित्य एल1 को दो सितंबर को श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र (एसडीएससी) से सफलतापूर्वक प्रक्षेपित किया गया था। अंतरिक्ष यान के 125 दिन में पृथ्वी से लगभग 15 लाख किमी की दूरी तय करने के बाद, लैग्रेंजियन बिंदु एल1 के आसपास एक 'हेलो' कक्षा में स्थापित होने की उम्मीद है जिसे सूर्य के सबसे करीब माना जाता है। यह विभिन्न अध्ययनों समेत वैज्ञानिक प्रयोगों के लिए सूर्य की तस्वीरें भी भेजेगा।

इजराइल में भारतीय जरूरत पड़ने पर भारतीय दूतावास से संपर्क करें: विदेश राज्य मंत्री

कोच्चि, एजेंसी

विदेश राज्य मंत्री वी. मुरलीधरन ने रविवार को इजराइल में फंसे भारतीयों से सुरक्षित रहने तथा मदद की जरूरत पड़ने पर वहां भारतीय दूतावास से संपर्क करने का आग्रह किया है। इजराइल में फलस्तीनी समूह हमास के साथ लड़ाई जा रही है। मुरलीधरन ने यहां पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि भारतीय दूतावास ने वहां भारतीयों को सुरक्षित रहने के लिए पहले ही परामर्श जारी कर दिया है। उन्होंने कहा, इजराइल में भारतीय किसी भी समय भारतीय दूतावास से संपर्क कर सकते हैं। दूतावास वहां फंसे भारतीयों को हर तरह की सहायता देगा। इजराइल और हमास संगठन के बीच जारी संघर्ष पर भारत के रुख के बारे में पूछे जाने पर, मुरलीधरन ने कहा कि प्रधानमंत्री ने इसपर रुख स्पष्ट कर दिया है और इजराइल पर आतंकी हमले पर आश्चर्य जताया है। केंद्रीय मंत्री ने कहा, हम इजराइल के लोगों के साथ एकजुटता व्यक्त करते हैं। हमास ने इजराइल पर रविवार को हमला कर दिया था जिसमें 200 से ज्यादा इजराइलियों की मौत हो गई है। मीडिया में आई खबरों के मुताबिक, इजराइल ने गाजा पर हवाई हमले कर इसका जवाब दिया है जिसमें 230 से ज्यादा लोगों की मौत हो गई है। तेल अवीव में भारतीय दूतावास और फलस्तीन में भारत के प्रतिनिधि कार्यालय ने शनिवार को परामर्श जारी कर संबंधित देशों में भारतीय नागरिकों से ह्यसतर्क रहनेह्ल और आपात स्थिति में सीधे कार्यालय से संपर्क करने को कहा। भारतीय दूतावास की वेबसाइट पर दिए गए विवरण के अनुसार, इजराइल में करीब 18,000 भारतीय नागरिक हैं।

भाजपा शासित राज्य क्यों नहीं करा रहे जाति आधारित गणना : कांग्रेस

नई दिल्ली, एजेंसी

कांग्रेस ने जाति आधारित गणना के मुद्दे पर रविवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की चुप्पी पर निशाना साधा और सवाल किया कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) शासित राज्य सामाजिक न्याय और अधिकारों को सुनिश्चित करने के लिए इसे क्यों नहीं करा रहे हैं। राजस्थान की कांग्रेस नीत सरकार द्वारा जाति आधारित गणना कराने के लिए एक सरकारी आदेश जारी किये जाने के एक दिन बाद पार्टी की यह टिप्पणी आई है। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने कहा कि जब 'भारत जोड़ो यात्रा' राजस्थान में थी, तब पार्टी के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी नेता ने कई समुदायों के प्रतिनिधियों से मुलाकात की थी और उसी वक्त अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के प्रतिनिधि मंडलों ने जाति आधारित गणना कराने की मांग की थी। रमेश ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा,''राहुल गांधी ने उनकी बातों को बहुत गंभीरता से लिया। उनकी भावनाओं के अनुरूप अब राजस्थान सरकार ने जाति आधारित गणना कराने का निर्णय किया है। यह स्वागत योग्य कदम है।'' कांग्रेस नेता ने कहा,''इससे विशेष रूप से अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए नीतियां बनाने में मदद मिलेगी। सामाजिक न्याय सुनिश्चित करना और लोगों को उनकी आबादी के अनुसार अधिकार देना भी बहुत महत्वपूर्ण है।'' रमेश ने कहा,''प्रश्न यह है कि किसी भी भाजपा शासित राज्य में ऐसा कोई कदम क्यों नहीं उठाया जा रहा और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जाति आधारित गणना के मुद्दे पर चुप क्यों हैं।'' कांग्रेस देश भर में जाति आधारित गणना कराने की मांग कर रही है और इसे चुनावी मुद्दा बना रही है। बिहार के बाद जाति सर्वेक्षण कराने वाला राजस्थान देश का दूसरा राज्य होगा। राजस्थान में इस साल के अंत में विधानसभा चुनाव होने हैं और चुनाव कार्यक्रम की घोषणा जल्द होने की उम्मीद है।

जंग जंग लंबी चल सकती है। हम अपनी डिफेंस फोर्स की पूरी ताकत का इस्तेमाल करके हमास को तबाह कर देंगे.....

इजराइल ने जवाबी हमले में हमास के 400 लड़ाके मारे: भारत अपने स्टूडेंट्स को निकालेगा

नई दिल्ली,, एजेंसी

हमास और इजराइल के बीच शनिवार को शुरू हुई दूसरे दिन भी जारी है। इजराइल ने कहा है कि रविवार को जंग में उसके 30 सैनिक मारे गए हैं। इजराइल की डिफेंस मिनिस्ट्री ने बताया है कि उनकी कार्रवाई में अब तक हमास के 400 लड़ाके मारे गए हैं और कई को पकड़ लिया है। वहीं, भारत की विदेश राज्य मंत्री मीनाक्षी लेखी ने कहा कि सरकार इजराइल में फंसे भारतीय छात्रों को वापस लाने की पूरी कोशिश कर रही है। दरअसल, हमास ने इजराइल में मौजूद दूसरे देशों के नागरिकों को भी कब्जे में लेना शुरू कर दिया है। वहां थाइलैंड के 2 नागरिकों की मौत हो गई है। थाईलैंड के प्रधानमंत्री ने बताया है कि उनके 11 नागरिकों हमास के कब्जे में है। हमास ने 200 से ज्यादा इजराइलियों को बंदी बनाया इजराइली डिफेंस फोर्स के स्पोक्सपर्सन जॉनथन कॉनरिकस ने वीडियो जारी कर

आरोप लगाया कि हमास ने महिलाओं और बच्चों समेत करीब 200 इजराइली लोगों को बंधक बना लिया है। इन्हें गाजा की तरफ ले जाया गया है। जॉनथन ने आशंका जताई कि यह आंकड़ा बढ़ भी सकता है। उन्होंने कहा- हमास ने हो सकता है कि कई महिलाओं और बच्चों को मार भी दिया हो। इस बारे में हमारे कोई ठोस जानकारी नहीं है। उन्हें बचाने की कोशिश की जा रही है। दरअसल, सोशल मीडिया पर कई वीडियोज वायरल हो रहे हैं जिनमें हमास के लड़ाके इजराइली नागरिकों को जबरदस्ती गाड़ियों में बैठाकर ले जाते दिखाई दे रहे हैं। हालांकि, लोकल मीडिया की रिपोर्ट के हवाले से कहा कि कुछ बंधकों को छुड़ा लिया गया है। नेतन्याहू बोले- ये जंग लंबी चल सकती है, हम इसे जरूर जीतेंगे जंग के बीच शनिवार रात को इजराइल के PM बेंजामिन नेतन्याहू ने जनता को संबोधित किया। उन्होंने कहा- ये जंग लंबी चल सकती है। हम अपनी डिफेंस फोर्स की पूरी ताकत का इस्तेमाल करके हमास को तबाह कर देंगे। गाजा में रह रहे लोगों को बाहर निकल जाना चाहिए। उन्होंने कहा- शनिवार को जो हुआ वो इजराइल ने आज तक कभी नहीं देखा था और हम दोबारा ऐसा कभी होने नहीं देंगे। हमास हम सबकी हत्या करना चाहता है। वो मांओं और बच्चों को उनके घरों में मार रहा है। वो एक ऐसा दुश्मन है जो बुजुर्गों, बच्चों और लड़कियों को निशाना बनाता है। वो छुट्टियों का आनंद ले रहे बच्चों और आम नागरिकों का नरसंहार कर रहे हैं। हमास के सैन्य कमांडर मोहम्मद दीफ ने शनिवार को कहा था- ये हमला यरूशलम में अल-अक्सा मस्जिद को इजराइल की तरफ से अपवित्र करने का बदला है। दरअसल, इजराइली पुलिस ने अप्रैल 2023 में अल-अक्सा मस्जिद में ग्रेनेड फेंके थे। वहीं, हमास के प्रवक्ता गाजी हामद ने अल जजीरा से कहा था- ये कार्रवाई उन अरब देशों को हमारा जवाब है, जो इजराइल के साथ करीबी बढ़ा रहे हैं। हाल ही के दिनों में मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया गया था कि अमेरिका की पहल पर सऊदी अरब इजराइल को देश के तौर पर मान्यता दे सकता है। ईरान हमास तो पश्चिमी देश इजराइल के साथ मास और इजराइल के बीच चल रहे संघर्ष को लेकर दुनियाभर से प्रतिक्रिया आ रही हैं। पश्चिमी देशों अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांस ने हमास के हमले की निंदा की है। वहीं ईरान ने हमास का समर्थन किया है।

संक्षिप्त समाचार

छापे में कोल्हू पर जलती मिली रबर, पीसीबी ने किया सील

रूड़की, एजेंसी। प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की टीम ने शुक्रवार को गन्ना कोल्हुओं पर छापे मारे। इस दौरान एक कोल्हू पर रबर जलती मिली। उसे पीसीबी की टीम ने सील करा दिया है। कोल्हू संचालक को नोटिस जारी किया गया है। लंढौरा क्षेत्र में 24 से अधिक गन्ना कोल्हू संचालित है। क्षेत्र के एक पूर्व सैनिक ने ज्वाइंट मजिस्ट्रेट से शिकायत की थी कि क्षेत्र में कई ऐसे गन्ना कोल्हू हैं, जहां ईंधन के रूप में रबर जलाई जा रही है। इससे क्षेत्र में गंभीर वायु प्रदूषण हो रहा है। कोल्हू में रबर, प्लास्टिक का कचरा, रेक्सीन आदि जलाई जा रही है। शिकायत का संज्ञान लेते हुए ज्वाइंट मजिस्ट्रेट अभिनव शाह ने प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को मामले की जांच के निर्देश दिए। इसके चलते प्रदूषण नियंत्रण विभाग की टीम ने वैज्ञानिक सहायक अमित भारद्वाज के नेतृत्व में रुड़की-लक्सर मार्ग पर स्थित गन्ना कोल्हू पर छापे मारे। इस दौरान एक कोल्हू पर रबर जलती मिली। टीम ने इस कोल्हू को सील कर दिया है। पीसीबी की इस कार्रवाई से क्षेत्र के अन्य कोल्हू संचालकों में हड़कंप मचा रहा। कुछ संचालकों ने तो कार्रवाई के डर से अपने कोल्हू तक बंद कर दिए। प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के क्षेत्रीय अधिकारी सोमपाल सिंह ने बताया कि विभाग की कार्रवाई लगातार जारी रहेगी। टीम में कानूनगो आदेश कुमार के अलावा पुलिस टीम भी शामिल रही।

शटरिंग से लोहे की 85 प्लेट चोरी

रूड़की, एजेंसी। निर्माणाधीन रेलवे ट्रैक से चोरों ने शटरिंग से लोहे की 85 प्लेट चोरी कर ली। पुलिस ने तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर लिया है। साथ ही मामले की जांच शुरू कर दी है। रुड़की-देवबंद रेलवे लाइन का निर्माण कार्य चल रहा है। निर्माण कार्य में लोहे की शटरिंग लगी हुई है। बृहस्पतिवार रात को चोरों ने शटरिंग में लगी लोहे की 85 प्लेट चोरी कर ली। इसकी भनक सुरक्षाकर्मी को भी नहीं लग पाई। शुक्रवार सुबह निर्माण कार्य करने पहुंचे कर्मचारियों ने प्लेट गायब देखी तो होश उड़ गए। उन्होंने चोरी की सूचना अधिकारियों को दी। साथ ही मामले में सिक्योरिटी एवं सर्विस कंपनी के फील्ड अफसर कुलदीप सिंह निवासी अब्दुलापुर, थाना देवबंद जिला सहारनपुर की ओर से गंगनहर कोतवाली पुलिस को तहरीर दी गई। कोतवाली प्रभारी अमरजीत सिंह ने बताया कि चोरी का केस दर्ज कर लिया गया है। घटनास्थल पर किसी वाहन के पहियों के निशान भी मिले हैं। इसके आधार पर जांच की जा रही है। साथ ही आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों को भी खंगाला जा रहा है। जल्द ही घटना का खुलासा किया जाएगा।

बजरंग दल की शौर्य जागरण यात्रा में पहुंचे सीएम धामी, कार्यकर्ताओं के तलवार लहराने पर हुआ हंगामा

हरिद्वार, एजेंसी। कार्यक्रम में सैकड़ो की संख्या में बजरंग दल के कार्यकर्ता शामिल हुए। इस दौरान कई कार्यकर्ताओं ने तलवारे लहरा दी। पुलिस ने उन्हें रोका तो कार्यकर्ताओं ने हंगामा कर दिया। हरिद्वार में शुक्रवार को विश्व हिन्दू परिषद के देशव्यापी अभियान के तहत बजरंग दल की शौर्य जागरण यात्रा का आयोजन किया गया। इस दौरान यात्रा के समापन पर सीएम पुष्कर सिंह धामी भी सरस्वती विद्या मंदिर मायापुर पहुंचे। कार्यक्रम में सैकड़ो की संख्या में बजरंग दल के कार्यकर्ता शामिल हुए। इस दौरान कई कार्यकर्ताओं ने तलवारे लहरा दी। पुलिस ने उन्हें रोका तो कार्यकर्ताओं ने हंगामा कर दिया। पुलिस ने काफी मशक्कत के बाद भीड़ को संभाला और हंगामा शांत कराया।

दहेज में नहीं मिली बुलेट तो पति ने पत्नी को घर से निकाला; 5 लोगों पर पुलिस ने दर्ज किया मुकदमा

लक्सर, एजेंसी। दहेज में बुलेट मोटरसाइकिल व एक लाख की नकदी की मांग पूरी न होने पर ससुरालयों ने विवाहिता को मारपीट कर घर से निकाल दिया। पुलिस ने न्यायालय के आदेश पर उसके पति समेत ससुराल पक्ष के पांच लोगो के खिलाफ कला मुकदमा दर्ज किया है। लक्सर कोतवाली क्षेत्र के हिरनाखेड़ी गांव निवासी विशाखा ने न्यायालय को प्रार्थना पत्र लेकर बताया कि बीस जनवरी वर्ष 2021 को उसने रमन के साथ प्रेम विवाह किया था। शादी के कुछ समय बाद तक तो सब कुछ ठीक-ठाक चलता रहा। आरोप है कि इसके बाद ससुराल पक्ष के लोगों द्वारा उसे प्रताड़ित किया जाने लगा तथा दहेज में बुलेट मोटरसाइकिल व एक लाख की मांग की जाने लगी। पुलिस से शिकायत करने पर मामले में कोई कार्रवाई नहीं की गई। जिस पर उसे न्यायालय की शरण लेनी पड़ी।

दुधौली के ग्रामीण अधिकारियों के न पहुंचने से नाराज

द्वाराहाट (अल्मोड़ा), एजेंसी। द्वाराहाट के दुधौली में सरकार जनता के द्वार कार्यक्रम के तहत अधिकारियों के न पहुंचने का आरोप लगाते हुए ग्रामीणों ने आक्रोश जताया है। ग्रामीण आनंद सिंह बिष्ट ने बताया कि क्षेत्र की मुख्य समस्या सड़क और पेयजल की है, लेकिन दोनों विभागों के अधिकारी ही समस्या सुनने यहां नहीं पहुंचे। जोगा राम, भूपाल सिंह नेगी, चंदन सिंह, गोपाल सिंह, भूपाल सामंत, दिनेश चंद्र खोलिया सहित अन्य ग्रामीणों ने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों में केवल औपचारिकता निभाई जा रही है जो गंभीर है।

सुशीला तिवारी अस्पताल प्रबंधन की लापरवाही: परिजनों ने हंसता-बोलता बच्चा भेजा, अस्पताल ने शव लौटाया

नैनीताल, एजेंसी। हल्दवी के सुशीला तिवारी अस्पताल प्रबंधन की लापरवाही सामने आई है।बृहस्पतिवार को अस्पताल में बागेश्वर जिले के गरुड़ के पाटली निवासी 11 वर्षीय कृष्णा को परिजन हंसता खेलता लाए थे लेकिन अस्पताल प्रबंधन की लापरवाही से उन्हें कृष्णा का शव ले जाना पड़ा।

कुमाऊं का सबसे बड़ा अस्पताल, लेकिन संवेदनशीलता शून्य। लोग बड़ी उम्मीद लेकर पहाड़ से अपने बच्चों व परिजनों को इलाज के लिए यहां लाते हैं लेकिन सुशीला तिवारी अस्पताल प्रबंधन को इसकी तनिक भी परवाह नहीं।

बृहस्पतिवार को अस्पताल में बागेश्वर जिले के गरुड़ के पाटली निवासी 11 वर्षीय कृष्णा को परिजन हंसता खेलता लाए थे लेकिन अस्पताल प्रबंधन की लापरवाही से उन्हें अपने लाडले का शव ले जाना पड़ा। उसे ब्रेन हेमरेज हुआ था। उसका ऑपरेशन किया जाना था पर कुमाऊं के सबसे बड़े अस्पताल में यह ऑपरेशन नहीं हो सका। बच्चे के परिजनों ने ऑपरेशन में देरी का आरोप लगाया। न्यूरो सर्जरी-एनेस्थीसिया विभाग इसके लिए एक-दूसरे को जिम्मेदार बता रहे हैं। मेडिकल कॉलेज प्रबंधन मामले की जांच कराने की

बात कह रहा है।

कृष्णा की मौसी आरती ने बताया कि पांच अक्तूबर को घर के पास खेलते समय वह चोटिल हो गया था। उसके सिर में चोट लगी थी। बच्चे को गरुड़ के निजी अस्पताल लेकर गए थे। वहां से उसे अल्मोड़ा के बेस अस्पताल रेफर किया गया। अल्मोड़ा से हल्द्वानी के सुशीला तिवारी अस्पताल के लिए भेज दिया गया। बताया कि पांच अक्तूबर की रात नौ बजे बच्चे को एसटीएच की इमरजेंसी में लेकर पहुंचे। यहां से बच्चे को न्यूरोसर्जरी वार्ड में शिफ्ट कर दिया गया। सीटी स्कैन से ब्रेन हैमरेज का पता चला।

ऑपरेशन से पहले बच्चे ने अपनी मां को बताया कि उसके सिर में दर्द हो रहा है। वहां मौजूद स्टाफ ने बच्चे से बोला कि हाथ-पैर हिलाओ दर्द सही हो जाएगा। इसके कुछ घंटों बाद ही बच्चे ने दम तोड़ दिया।

आरती ने आरोप लगाया कि शनिवार सुबह अस्पताल के स्टाफ ने बताया कि ऑपरेशन किया जाएगा। ऑपरेशन के लिए दिन में करीब 12 बजे कपड़े बदले गए। इसके बाद करीब ढाई बजे तक रुके रहे, लेकिन कोई ऑपरेशन के लिए नहीं पहुंचा। आरोप है कि अस्पताल में भी बच्चे को देखने के लिए सीनियर डॉक्टर नहीं आए। बच्चे की मौसी ने अधिकारियों को मामले में शिकायत करने की बात कही है। वहीं, अस्पताल प्रबंधन का कहना है कि बच्चे का इलाज सीनियर डॉक्टर की निगरानी में चल रहा था।

परिजनों का आरोप है कि वे बच्चे को ऑपरेशन थियेटर के बाहर 12 बजे लेकर पहुंचे थे। डॉक्टर का इंतजार करते रहे लेकिन वह तीन बजे बाद पहुंचे। ओटी के अंदर तक नहीं ले गए। ऑपरेशन की तैयारी हो गई है।

27 करोड़ से कवर होंगे रुद्रपुर के गंदे नाले

रुद्रपुर, एजेंसी। शहरवासियों को अब बारिश में गंदे नालों से सड़कों में बहने वाले गंदे पानी से निजात मिलने की उम्मीद है। नगर निगम शहरी क्षेत्र के दो प्रमुख नालों को कवर करने की तैयारी कर रहा है। इसके लिए 27 करोड़ रुपये की डीपीआर तैयार की जा रही है।

एनएच-87 के समीप अटरिया मंदिर को जाने वाली सड़क के बगल में पड़ने वाले नाले में काफी गंदगी दिखाई देती है। जी-20 के समय डेलीगेट्स आने पर जिला प्रशासन की ओर से नाले को औपचारिक रूप से कवर किया गया था ताकि मेहमानों को शहर की गंदगी न दिखाई दे। अटरिया मंदिर को जाने वाली सड़क के नाले के साथ ही अब नगर निगम की ओर से प्रिंस होटल के पीछे वाला नाला, काशीपुर बाईपास सड़क के दोनों ओर नाले, पीएसी के पास से शांति कॉलोनी होते हुए अग्रसेन चौक वाला बड़ा नाला मिलाया जाएगा। इसके साथ ही निरंकार साइकिल स्टोर के पास वाले नाले को काशीपुर बाईपास के नाले से जोड़ते हुए कल्याणी में पानी डाला जाएगा। मेयर रामपाल सिंह ने बताया कि नाले कवर होने के बाद इसमें बाहर से गंदगी नहीं आ पाएगी। वहीं नाले कवर करने के साथ ही नाले की सफाई के लिए भी उसमें जगह छोड़ी जाएगी। डीपीआर फाइनल होने के बाद उसे शासन में बजट की मांग के लिए भेजा जाएगा।

अभिनय के शौक ने बीटेक के बाद नीरज को पहुंचाया मायानगरी

काशीपुर, एजेंसी। अभिनय के शौक ने बीटेक करने के बाद क्षेत्र के एक युवा को मायानगरी मुंबई पहुंचा दिया। सिल्वर स्क्रीन पर छाने की ललक में उन्होंने संघर्ष किया और आज वह अपनी पहचान बना रहे हैं। अक्षय कुमार की इस शुक्रवार को रिलीज हुई फिल्म मिशन रानीगंज में काशीपुर के नीरज नेगी कोयला मजदूर बांके लाल की भूमिका निभा रहे हैं।

फोन पर हुई बातचीत में नीरज ने बताया कि 2015 में कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग रुड़की से बीटेक किया था। बीटेक के दौरान कलाकार आलोक उल्फत से दून में मुलाकात हुई तो अभिनय शुरू किया। फिर अविकल थियेटर कंपनी में काम किया। शौक बढ़ने लगा तो एमपी स्कूल ऑफ ड्रामा से वर्ष 2016-17 में डिप्लोमा किया। 2019 में मुंबई की ओर रुख किया। उनका सपना है कि भविष्य में काशीपुर की प्रतिभाओं को तलाशने के लिए कार्यशाला आयोजित करेंगे।

नीरज को शेखर झा निर्देशित फिल्म लिटिल बेबी से बॉलीवुड में ब्रेक मिला। वह मूल रूप से पौड़ी गढ़वाल और काशीपुर में पटेल नगर स्थित निरंकारी भवन के पास रहने वाले सेवानिवृत्त रजिस्ट्रार धर्म सिंह नेगी के बड़े बेटे हैं। माता श्वेतसरी नेगी गृहिणी हैं। उन्होंने अपनी सफलता का श्रेय माता-पिता को दिया है।

कोऑपरेटिव सोसायटी में करोड़ों के घोटाले में दो और आरोपी गिरफ्तार

हल्द्वानी, एजेंसी। कोऑपरेटिव सोसायटी बनाकर आम लोगों की जमा पूंजी हड़पने वाले लोगों पर पुलिस की कार्रवाई जारी है। सोसायटी बनाकर करोड़ों का घोटाला करने के आरोप में दो और आरोपी पुलिस की गिरफ्त में आ गए हैं। मामले में पूर्व में भी दो गिरफ्तारी हो चुकी है।

अरविंद पंत निवासी सोल्जर्स कॉलोनी बिठौरिया ने अपने साथियों आनंद सिंह निवासी दमुवाढूंगा खाम और संतोष पंत निवासी गायत्री नगर काठगोदाम के साथ मिलकर विजन सोशल सोसायटी और विदित अक्षय विजन निधि लिमिटेड के नाम से हल्द्वानी में कोऑपरेटिव सोसायटी खोली थी जिनमें करीब साढ़े तीन हजार निवेशकों की साढ़े सात करोड़ रुपये की रकम जमा हुई थी। बाद में सोसायटी के निदेशकों ने निवेशकों को रुपया लौटाना बंद कर दिया जिसके बाद निदेशकों के ऊपर मुकदमे दर्ज हुए। इस क्रम में विगत दिनों अरविंद पंत की गिरफ्तारी हो गई।

नई खरीदीं नहीं, अब पहाड़ पर पुरानी बस दौड़ाने की तैयारी

अल्मोड़ा, एजेंसी। पर्वतीय क्षेत्रों की सड़कों पर अब पुरानी बस ही दौड़ाई जाएंगी। नई बस की खरीद न कर पाने पर परिवहन निगम ने मानकों के नियमों में बदलाव कर दिया है और उम्र पूरी कर चुकीं पुरानी बस दौड़ाने की योजना बनाई है। कुमाऊं के बड़े पर्वतीय जिले अल्मोड़ा और पिथौरागढ़ में इस साल के अंत तक 63 पुरानी बस का संचालन करने की तैयारी चल रही है।

पहाड़ की सड़कों पर दुर्घटनाओं को रोकने और यात्रियों का सफर सुरक्षित बनाने के उद्देश्य से नई बस के सात वर्ष या पहाड़ी सड़कों पर सात लाख किमी का सफर पूरा करने के बाद मैदानी इलाकों में संचालित किया जाता था। अब पहले से ही घाटे में चल रहे परिवहन निगम के लिए नई बस की खरीद संभव नहीं हो पा रही है इसलिए निगम ने नियम में बदलाव कर पुरानी बसों को ही पहाड़ी सड़कों पर दौड़ाने की योजना बनाई है। अब खरीद के 15 साल तक बस का संचालन पहाड़ की सड़कों पर किया जा सकता है। निगम का दावा है कि अपनी उम्र पार करने के बाद भी बस में पहाड़ का सफर सुरक्षित होगा। इस दायरे में अल्मोड़ा में 20 और पिथौरागढ़ में 43 पुरानी बस शामिल हैं। अन्य पर्वतीय जिलों में भी हालात कुछ ऐसे ही हैं। संवाद अल्मोड़ा में बीते एक साल में दो बस का ब्रेक तो एक का स्टीयरिंग फेल हो गया था। वहीं अल्मोड़ा-पिथौरागढ़ हाईवे पर पिथौरागढ़ डिपो की एक बस का स्टीयरिंग जाम होने से पैरापिट से टकरा गई थी।

हल्द्वानी में बम परीक्षण के सूचना से पुलिस में हड़कंप

हल्द्वानी, एजेंसी। दिल्ली में पुलिस ने संदिग्ध आतंकियों को पकड़ा है जिन्होंने खुलासा किया है कि उन्होंने पूर्व में हल्द्वानी में बम धमाके का परीक्षण किया था। इतना ही नहीं, धमाकों का वीडियो पाकिस्तान में अपने आकाओं को भेजा था। इस समाचार से पुलिस में हड़कंप मचा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रस्तावित कुमाऊं दौरे के बीच आई इस खबर से सतर्कता बढ़ा दी गई है। एसएसपी प्रहलाद नारायण मीणा ने कहा कि समाचार उनके संज्ञान में आया है।

रानीखेत को जोड़ने वाले हाईवे पर गड्ढों के बीच सफर मुश्किल

रानीखेत (अल्मोड़ा), एजेंसी। पर्यटन कारोबार को बढ़ाने के लिए पर्यटकों की आवाजाही सुगम बनाने के लिए सड़कों को गड्ढामुक्त करने के दावे धरातल पर नहीं दिख रहे हैं।

पर्यटन नगरी रानीखेत के साथ प्रसिद्ध बिनसर महादेव मंदिर को जोड़ने वाला बदहाल एसएच रानीखेत-भतरौंजखान इसका प्रमाण है। यह हाईवे गड्ढों से पटा है। पर्यटक और यात्री खतरे के बीच सफर कर रहे हैं। हालात ये हैं कि इस हाईवे के सात किमी के दायरे में बने 380 से अधिक गड्ढे पर्यटकों के लिए समस्या पैदा करते हैं। बिनसर महादेव मंदिर के दर्शन के लिए जाने में भी उन्हें समस्याओं का सामना करना पड़ रहा हैं। आजादी से पूर्व रानीखेत-भतरौंजखान सड़क का निर्माण किया गया। आजादी के बाद इसे स्टेट हाईवे का दर्जा दिया गया। यह सड़क रानीखेत, भतरौंजखान, ताड़ीखेत, सोनी सहित देश की आस्था का केंद्र बिनसर महादेव मंदिर को जोड़ती है। वर्तमान में यह हाईवे उपेक्षा का सामना करते हुए गड्ढा मुक्त होने का इंतजार कर रहा है। ताड़ीखेत से सोनी तक सात किमी दायरे में गड्ढों से पटा यह हाईवे सरकारी मशीनरी के दावों को खोखला साबित कर रहा है।

सात किमी में 350 से अधिक गड्ढे बने हैं। इससे दुर्घटना का खतरा बना हुआ है। आए दिन गड्ढों पर रपटकर तीन से चार दोपहिया वाहन चालक अस्पताल की दौड़ लगा रहे हैं। हैरानी की बात ये है कि 13 साल बाद भी हाईवे पर हॉटमिक्स नहीं किया जा सका है। इससे सड़क हर दिन और बदहाल हो रही है।

गदरपुर में पुलिस का नशे के खिलाफ अभियान, अफीम के साथ दो तस्कर गिरफ्तार

ऊधम सिंह नगर, एजेंसी। नशे के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान में महतोष पुलिस चौकी क्षेत्र में भारी मात्रा में अफीम पकड़ी गई है। पुलिस ने तीन किलो अफीम के साथ दो तस्करों को गदरपुर से गिरफ्तार किया हैं।

गदरपुर में पुलिस को बड़ी कामयाबी मिली हैं। नशे के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान में महतोष पुलिस चौकी क्षेत्र में भारी मात्रा में अफीम पकड़ी गई है। पुलिस ने तीन किलो अफीम के साथ दो तस्करों को गदरपुर से गिरफ्तार किया हैं। बरामद अफीम की कीमत 30 लाख रुपए बताई जा रही है।

गदरपुर पुलिस ने कुछ दिनों पूर्व भी बरेली क्षेत्र से स्मैक आदि नशीले पदार्थों को बुलाकर बेचने वाले दो लोगों को गिरफ्तार किया था। उत्तर प्रदेश का सीमावर्ती थाना क्षेत्र होने के कारण गदरपुर में नशे के सौदागर घुसपैठ बनाने में लगे हैं।

सूत्रों का कहना है कि पुलिस मामले की गहनता से छानबीन में लगी हुई है और शनिवार को घटना के संबंध में खुलासा कर सकती है। सीओ बाजपुर भूपेंद्र सिंह भंडारी और गदरपुर थानाध्यक्ष राजेश पांडे ने बताया कि अफीम तस्करी के शक में कुछ लोगों से पूछताछ की जा रही है।

पहाड़ी खानपान को पर्यटन से जोड़ा जाए : पंत

भवाली (नैनीताल), एजेंसी। भीमताल ग्राफिक एरा हिल यूनिवर्सिटी में तीन दिवसीय किताब कौतिक मेला के दूसरे दिन शुक्रवार को पद्मश्री डॉ. यशोधर मठपाल, पंतनगर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति बीके बिष्ट, ब्लॉक प्रमुख डॉ. हरीश बिष्ट और परिसर निदेशक प्रो. डॉ एमसी लोहानी ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

कार्यक्रम में लेखक और विचारक प्रो. पुष्पेश पंत ने कुमाऊंनी खानपान की विशेषताओं से अवगत कराया। उन्होंने पहाड़ी खानपान को पर्यटन से जोड़ने की बात कही। कथाकार प्रो. प्रयाग जोशी ने जिया रानी के इतिहास और सांस्कृतिक पक्ष पर जानकारी दी। प्रो. शेखर पाठक ने नैनीताल की खोज से लेकर अब तक के इतिहास से अवगत कराया। पद्मश्री डॉ यशोधर मठपाल, ब्लॉक प्रमुख डॉ. हरीश बिष्ट ने किताब कौतिक की सराहना की। इस दौरान जूनियर हाईस्कूल के बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। राज्य सूचना

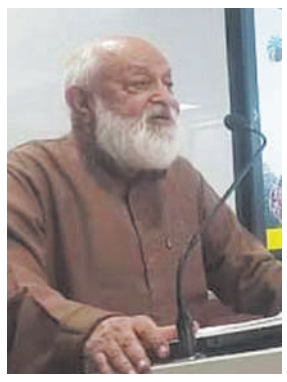

आयुक्त योगेश भट्ट ने किताब कौतिक का निरीक्षण करने के साथ सूचना के अधिकार विषय पर विस्तार से जानकारी दी। कार्यक्रम में श्रीकृष्णचरितामृत के रचयिता महेश कुमार वर्मा अशांत को सम्मानित किया गया। देर शाम सांस्कृतिक संध्या में प्रह्लाद मेहरा और घुघुति जागर टीम ने कार्यक्रम पेश किए। इस दौरान संयोजक हेम पंत, संजीव भगत, मोहित जोशी आदि मौजूद रहे।

युवक ने मौसी के बेटे के अपहरण के नाम पर मांगी फिरौती

रूड़की, एजेंसी। एक युवक ने बदमाशों का डर दिखाकर मौसी के बेटे का अपहरण करने के नाम पर चार लाख की फिरौती मांग की। पुलिस ने मामले की जांच की तो सच्चाई सामने आई। पुलिस ने तहरीर के आधार पर युवक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है।

सिविल लाइंस कोतवाली क्षेत्र स्थित मंदाकिनी कॉलोनी, मोहनपुरा निवासी अनिल कुमार ने पुलिस को बताया कि वह अपनी पत्नी और 10 साल के बेटे के साथ रहता है। दो अक्तूबर की दोपहर उनके पास साढ़ू का बेटा वैभव आनंद मूलरूप निवासी गांव मुंडेट, मंगलौर और हाल निवासी रामपुरी मुजफ्फरनगर घर आया था। उसने बताया कि दो सप्ताह पूर्व उसे तीन बाइक सवार मिले थे। उन्होंने उनके घर की जानकारी ली थी। इस पर उसने उन्हें पूरी जानकारी दे दी थी। बताया कि चार दिन बाद काले रंग की स्कार्पियो में 25 बदमाश मिले थे। उन्होंने उसके साथ मारपीट कर दी और उनके व बेटे अथर्व की जानकारी मांग ली।

दो अक्टूबर को गिरफ्तार तीन आतंकियों से हल्द्वानी को भी खतरा, जांच में कुछ अहम तथ्य आए सामने

हल्द्वानी, एजेंसी। दो अक्टूबर को दिल्ली पुलिस की स्पेशल ने जिन तीन आतंकियों को गिरफ्तार कर देश के विरुद्ध बड़ी साजिश को नाकाम किया था। उनसे हल्द्वानी को भी खतरा था। दिल्ली पुलिस की अब तक की जांच से कुछ ऐसे तथ्य सामने आए हैं, जिनसे इस बात की आशंका बनी है। पुणे के जंगल में बम धमाके के परीक्षण की पुष्टि तो हो चुकी है।

साथ ही बताया जा रहा है कि इन्होंने हल्द्वानी में रेकी करने के साथ इस तरह का परीक्षण भी किया था। दिल्ली पुलिस इन दोनों बिंदुओं को तस्दीक करने में जुटी हे। ऐसे में सवाल खड़ा होता है कि हल्द्वानी की रेकी की वजह कहीं कोई नया ट्रेनिंग सेंटर खोलना तो नहीं था, जहां युवाओं को बरगलाया जाता है। दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने दिल्ली, लखनऊ व मुरादाबाद से तीन संदिग्ध आतंकियों मोहम्मद शाहनवाज आलम, मोहम्मद रिजवान अशरफ और मोहम्मद अशरद वारसी को गिरफ्तार किया था। जो कि

पाकिस्तानी आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा से जुड़े हैं। इनसे पूछताछ में कई अहम बातें भी सामने आई। पता चला कि देश के कई हिस्सों में रेकी कर चुके हैं। इनके हल्द्वानी आने की बात भी सामने आई है। यहां बम परीक्षण करने की सत्यता का तो फिलहाल जांच टीम पता लगा रही है लेकिन यह तो तय है कि हल्द्वानी में भी इनकी मौजूदगी थी जो कि बेहद चिंताजनक है। ऐसे में सवाल खड़ा होता है कि यहां कब आए और किस जगह रहे। शहर से इनका कोई मजबूत कनेक्शन तो नहीं। वहीं, मामले को लेकर एसएसपी पीएन मीणा से बात करने पर उन्होंने कहा कि आधिकारिक तौर पर दिल्ली पुलिस ने उन्हें कोई जानकारी नहीं मिली। मीडिया के माध्यम से पता चला है। पुलिस अपने स्तर से इसे देख रही है।

इस साल 14 जनवरी को दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने खालिस्तानी टाइगर फोर्स से जुड़े संदिग्ध आतंकी जगजीत सिंह उर्फ जग्गा उर्फ याकूब उर्फ कप्तान व दूसरे आतंकी संगठन हरकत उल अंसार से जुड़े नौशाद अली को पकड़ा था।

ऊर्जा निगम कर्मचारियों ने एसएसआई को घेरा

बाजपुर, एजेंसी। ऊर्जा निगम के अधिकारियों और कर्मचारियों का मामला तूल पकड़ता जा रहा है। ऊर्जा निगम के एसडीओ की तरफ से दर्ज कराए गए केस से नाराज लोगों ने कोतवाली पहुंच कर एसएसआई का घेराव किया। उन्होंने यूनियन अध्यक्ष की तहरीर पर आरोपियों पर केस दर्ज करने की मांग की। आरोप है कि पिछले महीने कर्मचारियों ने ऊर्जा निगम के अधिकारियों पर अभद्रता और ठेकेदार स्तर के कार्य उनसे कराने का आरोप लगाते हुए यूनियन अध्यक्ष राधाकांत मिश्रा की अगुवाई में प्रदर्शन किया था। 20 सितंबर को दोराहा स्थित डिवीजन कार्यालय पर बैठक आयोजित की गई। हाइड्रो इलेक्ट्रिक इम्प्लाइज यूनियन के अध्यक्ष राधाकांत मिश्रा ने कोतवाली में तहरीर देकर दो अधिकारियों पर रास्ते में रोककर धमकी देने का आरोप लगाया था। उसके बाद एसडीओ ललित मोहन ने तहरीर देकर यूनियन अध्यक्ष पर धमकी देने का आरोप लगाया। एसडीओ की तहरीर पर पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी। शुक्रवार को उत्तराखंड वाल्मीकि दलित समाज सुधार संगठन अध्यक्ष अनिल वाल्मीकि की अगुवाई में लोग एकत्र होकर कोतवाली पहुंचे। उन्होंने मौजूद एसएसआई गोविंद मेहता का घेराव किया। उन्होंने पूर्व में दी गई तहरीर पर आरोपियों पर केस दर्ज करने की मांग की। वहां राधाकांत मिश्रा, नारायण सिंह, प्रेम सिंह कोरंगा, अजय चौरसिया, मनोज कुमार, जरनैल सिंह आदि मौजूद रहे।

तंबाकू बिक्री अधिनियम का कड़ाई से नहीं हो रहा पालन, अधिकांश दुकानों में नहीं हैं चेतावनी के नोटिस

अल्मोड़ा, एजेंसी। जिला मुख्यालय के स्कूलों के पास सिगरेट और अन्य तंबाकू उत्पाद की बिक्री व सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान पर लाख कोशिशों के बाद भी रोक नहीं लग पा रही है। इस संबंध में साल 2003 में बने अधिनियम का कड़ाई से पालन नहीं किया जा रहा है। इसका सीधा असर किशोरों व युवा वर्ग पर पड़ रहा है। इससे उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। युवाओं पर सिगरेट व अन्य तंबाकू उत्पादों से पड़ने वाले असर के दृष्टिगत सरकार की ओर से शिक्षण संस्थाओं के आसपास इनकी बिक्री

व वितरण पर रोक के संबंध में साल 2003 में अधिनियम बनाया गया था। जिसे साल 2004 में लागू कर दिया गया था। इसके तहत सार्वजनिक स्थानों पर सिगरेट पीना अपराध की श्रेणी में रखा गया है। साथ ही 18 वर्ष से कम उम्र के किशोरों को तंबाकू तथा इससे संबंधित उत्पाद नहीं बेचने का प्रावधान रखा गया है।विद्यालयों की 100 मीटर की परिधि में कोई भी तंबाकू उत्पाद बेचना भी गैरकानूनी है। अधिनियम के विपरीत नगर में ही विद्यालयों की 100 मीटर की परिधि में तंबाकू व इसके उत्पाद की दुकानें खुली हैं। इसके चलते स्कूली बच्चे भी तंबाकू का सेवन कर रहे हैं। इसके चलते उनके स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है। मुख्य शिक्षा अधिकारी अंबा दत्त बलोदी ने कहा है कि विद्यालयों के आसपास तंबाकू उत्पाद की बिक्री व वितरण पर रोक है।

वियतनामी मुरैल मछली से बढ़ेगी किसानों की आय

पिथौरागढ़, एजेंसी। सीमांत जिले में नार्थ अमेरिकन ट्राउट हैथरी के सफल प्रयोग के बाद वियतनामी मुरैल मछली का उत्पादन किया जाएगा। पहले चरण में कनालीछीना विकासखंड के डुंगरी गांव और बेड़ीनाग ब्लॉक के पीपलतड़ में मछली का उत्पादन किया जाएगा। वियतनामी कोई और मुरैल मछली की विशेषता है कि इसका उत्पादन छोटे टैंकों में भी आसानी से हो सकता है। इन्हें पालने के लिए ज्यादा बड़े टैंक की जरूरत नहीं है। ये मछली कैट फिश (सिंगल काटा) की तरह जल्दी बढ़ने लगती है। इस मछली की मांग मैदानी और पहाड़ी जिलों में अच्छी है। यहां मछली के उत्पादन के बाद इनको पैकेजिंग के बाद बाहरी राज्यों को भेजा जाएगा। अगर यह प्रयोग सफल हो जाता है तो मछली उत्पादकों की आय में सुधार होगा।

सहायक मत्स्य निदेशक डॉ. रमेश चलाल का कहना है कि मत्स्य पालकों की आय में सुधार करने और उन्हें बाजार उपलब्ध कराने के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं।

पिथौरागढ़ में मत्स्य पालकों की संख्या लगातार बढ़ रही है। वर्तमान में 25 से अधिक गांवों में मछलियों का उत्पादन किया जा रहा है। मछली उत्पादन से 750 लोग जुड़े हैं। मत्स्य विभाग समय-समय पर मत्स्य पालकों को ट्रेनिंग, मछली के बीच आदि उपलब्ध कराता रहता है।

अब दिल्ली होगी साफ, केजरीवाल ने किया देश का सबसे बड़ा कंस्ट्रक्शन एंड डिमोलिशन वेस्ट रिसाइक्लिंग प्लांट का उद्घाटन

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली को मलबा मुक्त कर खूबसूरत बनाने की दिशा में एमसीडी की आप सरकार ने बड़ा कदम उठाया है। रविवार को निर्माण व विध्वंस से निकलने वाले मलबे को रिसाइकल कर टाइल्स, ईंट समेत अन्य उत्पाद बनाकर दोबारा इस्तेमाल करने के लिए सी एंड डी वेस्ट रिसाइक्लिंग प्लांट की शुरूआत की गई। बतौर मुख्य अतिथि सीएम अरविंद केजरीवाल ने इस प्लांट का उद्घाटन किया। करीब 7 एकड़ में फैला यह प्लांट देश का सबसे बड़ा प्लांट है, जहां प्रतिदिन दो हजार टन सी एंड डी वेस्ट की रिसाइक्लिंग की जा सकेगी। सीएम अरविंद केजरीवाल ने कहा कि हमारा मकसद दिल्ली को खूबसूरत बनाना है और इसके लिए सी एंड डी प्लांट बेहद जरूरी हैं। कंस्ट्रक्शन एवं डिमोलिशन से निकले मलबे को इस प्लांट में लाकर टाइल्स, ईंट समेत अन्य उत्पाद बनाए जाएंगे, जिसका दोबारा इस्तेमाल किया जा सकेगा। इस तरह दिल्ली को मलबे से भी छुटकारा मिल जाएगा। मेरी अपील है कि दिल्ली को साफ-सुथरा बनाने के लिए सभी दिल्लीवासी अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें।

इससे पहले सीएम अरविंद केजरीवाल ने एमसीडी की मेयर डॉ. शैली ओबरॉय, विधायक एवं एमसीडी प्रभारी दुर्गेश पाठक, नेता सदन मुकेश गोयल और अफसरों के साथ सी एंड डी वेस्ट रिसाइक्लिंग प्लांट का निरीक्षण किया। अधिकारियों ने बताया कि यह प्लांट बहुत ही आधुनिक तकनीक पर आधारित है। दिल्ली भर से यहां मलबा लाया जाएगा, जिसे तोड़ा जाएगा और फिर रिसाइकिल कर टाइल्स, ईंट आदि का आकार देकर दोबारा इस्तेमाल किया जाएगा। जो मलबा दिल्ली को बदसूरत बनाता है, अब वही मलबा इस प्लांट से नए-नए आकार लेकर दिल्ली को खूबसूरत बनाएगा। इस दौरान सीएम ने प्लांट से बने टाइल्स, रोडी-बदरपुर, ईंट को भी देखा। सीएम अरविंद केजरीवाल ने जहांगीरपुरी में सी एंडी वेस्ट रिसाइक्लिंग प्लांट का उद्घाटन कर कहा कि आज से जहांगीपुरी में कंस्ट्रक्शन एंड डिमोलिशन (सी एंड डी) वेस्ट रिसाइक्लिंग प्लांट शुरू हो रहा है। कोई नई बिल्डिंग बनती है या कोई बिल्डिंग डिमोलिश (विध्वंस) होती है तो उससे मलबा निकलता है। उस मलबे को हम सड़क के किनारे या खाली प्लाट में डाल देते हैं। जगह-जगह मलबा देखने को मिलता है। दिल्ली देश की राष्ट्रीय राजधानी है। हमारा मकसद है कि देश में दिल्ली सबसे खूबसूरत होनी चाहिए। अभी हम ये नहीं कह सकते हैं कि दिल्ली सबसे खूबसूरत शहर है। अभी दिल्ली में कई जगहों पर मलबे के ढेर देखे जाते हैं। दिल्ली को खूबसूरत बनाने की दिशा में इस तरह के सी एंड डी प्लांट बहुत जरूरी हैं। कंस्ट्रक्शन और डिमोलिशन से निकलने वाले मलबे को इस प्लांट में लाया जाएगा और उस मलबे से टाइल्स, ईंट आदि बनाकर वापस इस्तेमाल किया जाएगा।

सीएम अरविंद केजरीवाल ने कहा कि दिल्ली में अभी करीब 6500 टन मलबा प्रतिदिन निकलता है। इस तरह का दिल्ली में यह चौथा प्लांट है। इस प्लांट के अलावा रानीखेड़ा, शास्त्री पार्क और बक्करवाला में है। इन चारों प्लांट में करीब 5000 टन मलबे को प्रतिदिन रिसाइकिल करने की क्षमता है। जबकि दिल्ली में कुल 6500 टन मलबा रोज निकलता है। इसके अलावा एक और प्लांट ओखला में बनाने का प्लांट है, जिसकी क्षमता एक हजार टन होगा। इसके अलावा मौजूद चारों प्लांट्स की थोडी क्षमता बढाई जाएगी। इसके बाद दिल्ली में निकलने वाले सारे मलबे की सी एंड वेस्ट रिसाइक्लिंब प्लांट में रिसाइक्लिंग हो जाएगी और उसका वापस इस्तेमाल होगा। इस तरह दिल्ली को मलबे से छुटकारा मिल जाएगा। दिल्ली में जितना मलबा निकलेगा, उसका प्लांट में रिसाइकिल होता जाएगा।

सीएम ने बताया कि जहांगीरपुरी में स्थापित यह प्लांट यूरोपियन टेक्नोलॉजी पर आधारित है, जो सबसे आधुनिक टेक्नोलॉजी है। साथ ही यह प्लांट देश का सबसे बड़ा प्लांट है। इस प्लांट से बिल्कुल आवाज नहीं आती है। प्लांट के बिल्कुल पास आने पर भी इसकी आवाज नहीं सुनाई देती है। साथ ही धूल-मिट्टी भी नहीं उड़ती है।

सीएम अरविंद केजरीवाल ने कहा कि जब से एमसीडी में आम आदमी पार्टी की सरकार बनी है, तब से अच्छी-अच्छी बातें सुनने को मिल रही हैं। एक साल पहले नगर निगम भ्रष्टाचार के लिए मशहूर हुआ करता था। सुनने में आता था कि सारे कर्मचारी अपनी सैलरी के लिए हड़ताल पर बैठे रहते थे। कई-कई महीने कर्मचारियों को सैलरी नहीं मिलती थी। बहुत बुरा हाल था। मैं ये नहीं कहूंगा कि एमसीडी में आम आदमी पार्टी की सरकार बनने के बाद सबकुछ ठीक हो गया है। अभी सबकुछ ठीक होने में थोड़ा वक्त लगेगा। पिछले 75 साल में जो गड़बड़ हुई है, उसको ठीक करने में थोड़ा समय तो लगेगा। लेकिन अब एमसीडी से अच्छी खबरें आने लगी हैं। एमसीडी में भ्रष्टाचार कम होने लगा है। अब कर्मचारियों को समय पर सैलरी मिलने लगी है। अब सी एंड डी प्लांट बनने लगे हैं। क्योंकि अब एमसीडी में ईमानदार सरकार है। हम न तो पैसे खाते हैं और न पैसे खाने में हमारी दिलचस्पी है।

सीएम अरविंद केजरीवाल ने बताया कि जब एमसीडी में हमारी सरकार बनी, तो हमारे पास संदेश आने लगे। पहले सिस्टम बने रहते थे कि महीने के कितने रुपए जाएंगे। हमने मना कर दिया। दो-तीन महीने में सबको पता चल गया कि इनके यहां पैसे का सिस्टम नहीं है। इसलिए धीरे-धीरे पहले के बने सारे सिस्टम बंद होने लगे। सीएम अपनी नौकरी का उदाहरण देते हुए कहा कि मैंने 1995 में दिल्ली में इनकम टैक्स की नौकरी ज्वाइन की। जब मैं असिस्टंट कमिश्नर की कुर्सी पर बैठा, तो केस कराने आने वाले कहते थे कि सेवा बताइए। उसकी सेवा का मतलब ये था कि केस करने के कितने रुपए लेंगे। मैं कहता था कि मैं पैसे नहीं लेता हूं। इस तरह दो-तीन महीने में सबको पता चल गया कि मैं पैसे नहीं खाता। इसी तरह, 2015 में दिल्ली में सरकार बनी, तब दिल्ली में इसी तरह के संदेश आए, लेकिन हमने मना कर दिया। जब पंजाब में हमारी सरकार बनी तो वहां पर बड़े-बड़े माफिया हैं। वहां भी कई संदेश आए और हमने मना कर दिया। नगर निगम में ईमानदारी से काम होगा। सारी चीजें ठीक होंगी।

सीएम अरविंद केजरीवाल ने कहा कि मेरा मकसद दिल्ली को साफ-सुथरा बनाने का है, ताकि दिल्ली साफ दिखे। इसके लिए पिछले कुछ महीने से नगर निगम ने अभियान भी चलाया है। एमसीडी ने एमसीडी-311 एप शुरू किया है। इस एप पर आने वाली 90-95 फीसद समस्याओं को तत्काल निस्तारण किया जाता है। इस एप को सभी लोग अपने मोबाइल में डाउनलोड करें। दिल्ली अकेले एमसीडी और दिल्ली सरकार से साफ नहीं होगी, बल्कि जब दिल्ली के दो करोड़ लोग मिलकर अपनी भागीदारी सुनिश्चित करेंगे तब दिल्ली साफ होगी। हम सभी को मिलकर दिल्ली को साफ करनी है और दिल्ली से भ्रष्टाचार दूर करना है। दिल्ली को कूड़ा मुक्त के साथ मलबा मुक्त भी बनाया जा रहा- डॉ. शैली ओबरॉय दिल्ली की मेयर डॉ. शैली ओबरॉय ने कहा कि सीएम अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व में दिल्ली को कूड़ा मुक्त बनाने के साथ-साथ मलबा मुक्त भी बनाया जा रहा है। पूरी दिल्ली में सीएंडडी वेस्ट डालने के लिए स्थान चिन्हित किए गए हैं, जहां पर लोग मलबा डाल सकते हैं। इससे दिल्ली में अभी तक जो जगह-जगह मलबे के ढ़ेर दिखते हैं, वह नहीं दिखेंगे। साथ ही चिन्हित स्थानों पर मलबा डालने से प्रदूषण भी नहीं फैलेगा। उन्होंने कहा कि बुराड़ी में अत्याधुनिक तकनीक से युक्त सीएंडडी प्लांट बनाया गया है। वर्तमान में यह देश का सबसे बड़ा प्लांट है, जहां पर प्रतिदिन 2 हजार टन प्रतिदिन सीएंडडी वेस्ट का निस्तारण हो सकेगा। दिल्ली में जल्द एक और प्लांट स्थापित किया जाएगा।

सम्मानित

लेट खगेंद्र झा के बेटे अतुल कुमार झा और ध्रौब मोहन रॉय के बेटे मृत्युंजय कुमार को 30 सितंबर को दिल्ली के रेडिसन ब्लू होटल में बेस्ट फॉर्च्यून लीडरशिप और बेस्ट फिनटेक स्टार्टअप अवॉर्ड से सम्मानित किया गया है। यह कंपनी 2017 में दिल्ली द्वारका में शुरू हुई है। कंपनी का नाम क्रेडिट वाला ऑप्टिमल बीपीओ प्राइवेट लिमिटेड की एक इकाई..

16वां श्री श्याम वंदना महोत्सव में रातभर भजनों पर झूमें श्रद्धालु

दिल्ली के रोहिणी स्थित जापानी पार्क के शक्ति टेन्ट में श्री राम राज्य सेवा समिति रजि. द्वारा आयोजित 16वां श्री श्याम वंदना महोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस विशाल श्याम महोत्सव में हजारों श्रद्धालुओं ने शिरकत की थी। श्री श्याम वंदना महोत्सव में विभिन्न सामाजित, धार्मिक, स्वयंसेवी संस्थाओं व सगंठनों से जुडे लोगों ने भी बढ़चढ़ कर इसमें भाग लेते हुए श्री खाटू वाले श्याम बाबा के भव्य दरबार में मत्था टेककर पूजा अर्चना करते हुए सभी के स्वस्थ एवं समृद्ध जीवन की कामना की। कार्यक्रम का शुभारंभ संस्था के सदस्यों द्वारा ज्योति प्रज्जवलित की गई। श्री राम राज्य सेवा समिति के सदस्य योगेश जैन ने कहा कि हर बार की तरह इस बार भी श्री श्याम वंदना महोत्सव का भव्य आयोजन गया था, उन्होंने बताया कि पूरे दिन उत्सव का माहौल रहा। इस अवसर पर संस्था के सदस्य नवीन गर्ग, अतुल गर्ग, योगेश जैन, अमित गुप्ता, अमित बंसल, अमित गोयल, महेश अग्रवाल, नितिन गुप्ता, संजय गुप्ता, ललित गुप्ता, आशीष सहित समिति के कई गणमान्य सदस्य उपस्थित थे।

उन्होंने बताया की जापानी पार्क के शक्ति टेन्ट के बाहर सैकड़ों गाडियों के पार्किग की व्यवस्था की गई थी। हजार लोगों के बैठने की व्यवस्था भी थी, लॉन में जगह जगह एलईडी स्क्रीन भी लगाई गई थी, जिससे लोग कार्यक्रम को देख सकें। श्री श्याम वंदना महोत्सव से पहले मेहंदी की रात सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। श्री श्याम वंदना महोत्सव में वृंदावन की साध्वी पूर्णिमा ह्यह्यपूनम दीदीह्ल जैसे ही स्टेज आई जोरदार तालियों से उपस्थित लोगों ने उनका स्वागत किया। पूनम दीदी ने अपना मशहूर भजन मुझे अपने ही रंग में रंग ले....., ऐसी लगी लगन, कान्हा तेरी हा गई.... कई भजन प्रस्तुत किए जिस पर श्रद्धालु मंत्रमुग्ध होकर झूम उठे, वहीं दिल्ली के श्री शीतल पांड ने अपने भजन तेरा साथ है तो मुझे क्या फिकर है..... जब जब तेरी चैखट जैसे कई भजन प्रस्तुत किए कोलकाता के श्री राज पारीक, दिल्ली की पूजा आनंद, ग्वालियर के मनोज शर्मा व दिल्ली की संगीता राठौर जैसे नामचीन कलाकार अपने श्याम भजनों दर्शकों को मंत्रमुग्ध किया।

एनडीएमसी के गोल मार्केट क्षेत्र में दूषित पानी की समस्या बरकरार

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

नई दिल्ली नगर पालिका परिषद (एनडीएमसी) के गोल मार्केट क्षेत्र के कुछ इलाकों में दूषित पानी आने की समस्या लगातार जारी है इस मामले में विभाग एक दूसरे पर जिम्मेवारी डाल अपना पल्ला झाड़ रहे हैं जबकि वहां रहने वाले स्थानीय लोगों को दूषित पानी का सामना करना पड़ रहा है पानी भी इतना दूषित है कि उसमें बारीक बारीक कीड़े साफ नजर आ रहे हैं लेकिन इसकी कहीं कोई सुनवाई नहीं हो रही है स्थानीय लोगों का कहना है कि यह समस्या हालांकि बहुत पुरानी है और जब तक पाइप लाइनों को पूरे ढंग से नए रूप से बदला नहीं जाता तब तक इस समस्या का हल नहीं हो सकता क्योंकि यह एक दिन की समस्या नहीं है जिसे की अस्थाई रूप से सुलझाया जा सके बताया जाता है की 1936 में झंडेवाला जलाशय से नई दिल्ली के नगर विस्तार क्षेत्र तक पाइप लाइन बिछाई गई थी। स्क्वायरों के शहर गोल मार्किट में काली बाड़ी मार्ग, सेक्टर 2 जाफरी स्क्वायर, राजा बाजार सेक्टर 4, सी ब्लॉक एडवर्ड स्क्वायर तथा डी ब्लॉक में लगभग सौ फूट ऊंचे ओवर हेड टैंकों से सरकारी कर्मचारीयों को पेय जल सप्लाई किया जाता था। तब जो पाइप लाइन डाली गई थी वो आज भी जमीन के नीचे सड़ी गली हालत में मौजूद है और उससे कहीं कहीं पानी भी आता रहता है। सन 70 के दशक में डी आई जैड एरिया को पीने के पानी की सप्लाई व्यवस्था एन डी एम सी के पास आ गई और कच्चे पानी की सप्लाई केंद्रीय लोक निर्माण विभाग के पास रह गई आज भी है। तालकटोरा जलाशय से इलाके में पानी देने के लिए एक फुट और दो फुट चौड़े पाइप एन डी एम सी के हैं, इन बड़े पाइपों से सीपीडब्ल्यूडी ने जरूरत के हिसाब से दो इंची, तीन इंची और चार -छः इंची कनेक्शन ले रखे हैं।कॉलोनी के अंदर ग्राउंड वाटर टैंक (यू जी आर) से लेके यू जी आर से घरों की छत पर लगी टंकियों तक पाइप लाइन और मेंटेंस की जिम्मेदारी सी पी डब्लू डी की है। एन डी एम सी की जिम्मेदारी एक और दो फुट बड़े पाइप तक की है इससे आगे नहीं। सीपीडब्ल्यूडी एनडीएमसी का कंज्यूमर है जिसे थोक में पानी दिया जाता है। बात सन 2012 की है जाफरी स्क्वायर का ओवर हेड टैंक धमाके के साथ धराशायी हो गया था खतरे को भांप कर सभी टैंक समाप्त कर दिए गए परंतु सी ब्लॉक का ओवर हेड टैंक अब भी खड़ा खतरे की घंटी बजा रहा है इसे भी हटाया जाना चाहिए था। एरिया एक्टिविस्ट आर डबलू ए फेडरेशन राजधानी नागरिक कल्याण समिति के अध्यक्ष प्रीतम धारीवाल कहते हैं पूरे गोल मार्किट में कभी यहां कभी वहां सप्लाई में, सीवर मिक्सड, बदबू वाला गंदा पानी और डी ब्लॉक से तो कीड़े मिले पानी की सप्लाई की शिकायतें आ रहीं हैं। सीपीडब्ल्यूडी एन डी एम सी पर दोष मढ कर पल्ला झाड़ देती है सन 1980 के आस पास एन डी एम सी ने जो एक -दो फूटे बड़े पाइप डालें थे उनको शीघ्र बदलने की अवशयकता है। सीपीडब्ल्यूडी ना तो अपना पाइप बदल रही है जिसे कहीं कहीं उसके नीचे अंग्रेजों के सड़ चुके पाइप लाइन से जोड़ कर पाइप बचा लेना का कार्य किया जाता रहा है ना अंडर ग्राउंड की साफ सफाई और रिपेयर की जाती है ना ही घरों के उपर टंकियों के ढक्कन, उनकी सफाई का ही ध्यान रखा जाता है। डी ब्लॉक के यू जी आर में भी क्रैक मिला है और सड़े हुए पाइप को भी खोज लिया गया है। केवल जुगाड बाजी से काम नही चलेगा पूरा सप्लाई पाइप बदला जाए और नए डाले जाने वाले पाइप को नीला रंग करा जाय ताकि पुराने और नए पाइप की पहचान हो सके जब तक ये व्यवस्था नहीं होगी समस्या का कभी पुख्ता समाधान नहीं हो पाएगा।

सुल्ताना के मंचन साथ रतनव नाट्य रंगोत्सव का भव्य समापन

नई दिल्ली । दिल्ली का सांस्कृतिक केंद्र मंडी हाउस के श्री राम सेंटर में रतनव द्वारा आयोजित किये तीन दिन के नाट्य रंगोत्सव का समापन रमा पाण्डेय द्वारा लिखित-निर्देशित सुल्ताना के मंचन के साथ हुआ। इस नाट्य उत्सव का आयोजन रमा थियेटर नाट्य विद्या संस्था (रतनव) एवं साइडवे कंसल्टिंग के सहयोग से किया गया था। इसबार नाट्य उत्सव के क्नेद्र में सामाजिक सुधार, महिला सशक्तिकरण, दमनकारी प्रथा और सामाजिक भेदभाव जैसे विषय रहे। अंतिम दिन सुल्ताना नाटक का मंचन हुआ यह नाटक दमनकारी सामाजिक मानदंडों के सामने स्वतंत्रता और न्याय के लिए एक युवा महिला के संघर्ष का मार्मिक और शक्तिशाली कहानी है। एक युवा महिला है जिसे अपनी मृतक बहन के पति आरिफ से उसकी इच्छा के विरुद्ध शादी करने के लिए मजबूर किया जाता है। सुल्ताना केवल पंद्रह वर्ष की है, और आरिफ उससे बहुत बड़ा है। वह फंसी हुई और अकेली महसूस करती है जब तक कि वह अपने स्कूल की शिक्षिका उमा की शरण नहीं लेती, जो अपने जीवन में सामाजिक दबाव से भी पीड़ित थी।

नाट्य उत्सव के पहले दिन प्रसिद्ध लेखक विकास कुमार झा द्वारा लिखित नाटक यम पुत्र का मंचन किया गया था । साथ ही पद्मश्री पुरस्कार विजेता प्रोफेसर अशोक चक्रधर को रंगमंच के प्रति उनके आजीवन समर्पण के लिए आजीवन रंग सेवा पुरस्कारह्व से सम्मानित किया गया। दुसरे शाइस्ता नाटक का मंचन हुआ, यह हैदराबाद और शेखवाटी में युवा मुस्लिम लड़कियों को शादी के लिए बेचने की प्रथा के खिलाफ एक युवा लड़की की अवज्ञा की कहानी है।

रतनव की संस्थापक रमा पांडे ने कहा बिना किसी सरकारी मदद के आज हम यह आयोजन कर रहे हैं । केवल दर्शकों के प्रेम और रंगमंच के प्रति उनके उत्साह ही हमें इस तरह के आयोजन करने की हिम्मत देता है । हमारा मकसद गाँव-गाँव, गली-गली, शहर-शहर उन कलाकारों को बचाने का है जिनके पास कुछ नहीं होता है। एक कलाकार के पास केवल दर्शकों का प्यार और तालियाँ होती है। अगले वर्ष हम फिर समाज के उन अनछुहे सामाजिक कुरीतियों, मुद्दों को रंगमंच के मंच पर लेके आयेंगे जो आज भी समाज में कहीं न कहीं प्रचलन में हैं।

राजनाथ सिंह के निवास पर दिल्ली की रामलीलाओं के पदाधिकारी का स्नेह भोज संपन्न

नई दिल्ली। दिल्ली श्री रामलीला महासंघ एवं लव कुश रामलीला कमेटी के अध्यक्ष श्री अर्जुन कुमार ने बताया कि माननीय श्री राजनाथ सिंह रक्षा मंत्री भारत सरकार के सानिध्य में उनके निवास स्थान पर दिल्ली की प्रमुख रामलीला कमेटियों के पदाधिकारी का एक स्नेह भोज कार्यक्रम संपन्न हुआ। जिसमें लव कुश रामलीला कमेटी के अध्यक्ष श्री अर्जुन कुमार, महामंत्री सुभाष गोयल ने रक्षा मंत्री जी को हनुमान जी की गदा, राम मंदिर का स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। रामलीलाओं में आने के लिए निमंत्रण दिया। श्री अर्जुन कुमार ने यह भी बताया कि माननीय राजनाथ सिंह जी ने इस अवसर पर कहा कि प्रभु श्री राम हमारे जीवन के आधार एवं स्तंभ है प्रभु श्री राम मयार्दा पुरुषोत्तम है आप सभी मेरे निवास स्थान पर पधारे इसके लिए मैं आप सभी का हार्दिक स्वागत करता हूं। मैं अपने निवास स्थान पर हर वर्ष इस तरह का कार्यक्रम आयोजित करूंगा। इस अवसर पर राष्ट्र संत अजय भाई द्वारा भजन प्रभु श्री राम पर प्रस्तुत किए गए भजनों से सभी भाव विभोर हुए। इस अवसर पर दिल्ली की प्रमुख रामलीला कमेटी की पदाधिकारी ने माननीय रक्षा मंत्री जी को रामलीला अवलोकन हेतु निमंत्रण पत्र दिए जिनमें प्रमुख धर्मपाल सिंगला, पवन गुप्ता, सत्यभूषण जैन, राजन चोपड़ा, विजेंद्र गुप्ता विधायक, नरेंद्र चावला, सुमित गुप्ता, श्याम अग्रवाल सतीश गर्ग अंकुर गोयल, कपिल रस्तोगी, धीरजधर गुप्ता, महेंद्र नागपाल, जत्थेदार अवतार सिंह, अनिल शर्मा, प्रकाश बराठी, शिव शंकर नागर आदि भी सम्मिलित हुए। माननीय राजनाथ सिंह रक्षा मंत्री के साथ सभी ने प्रीतिभोज किया।

झीलों से भूजल संचयन कर दिल्ली की प्यास बुझाएगा जल बोर्ड

नई दिल्ली। राजधानी में पानी की आपूर्ति बढ़ाने के लिए दिल्ली सरकार नए ट्यूबवेल का सहारा लेगी। इसके लिए झीलों के जरिए भूजल संचयन बढ़ाया जाएगा, फिर उसके आसपास ट्यूबवेल लगाकर पानी की आपूर्ति बढ़ाई जाएगी। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने जल बोर्ड को ऐसी झीलों को चिह्नित कर उनके आसपास ट्यूबवेल लगाने का निर्देश दिया है। फिलहाल दिल्ली में 242 ट्यूबवेल लगाने का वर्क ऑर्डर जारी कर दिया गया है। दिल्ली में वर्तमान में रोजाना 990 एमसीडी पानी की आपूर्ति होती है, जबकि दिल्लीवालों को रोजाना 1220 एमजीडी पानी की जरूरत है। अभी कुल आपूर्ति में से 130 एमजीडी पानी दिल्ली में अलग-अलग इलाकों में लगे ट्यूबवेल के जरिए सप्लाई किया जाता है। सरकार दिल्ली में पुरानी झीलों के अलावा आर्टिफिशियल झील बनाकर भूजल संचयन बढ़ा रही है, जिससे दिल्ली में 500 नए टयूबवेल लगाकर पानी का उत्पादन बढ़ाया जा सके। हाल ही में भलस्वा झील इलाके में ट्यूबवेल लगाकर वहां से 8 एमजीडी पानी की आपूर्ति बढ़ाई गई है। सरकार नई ट्यूबवेल लगाकर कुल 45 एमजीडी पानी की आपूर्ति बढ़ाना चाहती है। सरकार 500 ट्यूबवेल लगाएगी जल बोर्ड 500 ट्यूबवेल लगाने का काम अलग-अलग चरणों में कर रहा है। पहले चरण में दिल्ली में 94 ट्यूबवेल लगाए गए हैं, जिनसे 19 एमजीडी पानी की आपूर्ति बढ़ाई गई है। दूसरे चरण में 250 ट्यूबवेल अगस्त तक लगाए जाने थे, लेकिन जल बोर्ड में पैसे की कमी, विभिन्न एजेंसियों की जमीनों को लेकर अनापत्ति प्रमाण पत्र नहीं मिलने के कारण यह काम रूक गया। अब जल बोर्ड के 242 ट्यूबवेल लगाने का रास्त साफ हो गया है। इसके लिए वर्क ऑर्डर भी जारी कर दिया गया है। उम्मीद है कि इस साल के अंत तक यह काम पूरा हो जाएगा।

स्टार्टअप का एक आइडिया छात्रों को दिलाएगा सीड मनी

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्रों का एक स्टार्टअप का आइडिया उन्हें उसे आगे बढ़ाने के लिए सीड मनी दिलाएगा। दरअसल डीयू अक्तूबर के अंत में एक स्टार्टअप कॉन्क्लेव आयोजित करने जा रहा है। जहां छात्रों के स्टार्टअप को पंख मिलेंगे। इसके तहत सुपर-25 स्टार्टअप का चयन किया जाएगा। जिसके लिए उन्हें सीड मनी दी जाएगी। इसका उपयोग वह अपने आइडिया का प्रोटोटाइप बनाने, ट्रायल करने, उसे बाजार में उतारने में कर सकेंगे। डीयू का उद्यमोदया फाउंडेशन, कैरियर डेवलपमेंट सेंटर, और समर्थ भारत के सहयोग से 27 व 28 अक्तूबर को स्टार्ट अप एक्सीलिरेटर प्रोग्राम के तहत स्टार्ट अप कॉन्क्लेव आयोजित करने जा रहा है। यहां न केवल बिजनेस आइडिया को पंख मिलेंगे बल्कि उन्हें सीड मनी और मेंटर से मिलने का अवसर भी मिलेगा। इसके तहत 25 स्टार्टअप को सीड फंड दिया जाएगा। इसमें सबसे नवाचार आइडिया, बेस्ट सामाजिक प्रभाव वाला आइडिया, महिला संबंधित नवाचार आइडिया, बेस्ट स्टार्टअप एक्सीलरेटर आइडिया, बेस्ट टिकाऊ आइडिया को देखा जाएगा। इन्हीं आधार पर उन्हें सीड मनी दी जाएगी। डीयू का मानना है कि भारत भर के विभिन्न संस्थानों व डीयू के कॉलेज छात्रों के बीच इससे जागरूकता बढ़ेगी। इस कॉन्कलेव में सबसे नवाचार आइडिया के लिए दस लाख, सामाजिक प्रभाव डालने वाले आइडिया के लिए पांच लाख, महिला नवाचार आइडिया के लिए दो लाख, स्टार्टअप आइडिया व टिकाऊ आइडिया के लिए दो लाख-दो लाख रुपये की सीड मनी दी जाएगी। इस कॉन्कलेव में मेंटर, निवेशकों से सीधा संपर्क होगा। साथ ही उनके आइडिया की स्क्रीनिंग होगी। इसमें भाग लेने के लिए डीयू उद्यमोदया फाउंडेशन की वेबसाइट पर जाकर पंजीकरण करना होगा। डीयू के अनुसार यह छात्रों और उद्यमियों के बीच उद्यमशीलता और नवाचार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से की गई, एक पहल है।

तमाम बाधाओं के बावजूद दिल्ली के सड़कों को वर्ल्ड क्लास बनाने का केजरीवाल सरकार का प्रयास जारी

पीडब्ल्यूडी मंत्री आतिशी ने जनकपुरी व तिलकनगर की महत्वपूर्ण सड़कों का किया निरीक्षण

- दिल्ली की सड़कों को बेहतर बनाने की दिशा में कोई भी लापरवाही बर्दाश्त नहीं, नए व इनोवेटिव आइडियाज के साथ सड़क को शानदार बनाए पीडब्ल्यूडी- पीडब्ल्यूडी मंत्री आतिशी

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली की सड़कों को वर्ल्ड क्लास बनाने के क्रम में मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के निर्देश पर पीडब्ल्यूडी मंत्री आतिशी ने लगातार चौथे सप्ताह ग्राउंड जीरो पर पहुँच कर सड़कों का निरीक्षण किया। पीडब्ल्यूडी मंत्री आतिशी ने जनकपुरी ईस्ट मेट्रो से तिलक नगर मेट्रो के बीच की सड़कों का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने सड़कों व फुटपाथ के रखरखाव, हार्टिकल्चर, ड्रेनेज व क्रॉसिंग को और ज्यादा सुरक्षित व यूजर फ्रेंडली बनाने के तत्काल जरूरतों पर जोर दिया।

निरीक्षण के दौरान पीडब्ल्यूडी मंत्री ने पाया कि सड़क पर फुटपाथ की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है, फुटपाथ में एकरूपता नहीं है और मरम्मत की जरूरत है। साथ ही फुटपाथ पर कई जगह अतिक्रमण भी है। पेड़ों के छँटाई की जरूरत है, ड्रेनेज सिस्टम बेहतर करने की जरूरत है तथा हार्टिकल्चर में भी एकरूपता की जरूरत है। उन्होंने पाया कि इन सड़कों पर अभी सुधार की काफी गुंजाइश है। फुटपाथ के कुछ हिस्सों में पीडब्ल्यूडी मंत्री ने पाया कि, पेड़ों की समय पर छँटाई न होने, तारों के निकलने व गलत तरीके से लगाए गए साइन बोर्ड व अतिक्रमण के कारण फुटपाथ पर पैदल यात्रियों का मार्ग असुरक्षित और अवरुद्ध हो रहा है। इसपर पीडब्ल्यूडी मंत्री आतिशी ने अधिकारियों को फटकार लगाते हुए कहा कि, ये सड़क पश्चिमी दिल्ली की इतनी महत्वपूर्ण सड़क है और रोजाना यहाँ लाखों वाहनों की आवाजाही होती है। उसके बाद भी यहाँ सड़कों व फुटपाथ की अच्छी हालत न होना गलत गई। अरविंद केजरीवाल सरकार में ये कतई बर्दाश्त नहीं होगा। उन्होंने कहा कि, केजरीवाल सरकार दिल्ली की सड़कों को बेहतर बनाने की दिशा में कोई भी लापरवाही व समझौता बर्दाश्त नहीं करेगी। ऐसे में उन्होंने पीडब्ल्यूडी अधिकारियों को निर्देश दिए कि, विभाग नए व इनोवेटिव आइडियाज के साथ इस सड़क को शानदार बनाने पर काम करें। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि हफ़्ते भर में वो डिवीजन की सभी सड़कों को बेहतर बनाने के लिए एक विस्तृत प्लान बनाए।

पीडब्ल्यूडी मंत्री ने अधिकारियों को जल निकासी प्रणालियों के रखरखाव, हार्टिकल्चर, पैदल यात्रियों की जरूरतों और सुरक्षा के अनुरूप फुटपाथ में बदलाव, पेड़ों की छंटाई, टूटे हुए कर्बस्टोन को बदलना, सेंट्रल वर्ज पर हार्टिकल्चर आदि को उच्च प्राथमिकता के साथ सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

सड़क की मौजूदा समस्याओं पर, मंत्री आतिशी ने अधिकारियों को चेतावनी दी और उन्हें पूरे रोड स्ट्रेच का व्यापक निरीक्षण करने और प्राथमिकता के साथ एक व्यापक रिपोर्ट प्रस्तुत करने का निर्देश दिया।

पीडब्ल्यूडी मंत्री आतिशी ने कहा, ह्लकेजरीवाल सरकार वर्ल्ड क्लास स्टैंडर्ड के साथ शहर की सड़कों की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। ऐसे में यह पीडब्ल्यूडी इंजीनियरों की जिम्मेदारी है कि वे अपने क्षेत्रों में सड़कों को बेहतर बनाने पर ध्यान केंद्रित करें। सड़कों को बेहतर बनाने की दिशा में किसी भी लापरवाही के लिए कड़ी कार्रवाई की जाएगी, केजरीवाल सरकार इस दिशा में कोई भी लापरवाही बर्दाश्त नहीं करेगी।

बड़ी संख्या में लोग भाजपा में शामिल होने को तैयार : सचदेवा

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली में बीजेपी ने आम आदमी पार्टी को झटका दिया है। रविवार को आम आदमी पार्टी के कई नेता बीजेपी में शामिल हुए हैं। इस मौके पर दिल्ली प्रदेश बीजेपी अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा मौजूद थे। इस मौके पर बीजेपी नेता ने कहा कि पार्टी में कार्यकताओं का पूरा सम्मान किया जाता है। विजय टाईटलर, डॉ चंद्रकांता, ज्योति बड़ीवाल, भारती रछौया, राजबीर, हेमराज राठौर, अमरजीत सिंह, शाह आलम, अक्षय कुमार, किशन कुमार ने आप को छोड़कर अपने सैकड़ों कार्यकताओं के साथ बीजेपी का हाथ थामा। डॉ. चंद्रकांता ने आम आदमी पार्टी में बढ़ते भ्रष्टाचार और नीतियों से भटकने का आरोप लगाते हुए भाजपा की सदस्यता ली। डॉ. चंद्रकांता के साथ राजेंद्र नगर विधानसभा के 300 से अधिक कार्यकताओं ने भी भाजपा की सदस्यता ली। डॉ. चंद्रकांता ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की नीतियो से प्रभावित होते हुए कहा कि पीएम के नेतृत्व में भारत का सम्मान देशभर में बढ़ रहा है। साथ ही देश की भी तरक्की हो रही है।

दिल्ली बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा का कहना है कि दूसरे दलों से बड़ी संख्या में लोग भा

राष्ट्रीय दैनिक
प्रातः किरण

राजधानी किरण

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें
@Pratahkiran
www.pratahkiran.com
नई दिल्ली, सोमवार, 09 अक्टूबर, 2023

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत दलित साहित्य को पाठ्यक्रम में लगाया जाए : हंसराज

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के तत्वावधान में पाँचवां दलित साहित्य पखवाड़ा दिवस का शुभारंभ दिल्ली विश्वविद्यालय के निकट अकादमी के मुख्यालय-मॉडल टाउन में किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में फोरम ऑफ एकेडेमिक्स फॉर सोशल जस्टिस के चेयरमैन व दिल्ली विश्वविद्यालय की विद्वत परिषद के पूर्व सदस्य प्रोफेसर हंसराज सुमन थे। अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए कहा कि- हमें स्वानुभूति वाले दलित साहित्य के लेखन के साथ उसका समाज में व्यापक रूप से प्रचार-प्रसार भी करना चाहिए तभी ब्राह्मणवादी विचारधारा को बदला जा सकता है। साहित्य ही व्यक्ति के व्यवहार में बदलाव लाता है । उन्होंने कहा कि आज के दलित साहित्य पर धारावाहिक व फिल्में भी बनने लगी है यह बहुजन विचारधारा के लिए अच्छे संकेत है ।

दलित साहित्य पखवाड़े का उद्घाटन करते हुए प्रोफेसर हंसराज सुमन ने अकादमी द्वारा प्रकाशित ह्लमेरे साक्षात्कार मेरा जीवन संघर्षह्व, अकादमी की स्मारिका व दलित साहित्य की पुस्तकों का लोकार्पण करते हुए कहा कि दलित साहित्य में वह आंदोलन है जो हजारों सालों से चले आ रहे असमानता, अन्याय, अत्याचार, अस्पृश्यता को निर्मूलकर, सवर्णवादी मानसिकता की शिनाख्त करते हुए, समतामूलक लोकतांत्रिक समाज व्यवस्था के नूतन निर्माण की पहल करेगा। उन्होंने आगे कहा कि दलित साहित्य ही एक मात्र ऐसा साहित्य है जिसमें उपेक्षित समाज की व्यथा, दलित समाज की पीड़ा, पिछड़े समाज का संघर्ष अभिव्यंजित किया जाता है। उन्होंने बताया कि दलित साहित्य पखवाड़ा के माध्यम से देश के सभी प्रदेशों में सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। दलित साहित्य सम्मेलन, दलित कवि सम्मेलन आदि के द्वारा लोक-संस्कृति, लोकगीत, लोक परंपरा का प्रचार प्रसार किया जाता है।

प्रोफेसर हंसराज सुमन ने अकादमी के समक्ष एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव रखा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत देशभर के विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में दलित साहित्य को एक विशिष्ट विषय के रूप में पढ़ाया जाना चाहिए। जिससे आज की युवा पीढ़ी बहुजन समाज के अपने नायकों से परिचित हो सकें। दलित साहित्यकारों द्वारा कहानी, कविता, उपन्यास, नाटक, व्यंग्य व आत्मकथाएँ लिखी जा रही है। देश के कुछ विश्वविद्यालयों में दलित साहित्य को वैकल्पिक विषय के रूप में पढ़ाया जा रहा है जबकि इसे मुख्य विषय के रूप में पाठ्यक्रम में रखा जाना चाहिए। इससे समाज के प्रत्येक वर्गों के छात्रों को दलित साहित्य संबंधी जानकारी मिल सकेगी। दलित उपेक्षित समाज की वास्तविकता स्थिति को समझने के बाद आज की युवा पीढ़ी निश्चित रूप से सामाजिक भेदभाव से अपने को अलग रखेगी। समाज में जाति, भाषा और क्षेत्र का भेदभाव मिटेगा। युवा वर्ग दलित साहित्य की वैचारिकी से परिचित होगा और उनकी समस्याओं को समझते हुए समाज में सुव्यवस्थित बदलाव के आंदोलन में शरीक होगा ।

इस अवसर पर भारतीय दलित साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर का 84 वां जन्मदिवस भी मनाया गया। अकादमी के सभी पदाधिकारियों की ओर से उनके अच्छे स्वास्थ्य और दीघार्यु की कामना की गई। अकादमी के सदस्यों और पदाधिकारियों द्वारा केक काट कर जन्मदिन की बधाई दी गई। डा. सुमनाक्षर ने सभी का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर समाज के कई गणमान्य व्यक्ति, समाज सेवी और विशिष्ट साहित्यकार सम्मिलित हुए इसमें कुछ खास शामिल लोगों में डा. राजमल सिंह ह्यराजह्व, दीपक कुमार भृगुवंशी, रूपराम बागी, अजय गौतम, कवल मलिक, संजीव सचदेवा, इन्दु कुमारी ह्यरविह्व, काजल कुमारी, श्याम सिंह, डा. राजेश कुमार थे। अकादमी के राष्ट्रीय महामंत्री जय सुमनाक्षर ने कार्यक्रम में पधारे सभी लोगों का धन्यवाद ज्ञापन किया।

कम उम्र की लड़कियां परोस रहीं शराब, सूचना पर दिल्ली पुलिस ने हुक्का बार में मारी रेड

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

शाहदरा जिले के स्पेशल स्टाफ ने कांच नाम के क्लब में चल रहे अवैध हुक्का बार पर छापेमारी कर संचालक व मैनेजर को गिरफ्तार किया है। आरोपितों की पहचान सबोली गांव निवासी गौरव व सबोली विस्तार निवासी मैनेजर पंकज को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपितों के पास से 11 बोतल अवैध शराब, 16 हुक्के व अन्य सामान बरामद किया है।

लड़कियां परोस रही थीं शराब और हुक्का जिला पुलिस उपायुक्त रोहित मीना ने बताया कि पुलिस अवैध हुक्का बार के खिलाफ कार्रवाई कर रही है। सूचना मिली थी कि झिलमिल स्थित कांच क्लब में अवैध हुक्का बार चल रहा है। इंस्पेक्टर विकास कुमार के नेतृत्व में एसआइ प्रशांत व हेड कांस्टेबल अकरम व अन्य की टीम बनाई। टीम ने क्लब पर छापेमारी की। वहां 27 वर्ष से कम उम्र की युवतियों को नौकरी पर रखा हुआ था जो बार में आने वाले लोगों को शराब परोसती थीं। कम उम्र के लोगों को हुक्का देते थे। छापेमारी के दौरान पाया गया कि क्लब तम्बाकू हुक्का परोस रहा था जो सीओटीपीए अधिनियम के तहत दिल्ली में प्रतिबंधित है। जांच के दौरान पता चला कि बार में कम उम्र की लड़कियां शराब परोसने का काम कर रही थीं। साथ ही यह भी पाया गया कि प्रमोद चौधरी जो क्लब के प्रबंधक हैं। उन्ही के नाम पर एक आबकारी लाइसेंस जारी किया गया था। पुलिस ने बढ़ाई सर्तकता बता दें कि जब से दिल्ली शराब नीति घोटाला सामने आया है, तब से पुलिस शहर में शराब की अवैध बिक्री और लाइसेंस रखने वाले सभी लोगों के प्रति अधिक सतर्क हो गई है। मई महीने में आबकारी विभाग ने पश्चिमी दिल्ली में छापेमारी की थी, जिसमें तस्करी की गई शराब की 240 बोतलें और 6 किलो गांजा जब्त किया गया था।

10वीं के स्टूडेंट्स के लिए गुड न्यूज, एग्जाम में अच्छे नंबर लाने वालों को मिलेगा दिल्ली से बाहर घूमने का मौका

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के सरकारी स्कूलों से शैक्षणिक सत्र 2022-23 में 10वीं में बेहतर अंक से उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थियों को दिल्ली से बाहर घूमने के लिए ले जाया जाएगा।

शिक्षा निदेशालय ने इस संबंध में सरकारी स्कूलों के प्रधानाचार्यों को निर्देश दिया कि इस सत्र में जो विद्यार्थी 11वीं में है उनको युवा योजना के तहत नवंबर 2023 से लेकर जनवरी 2024 के बीच बाहर घूमने के लिए ले जाया जाए। दिल्ली के अभिषेक ने तय किया तीरंदाज से सहायक आयुक्त तक का सफर, साल 2013 में मिली थी नौकरी निदेशालय ने इन विद्यार्थियों में दिव्यांग विद्यार्थियों को भी शामिल करने को कहा। योजना के तहत एक स्कूल से 20 विद्यार्थी ही जाएंगे। वहीं, दो स्कूलों के 20-20 विद्यार्थी एक साथ एक बस में घूमने जाएंगे।

वहीं, इस यात्रा में प्रत्येक स्कूल से एक अभिभावक को भी शामिल किया जाएगा। निदेशालय ने घूमने वाली जगहों की सूची भी जारी की है।

विद्यार्थियों को आगरा, जयपुर, ऋषिकेश, नैनीताल, भीमताल, रेणुकाजी, हरिद्वार, मसूरी, चंडीगढ़ सहित अन्य खूबसूरत जगहों पर तीन दिन के लिए घूमने के लिए ले जाया जाएगा। वहीं, टूर के लिए प्रत्येक विद्यार्थी को तीन हजार रुपये देने होंगे।

रिक्शे को धक्का लगाने का किया विरोध तो आरोपी ने शख्स पर किया चाकू से हमला

पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र थाना पुलिस ने एक रिक्शा चालक को चाकू मारकर भाग रहे आरोपित को गिरफ्तार किया है। आरोपित रिक्शा चालक प्रभु मूल रूप से बिहार के मोतिहारी जिले का रहने वाला है जो आनंद विहार बस अड्डे के पास फुटपाथ पर रहता है।

घायल रिक्शा चालक अनिल सिंह गाजीपुर में रहता है। पुलिस ने आरोपित के पास से वारदात में प्रयुक्त नारियल काटने वाला चाकू बरामद कर लिया है। पुलिस प्राथमिकी पंजीकृत करके मामले की जांच कर रही है।

पूर्वी जिला पुलिस उपायुक्त अमृता गुगुलोथ ने बताया कि आरोपित रिक्शा चालक अनिल के रिक्शे को अक्सर धक्का मारकर भाग जाता था। शुक्रवार शाम अनिल रिक्शे पर गाजीपुर मंडी से माल लेकर टेल्को फ्लाइओवर के पास से गुजर रहा था। इसी दौरान आरोपित ने एक बार फिर उसके रिक्शा को धक्का मार दिया, जिससे वह परेशान होने लगा। उसने विरोध किया तो आरोपित ने उस पर चाकू से हमला कर दिया। इसके बाद वह मौके से भागने लगा और तभी पेट्रोलिंग कर रहे पुलिसकर्मियों ने उसे गिरफ्तार कर लिया।

श्री राजनाथ सिंह रक्षा मंत्री भारत सरकार के निवास स्थान पर दिल्ली की रामलीलाओं के पदाधिकारी का स्नेह भोज संपन्ने

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली श्री रामलीला महासंघ एवं लव कुश रामलीला कमेटी के अध्यक्ष श्री अर्जुन कुमार ने बताया कि माननीय श्री राजनाथ सिंह रक्षा मंत्री भारत सरकार के सानिध्य में उनके निवास स्थान पर दिल्ली की प्रमुख रामलीला कमेटियों के पदाधिकारी का एक स्नेह भोज कार्यक्रम संपन्न हुआ जिसमें लव कुश रामलीला कमेटी के अध्यक्ष श्री अर्जुन कुमार, महामंत्री सुभाष गोयल ने रक्षा मंत्री जी को हनुमान जी की गदा, राम मंदिर का स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित कियो रामलीलाओं में आने के लिए निमंत्रण दियो श्री अर्जुन कुमार ने यह भी बताया कि माननीय राजनाथ सिंह जी ने इस अवसर पर कहा कि प्रभु श्री राम हमारे जीवन के आधार एवं स्तंभ है प्रभु श्री राम मयार्दा पुरुषोत्तम है आप सभी मेरे निवास स्थान पर पधारे इसके लिए मैं आप सभी का हार्दिक स्वागत करता हूं मैं अपने निवास स्थान पर हर वर्ष इस तरह का कार्यक्रम आयोजित करूंगो इस अवसर पर राष्ट्र संत अजय भाई द्वारा भजन प्रभु श्री राम पर प्रस्तुत किए गए भजनों से सभी भाव विभोर हुऐ इस अवसर पर दिल्ली की प्रमुख रामलीला कमेटी की पदाधिकारी ने माननीय रक्षा मंत्री जी को रामलीला अवलोकन हेतु निमंत्रण पत्र दिए जिनमें प्रमुख धर्मपाल सिंगला, पवन गुप्ता, सत्यभूषण जैन, राजन चोपड़ा, विजेंद्र गुप्ता विधायक, नरेंद्र चावला, सुमित गुप्ता, श्याम अग्रवाल सतीश गर्ग अंकुर गोयल, कपिल रस्तोगी, धीरजधर गुप्ता, महेंद्र नागपाल, जत्थेदार अवतार सिंह, अनिल शर्मा, प्रकाश बराठी, शिव शंकर नागर आदि भी सम्मिलित हुए माननीय राजनाथ सिंह रक्षा मंत्री के साथ सभी ने प्रीतिभोज किया

आम आदमी पार्टी को लगा झटका

नई दिल्ली। राजेंद्र नगर विधानसभा में विभिन्न पदों पर आम आदमी पार्टी में रही डॉ. चंद्रकांता और करोल बाग में निगम प्रत्याशी रही ज्योति बड़वाल ने भाजपा का दामन थाम लिया है। आज रविवार यानी 8 अक्टूबर को वह प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा और महामंत्री योगेंद्र चांदोलिया की उपस्थिति में भाजपा में शामिल हो गई। विधानसभा के 300 से ज्यादा कार्यकताओं ने ली भाजपा की सदस्यता डॉ. चंद्रकांता ने आम आदमी पार्टी में बढ़ते भ्रष्टाचार और नीतियों से भटकने का आरोप लगाते हुए भाजपा की सदस्यता ली। डॉ. चंद्रकांता के साथ राजेंद्र नगर विधानसभा के 300 से अधिक कार्यकताओं ने भी भाजपा की सदस्यता ली। प्रधानमंत्री मोदी की नीतियो से प्रभावित हैं डॉ. चंद्रकांता ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की नीतियो से प्रभावित होते हुए कहा कि पीएम के नेतृत्व में भारत का सम्मान देशभर में बढ़ रहा है। साथ ही देश की भी तरक्की हो रही है।

राष्ट्रीय एकता का सन्देश देती है शॉर्ट फिल्म धर्म और इंसानियत

नई दिल्ली। लेखक निमार्ता-निर्देशन व अभिनेता प्रवीण कर्दम की एक के बाद एक कई शॉर्ट फिल्मे चर्चा में रही है जिनमे मिशन जय हिंद, द ग्रेट मास्टर माईड, मोहब्बत एक जुनून, और अजनबी-एक फाइटर आदि चर्चित शॉर्ट फिल्मे मुख्यरूप से शामिल है। अभिनेता प्रवीण कर्दम की चर्चित शॉर्ट फिल्मो में अब एक नाम और जुड़ गया है राष्ट्रीय एकता का संदेश देने वाली उनकी एक और शॉर्ट फिल्म धर्म और इंसानियत का जो कर्दम फिल्म्स (कर्दम फिल्म्स) के यूट्यूब चैनल पर रिलीज हुई है। जिसकी मुख्य स्टार कास्ट में प्रवीण कर्दम, शालू, शक्ति देव, शालू सैनी, पदम सिंह, विनोद जादूगर, अजय मुनकिया शामिल है। कर्दम फिल्म्स के बैनर तले बनी शॉर्ट फिल्म धर्म और इंसानियत 2 धर्मो की दुश्मनी को प्यार से जितनी की कहानी है जो नफरत को इंसानियत से कैसे प्यार में जीता जा सकता है यह संदेश देती है।

लोक नायक अस्पताल अस्पताल में सर्जरी के लिए मिल रही है छह महीने आगे की तारीख

नई दिल्ली। दिल्ली सरकार के लोक नायक अस्पताल में सर्जरी के लिए पहुंच रहे मरीजों को परेशानी उठानी पड़ रही है। उन्हें छह महीने तक आगे सर्जरी की तिथि दी जा रही है। इससे मरीज परेशान हैं और प्राइवेट अस्पताल जाकर अधिक खर्च पर आपरेशन कराने को मजबूर हो रहे हैं। लोक नायक अस्पताल में पिछले दिनों पित्ताशय की थैली में पथरी की शिकायत लेकर पहुंची एक मरीज को छह महीने आगे की सर्जरी की तिथि दे दी गई है। महिला मरीज की हालत खराब है। उन्हें उपचार के लिए छह महीने इंतजार करने की सलाह दे दी गई है, जबकि उनका दर्द असहनीय हो गया है। महिला मरीज रिंकी को पथरी की शिकायत होने पर स्वजन लोक नायक अस्पताल में लेकर आए थे। जांच के बाद अस्पताल के चिकित्सकों ने उन्हें आपरेशन कराने की सलाह दी, लेकिन उन्हें आपरेशन के लिए तीन मार्च 2024 की तिथि दे दी गई। अब उनका बुरा हाल है। परिजन उपचार के लिए दूसरे अस्पतालों के चक्कर काट रहे हैं। उनके पति ने कहा कि उनके पास अब कोई विकल्प नहीं रह गया है। मजबूरन प्राइवेट अस्पताल में उन्हें उपचार के लिए जाना होगा। लोक नायक अस्पताल के एक अधिकारी ने बताया कि छोटी सर्जरी तो एक से दो दिन में ही कर दी जाती है। बड़ी सर्जरी में समस्या हो सकती है, लेकिन बहुत लंबी अवधि उन्हें नहीं दी जाती। इस बारे में जानकारी लेने के लिए लोक नायक अस्पताल के निदेशक डा. सुरेश कुमार से संपर्क करने की कोशिश की गई, लेकिन संपर्क नहीं हो सका। एक बेड दो मरीज के उपचार की हुई थी शिकायत पिछले दिनों अस्पताल में एक बेड पर दो मरीजों का उपचार करने की शिकायत भी की गई थी। दयालपुर की रहने वाली शकुंतला देवी के पुत्र भरत ने आरोप लगाया था कि उनकी मां को एक अन्य महिला मरीज के साथ उपचार देना शुरू कर दिया गया था। इसका विरोध करने पर उन्हें बेड उपलब्ध हो सका था। एलएन प्रशासन ने इस तरह के आरापों को गलत बताया था। पर्याप्त बेड होने की बात कही थी। इससे पहले इंटरनेट मीडिया पर एमआरआइ और सीटी स्कैन जांच के लिए छह महीने से अधिक की तिथि देने के पर्चे वायरल हुए थे। तब भी एलएन प्रशासन ने इससे इनकार किया था।

सोनीपत में नहर टूटने से संकट

नई दिल्ली, संवाददाता

सोनीपत के बड़वासनी गांव के पास मुनक नहर के करियर लिंक चैनल (सीएलसी) क्षतिग्रस्त होने से राजधानी में जल आपूर्ति की समस्या उत्पन्न हो गई है। अगले दो दिनों तक दिल्ली के बड़े क्षेत्र में जल आपूर्ति बाधित रहेगी। अधिकारियों का कहना है कि स्थिति पर नजर रखी जा रही है। सीएलसी के क्षतिग्रस्त होने और दिल्ली सब ब्रांच (डीएसबी) से कम मात्रा में पानी मिलने के कारण हैदरपुर फेज एक व दो, बवाना, नांगलोई और द्वारका जल शोधन संयंत्र प्रभावित हुए हैं। उछउ से दिल्ली में होती है 750 क्यूसेक पानी की आपूर्ति इन संयंत्रों से क्षमता के अनुसार, दिल्लीवासियों को शोधित जल नहीं मिल रहा है। शनिवार व रविवार को भी समस्या बनी रह सकती है। उत्तरी दिल्ली, उत्तर-पश्चिमी दिल्ली, पश्चिमी दिल्ली, दक्षिणी दिल्ली के कुछ क्षेत्र, दिल्ली छावनी और डियर पार्क क्षेत्र में जल आपूर्ति बाधित रहेगी। कई अन्य क्षेत्रों में पानी की कटौती की जा सकती है। सीएलसी से दिल्ली को 750 क्यूसेक पानी की आपूर्ति होती है। जल बोर्ड के अधिकारियों का कहना है कि सीएलसी की मरम्मत होने तक यह समस्या रहेगी, इसलिए उपभोक्ताओं को न्यायसंगत तरीके से पानी का उपयोग करना चाहिए। उपभोक्ताओं को टैंकर से पानी आपूर्ति और अन्य समस्याओं के लिए केंद्रीय कंट्रोल रूम से संपर्क करने की सलाह दी गई है। पश्चिमी यमुना नहर में छोड़ा अतिरिक्त पानी बड़वासनी गांव के पास शुक्रवार आधी रात को सीएलसी टूट गई है। खुबड़ू हेड से सीएलसी नहर निकलती है। इस समय इसमें 700 क्यूसेक पानी छोड़ा जा रहा है। इसके पैरलल पश्चिमी यमुना नहर में 800 क्यूसेक पानी चल रहा है। शनिवार सुबह खुबड़ू हेड से पानी बंद करवाया गया। दिल्ली में पानी की किल्लत न हो इसके लिए पश्चिमी यमुना नहर में 400 क्यूसेक पानी बढ़वाया गया है। यानि इसके पैरलल नहर में अब 1200 क्यूसेक पानी छोड़ा गया है। दोपहर बाद नहर के टूटे हुए किनारे की मरम्मत का काम शुरू कर दिया है। सिंचाई विभाग एक्सइएन गुलशन कुमार ने कहा कि रविवार रात तक मरम्मत का काम पूरा हो जाएगा। सोमवार से पानी की आपूर्ति बहाल कर दी जाएगी।

70 वर्षीय पड़ोसी ने 10 साल की बच्ची से दुष्कर्म किया

नई दिल्ली। निहाल विहार इलाके में 70 वर्षीय पड़ोसी ने 10 साल की बच्ची से दुष्कर्म किया। पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर आरोपी दर्शन लाल को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस एनजीओ की मदद से बच्ची की काउंसलिंग करा रही है। बच्ची परिवार के साथ निहाल विहार इलाके में रहती है। पीड़ित बच्ची स्थानीय सरकारी स्कूल में कक्षा चार की छात्रा है। पुलिस अधिकारी ने बताया कि पीड़िता के पिता पेंटर हैं। मां घरों में काम करती है। पड़ोस में रहने वाला आरोपी दर्शन लाल इलाके में चाय की दुकान चलाता है। आरोपी के बेटा-बहू नोएडा में मजदूरी करते हैं। पुलिस अधिकारी ने बताया कि बुजुर्ग होने के नाते पीड़िता की मां अक्सर अपने घर से भोजन भेजती थी। इस वजह से आरोपी का पीड़िता के घर आना-जाना लगा रहता था। पीड़िता गुरुवार शाम को घर के बाहर खेल रही थी, तभी आरोपी ने मोबाइल में फिल्म दिखाने के बहाने उसे अपने घर में बुलाया और फिर बच्ची से दुष्कर्म किया। सहमी हुई पीड़िता अपने घर आकर बिस्तर के नीचे डर से छिप गई। उसकी मां घर लौटी तो उसने घटना के बारे में बताया। इसके बाद परिजनों ने पुलिस को सूचना दी।

लक्ष्मीनगर में घर के ताले तोड़कर गहने-नगदी ले गए

नई दिल्ली। लक्ष्मीनगर में बदमाशों ने घर के ताले तोड़कर लाखों रुपये के गहने, दो लाख रुपये समेत तीन मोबाइल चोरी कर लिए। पीड़ित को सुबह तीन बजे घटना का पता चला तो पुलिस को सूचना दी। लक्ष्मी नगर में हाउसकीपिंग का काम करने वाले ठाकुर दास ने पुलिस को बताया कि शुक्रवार तड़के उनकी बिल्डिंग में फूड डिलीवरी ब्वॉय बाइक खड़ी करने आया था। उसने बताया कि मेन गेट का ताला टूटा है। उन्होंने देखा तो मेन गेट का ताला तोड़कर अलमारी से गहने और दो लाख रुपये की नगदी चोरी हुई है। बदमाश दो मंगलसूत्र, एक जोड़ा बाली, चार पाजेब, एक अंगूठी, एक चेन और तीन मोबाइल भी ले गए हैं। पीड़ित की शिकायत पर लक्ष्मीनगर थाने में अज्ञात बदमाशों के खिलाफ केस दर्ज किया गया है। लक्ष्मीनगर में ही चोरी का एक और मामला सामने आया है। मेन मार्केट में ब्यूटी पार्लर चलाने वाली रुखसार ने पुलिस को आवेदन देकर बताया कि उनके यहां गुरुवार को एक महिला काम कराने आई थी। महिला चेंजिंग रूम गई, लेकिन बिना काम कराए लौट गई। उन्होंने जाकर देखा तो चेंजिंग रूम में रखे उनके पर्स से 20 हजार रुपये और मोबाइल गायब मिला। पीड़िता की शिकायत पर पुलिस ने केस दर्ज किया है।

खेत हमारे, गांव हमारे डीडीए मालिक क्यों जवाब दो सरकार : थान सिंह यादव

नई दिल्ली। दिल्ली देहात व गांवों की 18सूत्री मांगो को लेकर पहले मुख्यमंत्री चौधरी ब्रहम प्रकाश जी के पैतृक गांव शकूर पुर में हुई महा पंचायत को 2अक्तूबर 2023 को एक वर्ष होने पर दिल्ली पंचायत संघ के पंच प्रमुखों व मुख्य पंचायत प्रमुखों की बैठक बुलाई गई। पंचायत संघ प्रमुख थान सिंह यादव ने कहा कि 18सूत्री मांगो व गांवों को लाल डोरा से मुक्त कर मालिकाना हक न देने के कारण संबंधित शासन प्रशासन के खिलाफ आक्रोश व दिल्ली के केंद्र में जल्द ही बढा आंदोलन करने का प्रस्ताव पर सहमति बनी । पंचायत ने प्रधानमंत्री भारत सरकार से दिल्ली के गांवों को लाल डोरा से मुक्त कर मालिकाना हक, संपत्ति कर से मुक्ति, रोजगार के लिए गांवों को व्यवसायिक श्रेणी, सील संपति खोले, बढा हुआ सर्कल रेट लागू करें आदि 18सूत्री मांगो को पुरा करवाने की मांग की है। दिल्ली विस्तार व विकास में गांवों ने रोजगार व आजीविका चलाने वाली कृषि भूमि का बलिदान कर दिया। लेकिन दिल्ली गांवों को मालिकाना हक नहीं दिया जा रहा। दूसरी ओर पडोसी राज्यों में गांवों को लाल डोरा से मुक्ति या अंग्रेजों की कैद वाले लाल डोरा से आजादी दी जा रही है। पंचायत संघ का कहना है कि गांव पहले थे या अनधिकृत कालोनी व झुग्गीयां जिन्हे मालिकाना हक दिया जा रहा है।तो दिल्ली के गांवों को क्यों नहीं। इसी से पता चलता है कि दिल्ली देहात व गांवों के साथ दोयम दर्जे का व्यवहार किया जा रहा है। पंचायत संघ ने दिल्ली देहात व गांव के नेताओं निगम पार्षदो, विधायकों, सांसदो सभी को आवाहन किया की। वह दिल्ली के गांवों को मालिकाना हक दिलवाने का काम करें।नहीं तो आगामी सभी चुनावों में आपको गांवों का आक्रोश झेलना पड़ेगा। पंचायत संघ ने कहा कि हमारी 18 सूत्री मांगों में पहली मांग जल्द से जल्द गांवों को जहां तक मकान वहां तक गांव मानकर मलिकाना हक दें सरकार। गांवो का लाल डोरा, विस्तारित लाल डोरा व उससे बाहर की लगती हुई आबादी को मालिकाना हक दें। ताकि गांव वालों को बैंक से ऋण व अन्य सुविधा मिल सके। अपना मकान बना सके। पंचायत संघ प्रमुख थान सिंह यादव व सह प्रमुख सुनील शर्मा ने दिल्ली देहात व गांवो की 18 सूत्री मांगों का एक महीने में समाधान करने की मांग की है।मांगो का समाधान नहीं होने पर दिल्ली के केंद्र में कर्तव्य पथ, जंतर मंतर जहां स्थान मिलेगा वहां महा पंचायत करेंगे।

दिल्ली के अभिषेक ने तय किया तीरंदाज से सहायक आयुक्त तक का सफर, साल 2013 में मिली थी नौकरी

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

एशियाई खेलों में तीरंदाजी में तीन बार देश का प्रतिनिधित्व करने वाले भारतीय तीरंदाज अभिषेक वर्मा दो स्वर्ण व तीन रजत सहित कुल पांच पदकों पर निशाना साध चुके हैं।

चीन के हांगझू में आयोजित 19वें एशियाई खेलों में शनिवार को कंपाउंड पुरुष व्यक्तिगत प्रतिस्पर्धा में उन्होंने रजत पर निशाना साधा। वहीं बृहस्पतिवार को कंपाउंड पुरुष टीम प्रतिस्पर्धा में भारत ने स्वर्ण जीता था, जिसमें अभिषेक का विशेष योगदान रहा।

पीएम मोदी और खेल मंत्री ने पोस्ट कर दी बधाई वह धनुर्धर अर्जुन जैसी प्रतिभा के दम पर वर्तमान में आयकर विभाग में सहायक आयुक्त के पद पर तैनात हैं। वह वर्ष 2013 में टैक्स असिस्टेंट के पद पर नियुक्त हुए थे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और खेल मंत्री अनुराग ठाकुर ने एक्स पर पोस्ट कर उन्हें बधाई दी है।

एशियाई खेलः दिल्ली के अभिषेक वर्मा ने कंपाउंड व्यक्तिगत स्पर्धा में जीता रजत पदक, पहले भी बढ़ा चुके है मान अभिषेक का जन्म 26 जून, सन 1989 को हुआ था। अभिषेक अपने पिता सुरेंद्र वर्मा, मां सुनीता वर्मा व छोटे भाई अभिनीत वर्मा के साथ मॉडल टाउन में रहते हैं। इस वर्ष एशियाई खेलों में तीरंदाजी में दिल्ली से केवल अभिषेक का चयन किया गया था।

मां ने बताया कि उन्हें अपने पुत्र की उपलब्धियों पर गर्व है। वह बचपन से ही अपने लक्ष्य को लेकर काफी सजग व निर्धारित रहते हैं। उन्होंने बताया कि पदक जीतने के बाद सुबह से ही रिश्तेदारों व पड़ोसियों की बधाइयों का तांता लगा हुआ है।

अभिषेक रविवार रात करीब एक बजे दिल्ली एयरपोर्ट पहुंचेंगे। जहां पर स्वजन और दोस्त उनके स्वागत के लिए तैयार रहेंगे। पिता ने कहा कि एक बाप के लिए पुत्र की सफलता से बड़ी कोई खुशी नहीं होती है।

गुरु लोकेश की विद्या से अर्जुन जैसे बने अभिषेक

गुरु लोकेश चंद ने अभिषेक को धनुर्विद्या का ऐसा ज्ञान दिया कि वह आज के अर्जुन बन गए हैं। लोकेश ने बताया कि अभिषेक से उनकी मुलाकात वर्ष 2003 में माल रोड स्थित दिल्ली क्रीड़ा स्थल में हुई थी।

आंखों में देश का नाम रोशन करने की चमक देखकर वह काफी प्रभावित हुए। उन्होंने यमुना स्पोर्ट्स काम्प्लेक्स में अभ्यास कराना शुरू किया। लोकेश बताते हैं कि इनकी नजरें ऐसी थीं कि उड़ते पक्षी के पंख गिन लें।

निशाना साधने में इतने माहिर थे कि कुछ महीनों बाद ही अभिषेक का चयन दिल्ली टीम में हो गया। साल 2006 में मलेशिया में आयोजित एशियाई ग्रैंड प्रिक्स टूनामेंट में उन्होंने रजत पदक जीता था। वर्ष 2014 में निवर्तमान राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने अर्जुन अवार्ड से सम्मानित भी किया था।

अभी तक की उपलब्धियां

वर्ष 2014 में इंचियोन में एशियाई खेलों की कंपाउंड टीम स्पर्धा में स्वर्ण व व्यक्तिगत स्पर्धा में रजत पदक

वर्ष 2018 में इंडोनेशिया में एशियाई खेलों में कंपाउंड टीम इवेंट में रजत पर निशाना वर्ष 2023 में तीरंदाजी विश्व कप चरण तीन की पुरुष कंपाउंड व्यक्तिगत स्पर्धा में स्वर्ण पदक

वर्ष 2022 में पेरिस में आयोजित तीरंदाजी विश्व कप में कंपाउंड मिक्स्ड टीम स्पर्धा में स्वर्ण पदक

वर्ष 2021 में 22वीं एशियन तीरंदाजी चैंपियनशिप में पुरुष कंपाउंड टीम स्पर्धा में कांस्य पदक

वर्ष 2015 में पोलैंड के राक्ला में तीरंदाजी विश्व कप चरण तीन में कंपाउंड पुरुष व्यक्तिगत वर्ग में अपना पहला अंतरराष्ट्रीय स्वर्ण पदक जीता था

शहीदों, संत महात्माओं के निमित्त सर्व पितृ यज्ञ

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

जिन दिवंगत आत्माओं ने राष्ट्र रक्षार्थ, समाज सेवा, जन कल्याण हेतु कार्यरत रहते हुए अपने प्राणों को न्योछावर कर दिया उनके प्रति हमारा भी यह कर्तव्य बनता है कि उनकी स्मृति में उनके निमित्त श्राद्ध कर्म तर्पण एवम ब्रह्मभोज करके उन्हे श्रद्धांजलि अर्पित करें यह उदगार व्यक्त किए गए स्वामी श्री राजेश्वरानंद जी महाराज द्वारा शाहदरा गोरख पार्क स्थित श्री राजमाता झंडेवाला मंदिर में आयोजित सर्व पितृ यज्ञ में। संस्थान के सहप्रबंधक राम वोहरा ने बताया कि पितृ पक्ष के अवसर पर स्वामी श्री राजेश्वरानंद जी महाराज के सान्निध्य में सर्व पितृ यज्ञ का आयोजन किया गया।इस पितृ यज्ञ में सैकड़ों भक्तो ने उन दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित की जो राष्ट्र रक्षार्थ शहीद हुए या वह महा पुरुष संत महात्मा लोग जिन्होंने जन कल्याण समाज में ज्ञान की ज्योति जागृति पैदा करने के लिए जीवन पर्यन्त कार्य करते हुए अपने प्राणों की आहुति अर्पित कर दी।इन महान विभूतियों के अलावा हर परिवार कुटुंब में ऐसे अनजान पूर्वजों को याद करते हुए आहुतियां अर्पित कराई गई जिनके पीछे उनको कोई याद करने वाला नही है स्वामी श्री राजेश्वरानंद जी महाराज ने कहा कि वसुधैव कुटुंबकम् विचारधारा के अंतर्गत उनके प्रति भी हमारी कुछ जिम्मेदारी बनती है अतः वैदिक मंत्रोचारण के साथ भक्तो ने सर्व पितृ यज्ञ में आहुतियां अर्पित की।अनजान पूर्वजों की तृप्ति हेतु तर्पण विधि विधान से संपन्न हुआ।हनुमान चालीसा का सामूहि

संक्षिप्त खबरें

स्वर्गीय राम विलास पासवान का तीसरा पुण्यतिथि धूम धाम मनाया गया

आरा ।राष्ट्रीय लोजपा प्रधान कार्यालय हरी जी हाता आरा मे लोजपा के पद भूषण से अलंकृत पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सह पूर्व केन्द्रीय मंत्री भारत सरकार-स्वर्गीय राम विलास पासवान जी का तीसरा पुण्यतिथि धूम धाम मनाया गया और आज ही पार्टी में जिला स्तरीय पांच लोगो को पदाधिकारी मनोनीत किया गया जिसमेंनिम्नलिखित कार्य कर्ता उपस्थित हुए , जिसमे राजेश्वर सिंह जिला अध्यक्ष,कुंवर उपेंद्र कुमार सिंह कार्यकारी ,जिला अध्यक्ष महिला प्रकोष्ठ अध्यक्ष आरती देवी, अति पिछड़ा प्रकोष्ठविजय कुमार चौहान , चंदन कुमार पासवान , गणेश शर्मा , धर्मशिला देवी , रंजीत कुमार, रमेश पासवान , सुरेंद्र पासवान, अशोक कुमार, सूरज विजय कुमार सिंह, सूरज मिथलेश सिंह, वीरेंद्र राय, संजय पासवान, कुमार अमन, डॉक्टर काली चरण प्रसाद , चंदन सिंह, प्रकाश शाह आदि मौजूद रहे।

रोटरी क्लब आफ युवा ने तीर्थयात्री के लिए नि शुल्क सेवा

गया। रोटरी क्लब ऑफ युवा ने निशुल्क जल पान काउंटर तीर्थयात्रियों के लिए शुरू किया, जिसका उद्घाटन डीजी एसपी बगारिया एजी सुमित मोर ने किया है, ।इस मौके पर क्लब के सेक्रेटरी राहुल महाजन, मुख्य आयोजनकर्ता मुकेश गुप्ता,ममता, सुनयना, कमलेश,गुंजन, आशा, विशाल, रुचि, आशुतोष, मुकेश जी उपस्थित थे, ये कार्यक्रम मेला क्षेत्र राम सागर तालाब मे मेला समापन तक रहेगा सुबह से शाम तक चलेगा।

कमांडिंग एंड चीफ फ्लाइंग इंस्ट्रक्टर के रूप में कर्नल लक्ष्मी कांत यादव हुए सेवानिवृत्त

गया ।आर्मी एडवेंचर नोडल सेंटर माइक्रोलाइटगया में ऑफिसर कमांडिंग एंड चीफ फ्लाइंग इंस्ट्रक्टर के रूप में कार्यरत कर्नल लक्ष्मी कांत यादव सेवानिवृत्त हुए ।कर्नल लक्ष्मी कांत यादव ने अपने कार्यकाल में नोड का चौमुखी विकास किया,जिसमें नए हैंगर का निर्माण,रनवे का निर्माण और एक अतिरिक्त विमान को हवाई बेड़े में शामिल किया ।इसके अतिरिक्त कर्नल लक्ष्मी कांत यादव के कार्यकाल में नोड ने15 कीर्तिमान हासिल किये,जिनमें से 05 को एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स और 10 को इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में जगह मिली ।कर्नल लक्ष्मी कांत यादव की कार्यशैली,परिश्रम एवं सकारात्मक सोच सराहनीय है ।कर्नल लक्ष्मी कांत यादव के विदाई समारोह में नोड के सभी व्यक्ति शामिल थे।

राष्ट्र सेवा दल द्वारा दर्जनों जेपी सेनानियों को किया जायेगा सम्मानित

माँझी । सोमवार को माँझी के बहोरन सिंह के टोला स्थित उत्सव पैलेस के सभागार में राष्ट्र सेवा दल के तत्वावधान में आयोजित सम्मान समारोह में दर्जनों जेपी सेनानियों को सम्मानित किया जाएगा ।इसकी जानकारी देते हुए जन सुराज के अनुमंडलीय अध्यक्ष उदय शंकर सिंह ने बताया कि समारोह में राष्ट्र सेवादल के पंकज कुमार, शाहिद कमाल, सुशील कुमार तथा प्रियदर्शी जी के अलावा सवलिया गिरी, भरत सिंह, सदन कुमार सिंह, प्रो रामजी तिवारी, मो इसराफिल, शशि भूषण सिंह, बागेश्वरी तिवारी, बबन सिंह, केदार नाथ सिंह, उमाशंकर ओझा, तथा श्याम बिहारी शुक्ला समेत बड़ी संख्या में लोग शामिल होंगे।

डॉ उषा कुमारी हुई सम्मानित

छपरा सदर ।रविवार को रामजयपाल यादव महाविद्यालय स्थित लक्ष्मी नारायण यादव अध्ययन केंद्र में जेपीयू के हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो डॉ उषा कुमारी को यूनिक सोसाइटी ऑफ एजुकेशन (यूज), द्वारा हिंदी सेवी सम्मान से सम्मानित किया गया. इस अवसर पर डॉ. श्याम शरण, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,कमला राय महाविद्यालय, गोपालगंज, नील मणि सिंह, शम्भू नाथ, अरुण कुमार तिवारी एवं संस्था के सभी सदस्य उपस्थित थे।

मन्दिर के पुजारी की हार्ट अटैक से हुई मौत

इसुआपुर थाना क्षेत्र के एक पुजारी गणेश पांडेय की हार्ट अटैक से हुई मौत हो गई ।मिली सूचनानुसार थाना क्षेत्र के आता नगर गांव निवासी 62 वर्षीय पुजारी गणेश पांडेय का निधन शनिवार की रात हार्ट अटैक होने से हो गया। वे कथा पूजा पाठ के अलावे सतासी हनुमान मंदिर के पुजारी थे। शनिवार की संध्या वे मंदिर में हनुमान जी की पूजा एवं आरती करके घर आए। जहां खाना खाने के बाद खांसी के साथ सीने में दर्द हुआ । जिसके बाद आनन- फानन में परिजन उन्हें अस्पताल ले गए। जहां चिकित्सक ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। वहीं हार्ट अटैक से मृत्यु होने की बात बताई जा रही है। पुजारी की मौत की खबर से पूरे क्षेत्र में शोक की लहर व्याप्त हो गई। रविवार की सुबह से ही उनके अंतिम दर्शन के लिए लोगों का ताता लग गया।

रोजगार को खत्म कर साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण के जरिए लोकतांत्रिक मूल्यों को कुचल रही है मोदी सरकार

फर्जी बिजली बिल के खिलाफ 12 अक्टूबर को होगा बिजली विभाग के मुख्यालय पर प्रदर्शन

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। आंबेडकर कल्याण छात्रावास,कतिरा के सभागार भवन में इंकलाबी नौजवान सभा (आरवाईए) का एकदिवसीय जिला कमिटी की विस्तारित बैठक किया गया। बैठक में राष्ट्रीय महासचिव कॉ नीरज कुमार, राज्य सचिव कॉ शिवप्रकाश रंजन और पूर्व राज्य सचिव कॉ सुधीर यादव भी उपस्थित थे। बैठक का संचालन जिला सचिव कॉ पप्पू कुमार और अध्यक्षता कॉ निरंजन केशरी ने किया।

बैठक को सम्बोधित करते हुए इंकलाबी नौजवान सभा (आरवाईए) के राष्ट्रीय महासचिव कॉ नीरज कुमार ने कहा कि मोदी सरकार के नौ सालों के शासन में रोजगार के तमाम अवसरों को खत्म करने का काम हुआ है। जिन सरकारी संस्थानों और कम्पनियों को जनता ने मेहनत से खड़ा किया था उसे अंबानीझअडानी के हाथों में बेचा जा रहा है। रेलवे,बैंक,कोल इंडिया, एयरपोर्ट, कल झकारखानों सबकी नीलामी हो रही है। जिसके कारण देश के करोडों नौजवान सरकारी रोजगार से वंचित हो रहे हैं। केंद्र के अलग झअलग विभागों में 90 लाख से ज्यादा पद खाली है। बेरोजगारी को खत्म कर सबको रोजगार देने का वायदा पूरी तरह से जुमला साबित हुआ ।दूसरी तरफ देश में लागातार मुस्लिम और अन्य अल्पसंख्यक समुदायों के खिलाफ नफरत को तीखा किया जा रहा है। जनता के सवालों पर मुखर हो कर बोलने वालों के खिलाफ यूएपीए का इस्तेमाल किया जा रहा है ।मोदी सरकार संविधान और लोकतंत्र को कुचल कर देश को तबाही-बबार्दी की ओर ढकेल रही है। इसलिए नौजवानों को आगे बढ़ कर मोदी सरकार के खिलाफ आंदोलन तेज करना होगा।

पूर्व राज्य सचिव कॉ सुधीर यादव ने कहा कि हर नौजवान को रोजगार का अवसर मिलना चाहिए। इसके लिए युवा आंदोलन को तेज करना होगा ।देश में भगत सिंह रोजगार गारंटी कानून के लिए नौजवानों को एकजुट हो कर संघर्ष चलाना होगा। राज्य सचिव कॉ शिवप्रकाश रंजन ने कहा कि बेरोजगारी और मोदी सरकार के विनाशकारी शासन के खिलाफ नौजवानों को संगठित करने के लिए गांव झगांव में सदस्यता अभियान चलाया जाएगा। आरवाईए के द्वारा आगामी 12 अक्टुबर को फर्जी बिजली बिल के खिलाफ बिजली विभाग के मुख्यालय पर अक्रोशपूर्ण प्रदर्शन किया जाएगा।

5 नवयुवतियों की सोन नदी में डूबने से हुई मौत

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। भाकपा-माले केंद्रीय कमिटी सदस्य अगिआंव विधायक मनोज मंजिल,राजू यादव,माले के युवा नेता विशाल कुमार ,भोला यादव ,पंकज पासवान ,संजय पासवान सुबह से ही जनता के साथ हैं।

कोइलवर प्रखंड के ग्राम-बहियारा के सामने सोन नदी में 5 नवयुवती और महिलाओं की कल शाम 5 बजे जितिया पर्व में नहाने के दौरान डूबने से मौत हो गई। अभी तक 4 शव को स्थानीय जनता खोज निकाली है,5वां अंजली कुमारी की खोज जारी है। राजनेताओं,बालू माफियाओं और प्रशासन की मिलीभगत से अवैध खनन से सोन नदी मौत की घाटी में बदल गई है,सोन नदी में मौत के कुंओं की श्रृंखला बना दी गई है,जितिया पर्व पर यह घटना घटी है,छठ पर्व आने वाला है,हर पर्व त्योहार पर घटनाएं हो रही हैं,मातम हो जा रहा है। इससे पहले खनगांव में 3 महिलाओं की,कोसिहान में 3 युवकों की और ग्राम-फुलाडी में 5 बच्चों की डूबने से मौत हो गई थी। कल की ही घटना है लेकिन रऊक्क्र की टीम आज सुबह 9:30 बजे पहुंची। 4 शव स्थानीय जनता ने खोज निकाला । 9 बजे तक प्रशासन की भी कोई खोज खबर नहीं थी ।

सम्मेलन भवन में पितृपक्ष विशेषांक गया गीतिका का हुआ लोकार्पण

प्रात : किरण संवाददाता

गया। जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन के डॉ.मंजू करण सांस्कृतिक सभागार में गया पितृपक्ष विशेषांक "गया गीतिका" के चौथे अंक का लोकार्पण बिहार राज्य धार्मिक न्यास बोर्ड के सदस्य चंदन कुमार सिंह, गया जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन के सभापति सुरेंद्र सिंह सुरेंद्र,महामंत्री सुमंत,गया गीतिका के प्रधान संपादक डॉ.राकेश कुमार सिन्हा'रवि' व संपादक डॉ.रश्मि प्रियदर्शनी ने किया गया जिसमें सभा का संचालन अरविंद कुमार ने किया। स्वागत समारोह में बोलते महामंत्री सुमन्त ने कहा यह गया नगर के लिए गौरव की बात है कि गया गीतिका के चौथे अंक का प्रकाशन हुआ है। कोरोना काल के बाद इस वर्ष प्रकाशित इस अंक को पढ़ कर गया के रूप स्वरूप की जानकारी सहज में ही मिल जाती है ।संपादक डॉ.रश्मि प्रियदर्शनी ने गया की गरिमा को उजागर करते हुए गया गीतिका पत्रिका में लिखने वाले सभी लोगों को धन्यवाद देते हुए कहा पितृभूमि गया वन्दनीय है ।प्रधान संपादक डॉ.राकेश कुमार सिन्हा'रवि' ने गया गीतिका में प्रकाशित सभी आलेखों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करते हुए कहा इसमें कोई भी आलेख की पुनरावृत्ति नहीं है और गीतिका गया नगर के गौरव गरिमा को आगे बढ़ता रहे इसी उद्देश्य के साथ चौथे अंक को प्रस्तुत किया गया है ।मुख्य अतिथि चंदन कुमार सिंह ने कहा कि अच्छा संयोग है कि गया में पितृपक्ष मेला चल रहा है और इस समय पितृपक्ष अंक गया गीतिका के चौथे अंक का लोकार्पण किया जा रहा है। हम इसके प्रधान संपादक, संपादक और इससे जुड़े सभी लोगों का सहृदय नमन करते हुए यह कहना चाहते हैं कि इस कृति से गयाजी शहर का नाम देश दुनिया में और उजागर होगा ,इसमें कोई शक नहीं है ।धन्यवाद ज्ञापन में सुरेन्द्र सिंह सुरेन्द्र ने कहा कि गया गीतिका एक ऐसी कृति बन गई जिसकी उपयोगिता आने वाले समय में भी बनी रहेगी ।सभा में वरिष्ठ कवि प्रवीण परिमल, अजीत कुमार,डॉ.राम परिखा सिंह,उपेन्द्र सिंह,खालिद हुसैन परदेसी, डॉ.मुरली मनोहर पांडे, सूरज कुमार, शंकर प्रसाद,अश्वनी कुमार,शंकर प्रसाद,चन्द्रदेव केशरी, उदय सिंह, मिथिलेश मिश्र दर्द, गजेंद्र लाल अधीर, प्यारे मोहन सहित अन्य गणमान्य लोग व साहित्यकार- पत्रकार उपस्थित रहें।

अतिपिछड़े वर्ग को देश व्यापी उत्थान के लिए नीतीश कुमार को प्रधानमंत्री बनाएं

प्रात : किरण संवाददाता

गया ।बाराचट्टी विधानसभा में जननायक कपूर्री चर्चा की तैयारी हेतु अति पिछड़ा प्रकोष्ठ जनता दल यू की बैठक बाराचट्टी प्रखंड के जयगीर पंचायत के जयगीर ग्राम में की गई है। इसबैठक को संबोधित करते हुए जिला अध्यक्ष विनोद कुमार ने बताया कि बिहार में त्रिस्तरीय पंचायतों के अलावा अन्य सरकारी सुविधाओं में आरक्षण देकर नीतीश सरकार अतिपिछड़ों को ताकत का अहसास कराया है। देश व्यापी उत्थान के लिए नीतीश कुमार को प्रधानमंत्री बनाना होगा। कुमार ने बताया कि बीजेपी आरक्षण खत्म करना चाहती है। जाति आधारित गणना के आकड़े प्रकाशित किए गए है जिसका विरोध कर रही है। बीजेपी के झांसे में नहीं आना है।

मणिपुर एवं रूस-यूक्रेन में मारे गए लोगों का किया सामूहिक पिंडदान और तर्पण

प्रात : किरण संवाददाता

गया ।विश्व प्रसिद्ध पितृपक्ष मेला में मातृ नवमी के अवसर पर शनिवार को चर्चित पिंडदानी, पत्रकार और समाजसेवी रहे स्व सुरेश नारायण की मौत 30 जनवरी 2014 के बाद उनका बेटा चंदन कुमार सिंह ने सामूहिक रूप से पिंडदान किया। उन्होंने कहा कि उसके पिता सुरेश नारायण ने कहा था कि उनकी मौत के बाद वह अनजान लोगों के पिंडदान करें। इसलिए उनकी मौत के बाद आज वह आकर अपने पिता की अभिलाषा को पूरी किया। वे 9 वर्षों से ज्ञात लोगों का सामूहिक रूप से पिंडदान और तर्पण करते आ रहे हैं। चंदन ने कहा कि पिंडदान करने से मन को शांति व सुख की अनुभूति मिली। चंदन ने मणिपुर में जातिय हिंसा में जान गबाए सैकड़ो लोगों, उड़ीसा में ट्रिपल ट्रेन हादसे में मारे गए 275 लोगों, लद्दाख में सेवा की गाड़ी खाई में गिरने के दौरान जवानों की मौत, जम्मू कश्मीर और लद्दाख में सैनिकों की मौत, भारी बारिश में सैनिकों की मौत,तुर्की एवं श्रेया भूकंप में 28000 की मौत, नाइजीरिया से सटे विंग के फील्ड डिपो में लगी आग से दो बच्चों की दर्दनाक मौत, रूस और यूक्रेन के युद्ध में अब तक मारे गए हजारों सैनिकों के आत्मिक शांति के लिए लिए तर्पण किया। वही रोहतास में सीआरपीएफ जवानों की मौत, कश्मीर के मेहसूमा में आतंकी हमले में शहीद जवानों,मुंगेर के सीआरपीएफ जवान की मौत,बक्सर में सीआरपीएफ जवान की मौत, कश्मीर में हुए आतंकी हमले मारे गए बिहारी मजदूर, दक्षिण कश्मीर के पुलवामा आतंकी हमले में सीआरपीएफ जवान की मौत आकाशीय बिजली गिरने से प्रदेश में लोगों की मौत, पाकिस्तान विनाशकारी बाढ़ में मारे गए लोग, कानपुर में सड़क दुर्घटना में मृत परिवार, लद्दाख के नदी में बस दुर्घटना में मौत, अमर सिंह के जवान की मौत सहित देश दुनिया में जाने अनजाने में मृत्यु, आतंकी हमले, दुर्घटना, अपराधिक गतिविधियों महामारी के दौरान हुई मौत एवं जाने- अनजाने में काल-कलवित लोगों के दिवंगत आत्मा की शांति के लिए भगवान विष्णु से प्रार्थना किया और पवित्र फल्गु नदी में तर्पण किया। वार्षिक पिंडदान का कार्यक्रम रामानुजाचार्य मठ के जगत गुरु स्वामी वेंकटेश प्रपन्नाचार्य के निर्देशन में संपन्न हुआ। पिंडदान के बाद चंदन कुमार सिंह ने बताया कि पिंडदान ही मोक्ष प्राप्ति का सरल और सहज मार्ग है गया में भगवान विष्णु पितृ देवता के रूप में निवास करते हैं यहां पिंडदान करने से ज्ञात अज्ञात लोगों को मुक्ति मिल जाती है ।हमारे पिता आज के दिन 2001 से प्रतिवर्ष सामूहिक पिंडदान करते आ रहे थे। इस परंपरा को ताज बनाए रखने के लिए प्रतिवर्ष सामूहिक पिंडदान कर रहा हूं।

सरकार व जिला प्रशासन के द्वरा बालू माफियाओं का संरक्षण के कारण गई पांच युवतियों की जान : माले

आरा। भाकपा - माले जिला सचिव जावाहर लाल सिंह ने कल चांदी के बहियारा में सोन नद में डूबने से हुई 5 लड़कियों की मौत पर गहरी संवेदना व्यक्त की है। उन्होंने कहा कि इस दुख की घड़ी में पूरी पार्टी पीड़ित परिवार के साथ खड़ी है। उन्होंने इस घटना के लिए पूरी तरह सरकार, जिला प्रशासन और बालू माफियाओं को जिम्मेदार ठहराते हुए कहा कि हमारी पार्टी के बार - बार मांग करने के बावजूद पोकलेन मशीन से बालू का खनन बंद नहीं हुआ,किसी भी बालू माफियाओं पर करवाई नही हुई। जब कि अबैध बालू खनन की वहज से भोजपुर में सैकडों बच्चों की जानें चली गई। आये दिन लोग सोन में डूब कर मर रहें हैं। उन्होंने कहा कि सरकार -प्रशासन - बालू माफियाओं के गठजोड़ के कारण आज सोन नद का अस्तित्व खत्म होने के कगार पर है। पर्यावरण की गंभीर समस्या पैदा हो गई है ।पोकलेन मशीन से खनन के कारण सोन नद आज मिट्टी में तब्दील हो गया है। वहीं पानी का लेयर लगतार नीचे जा रहा है।

जेपीयू में जयप्रकाश नारायण को अर्पित किया गया श्रद्धासुमन

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा सदर। रविवार को जयप्रकाश विश्विद्यालय ने अपने कुलदेवता लोकनायक जयप्रकाश नारायण की पूण्य तिथि पर श्रद्धा सुमन अर्पित किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय परिवार की तरफ से अपने कुलदेवता को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। विश्वविद्यालय परिसर स्थित प्रशासनिक भवन के सामने लोकनायक जयप्रकाश नारायण की आदमकद प्रतिमा पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर के सी सिंहा, कुलसचिव प्रोफेसर रनजीत कुमार ,सीसीडीसी प्रोफेसर हरिश्चंद्र, इंजीनियर प्रमोद कुमार सिंह ने माल्यार्पण किया ।पुष्पांजलि अर्पित करने वालों में डाक्टर पी एन सिंह,विवेक कुमार सिंह,मधुकर,राहुल कुमार यादव,नीरज कुमार सिंह, विकास कुमार ,राजकुमार,विवेक कुमार ,धर्मेंद्र कुमार ,विश्वविद्यालय कैम्पस के एसएसआई एस के गार्ड ,बलिराम ,अनिल ठाकुरआदि शामिल हुए ।इसके उपरांत सीनेट हॉल में लोकनायक जयप्रकाश नारायण के तैल चित्र पर सबने माल्यार्पण किया गया। प्रोफेसर के सी सिंहा ने कहा कि जयप्रकाश नारायण के सामाजिक राजनीतिक जीवन को दो भागों में विभाजित कर समझा जा सकता है,आजादी के पहले स्वतंत्रता संग्राम में एक क्रान्तिकारी के रूप में उनकी भूमिका बेमिसाल रही है ।महत्मा गांधी के आह्वान पर भारत छोडों आन्दोलन में इन्होने बढचढ कर भाग लिया,लाठियां खायीं हजारीबाग जेल में बर्फ की सिल्ली पर रखा गया,यातनाएं सहीं ।जेल से भागकर नेपाल के जंगल में शरण लिए और वहीं से आजादी की लड़ाई की मशाल जलाते रहे ।आजादी के बाद वे समाजवादी आंदोलन से जुड गये और बाद में गांधी और विनोवा भावे से प्रभावित होकर सर्वोदय और भूदान आन्दोलन से जुड़े । इसअवसर पर प्रोफेसर रणजीत कुमार ने सीनेट हॉल में लोकनायक जयप्रकाश नारायण के माल्यार्पण के उपरांत उपस्थित शिक्षकों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि जयप्रकाश नारायण भारत के ऐसे राजनीतिज्ञ एवं समाजसेवी थे जिन्होंने हमेशा राजनीति पर लोकनीति एवं राजसत्ता पर लोकसत्ता को तरजीह दिया ।वे आजीवन जनता एवं जनहित के मुद्दे पर संघर्ष करते रहे ।उन्हें कई बार सरकार के सबसे महत्वपूर्ण पदो को स्वीकार करने का प्रस्ताव दिया गया लेकिन उन्होंने सुचिन्तित तरीके से सत्ता से दूरी बनाए रखा इसीलिए महात्मा गांधी के बाद वे अकेले राजनीतिज्ञ थे जिन्होंने अवसर मिलने के किसी भी प्रकार के पदको स्वीकार नहीं किया।

स्टैंडिंग कमेटी के सदस्य ने फल्गु नदी की सफाई और घाटों पर लगाई झाड़ू, दिया स्वच्छता का संदेश

प्रात : किरण संवाददाता

गया। विश्व प्रसिद्ध पितृपक्ष मेला के दौरान अतिथि देव भव के तर्ज पर सेवा भाव का नजारा दिख रहा है। गया नगर निगम के मेयर डॉ. वीरेंद्र कुमार उर्फ गणेश पासवान, स्टैंडिंग कमेटी के सदस्य सह पूर्व डिप्टी मेयर अखौरी ओंकार नाथ उर्फ मोहन श्रीवास्तव व पार्षदों ने नाव पर बैठकर फल्गु नदी की सफाई और घाटों पर खुद से झाड़ू लगाकर स्वच्छता का संदेश दिया है। निगम के जनप्रतिनिधियों की ऐसे सेवा का भावना देख वहां पर मौजूद तीर्थयात्रियों भी हैरान हो गए।

इस सेवा भाव को देख उन्होंने उनका अभिवादन तालियां बजाकर किया है। उस दौरान मेयर और पूर्व डिप्टी मेयर व पार्षद हाथों में खुद झाड़ू लेकर घाटों की साफ सफाई व्यापक रूप से की। इसके अलावा उन्होंने स्वच्छता के सिपाही सफाईकर्मियों भी सम्मानित किया हूं। मेयर ने कहा कि पितृमुक्ति का महासंगम में हमसब एक होकर तीर्थयात्रियों की सेवा में है। निरन्तर हर व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया जा रहा है और कई जरूरी निर्देश दिए जा रहे है। सिर्फ इसी उद्देश्य से तीर्थयात्रियों को किसी प्रकार से कठिनाई न हो। निगम के स्टैंडिंग कमेटी सदस्य सहित निगम तमाम पार्षदों ने फल्गु नदी और घाटों की व्यापक रूप से साफ सफाई की गई है। इसलिए कि एक स्वच्छता का संदेश जाएं कि हम सब एक होकर उनकी सेवा में तत्पर और कृत संकल्पित हैं। स्टैंडिंग कमेटी के सदस्य मोहन श्रीवास्तव ने कहा कि तीर्थयात्रियों की सेवा में गया नगर निगम पूरी तरह गंभीर है। निगम द्वारा स्वच्छता, जलापूर्ति, प्रकाश व्यवस्था सहित तमाम सुविधाओं का निरन्तर जायजा लिया जा रहा है। इसी क्रम आज सभी निगम के जनप्रतिनिधियों ने घाटों और तर्पण के दौरान फल्गु में जो भी गंदगी दिख रही उसकी साफ सफाई की गई है।

इसके अलावा सीताकुंड स्थित घाटों की साफ सफाई व्यापक रूप से की गई है। सिर्फ इसी उद्देश्य स्वच्छता के संदेश के साथ हमारे सफाईकर्मियों का हौसला हमेशा बढ़ा रहे। साथ सभी सफाईकर्मियों को भी सम्मानित किया गया है ।इस मौके पर पार्षद विनोद यादव, मनोज कुमार, रणधीर कुमार गौतम, डिम्पल कुमार, दीपक चंद्रवंशी, ओम यादव, भगत सिंह, उदय श्रीवास्तव, सुनील बम्बईया, गोपाल कुमार, धर्मेंद्र कुमार, मो. मोजम्मिल हुसैन सहित अन्य मौजूद थे।

वार्षिकोत्सव सह राष्ट्रीय एकता सेवा सम्मान समारोह का भव्य आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय। छपरा शहर के सिटी गार्डन में आयोजित किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में डॉक्टर अब्दुल कलाम आजाद प्राविधिक विश्वविद्यालय उत्तर प्रदेश के पूर्वकुलपति एवं आईआईटी बीएचयू के केमिकल इंजीनियरिंग विभाग के वरिष्ठ प्रोफेसर प्रदीप कुमार मिश्र जी,विशिष्ट अतिथि दरभंगा इंजीनियरिंग कॉलेज के प्राचार्य प्रोफेसर संदीप तिवारी,डॉक्टर निखिल रंजन चौधरी,शिक्षाविद् श्री अरुण सिंह,अखिलेश्वर पाठक,राकेश मिश्रा,अखिल भारतीय रोटी बैंक के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रौशन पटेल ,महिला उपाध्यक्ष पूनम अग्रवाल, राष्ट्रीय सह सचिव सुलभ बुधिया ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरूआत की। रोटी बैंक छपरा के कार्यक्रम के दौरान कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय की मूक बधीर बच्चियों, कला पंक्ति के नन्हे कलाकारों एवं डांस ड्रैगन के कलाकारों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लिया और अपनी कला से अतिथियों का मन मोह लिया।

मुख्य अतिथि प्रोफेसर प्रदीप कुमार मिश्र जी ने रोटी बैंक छपरा के विगत पांच वर्षो के दौरान किए गए सेवा पर प्रकाश डालते हुए बताया कि यहां के सेवादारों की सेवा अद्वितीय,अलौकिक एवं अविस्मरणीय है ।सेवादारों का जुनून एवं इनकी सेवा भावना काबिले तारीफ है और मुझे खुशी एवं गर्व है कि मैं इस परिवार का हिस्सा हूं और मुख्य संरक्षक भी। आगे डॉक्टर संदीप तिवारी जी ने बताया कि जीवन में रोटी, कपड़ा,मकान और शिक्षा का महत्व सर्वोपरी है ।जीवन में सकारात्मक विचार और सेवा भावना के साथ समाज उत्थान में अपना योगदान देने हेतु सदैव तत्पर रहना चाहिए रोटी बैंक छपरा यहां के जुनूनी सेवादारों के जज्बा और समर्पण से बहुत अच्छा कार्य कर रही है ।डॉक्टर निखिल रंजन चौधरी ने बताया कि जीवन में रोटी का महत्व बहुत अहम है और किसी जरूरतमंद को यह मिलता है उस समय उसके चेहरे पर जो मुस्कान होती है वो सबसे ज्यादा सुकून देती है। अतिथियों का स्वागत संबोधन में रोटी बैंक छपरा के संस्थापकाध्यक्ष रविशंकर उपाध्याय ने पूरे विस्तार से बताया कि विगत पांच वर्षो में कुछ खट्टी मीठी यादों के साथ सेवा में कुछ उतार चढ़ाव के साथ हमने इस सेवा के निर्बाध रूप में पूरे पांच वर्ष पूरे किए इसके लिए पूरे सारण वासियों एवं हमारे किसी न किसी रूप में जुड़े सहयोगियों को उनके अद्वितीय एवं सराहनीय योगदान के लिए हार्दिक बधाई एवं उनका बहुत बहुत आभार। उनके द्वारा बताया गया की आज भले हीं हमारे बीच स्मृतिशेष किशोर कांत तिवारी जी नहीं है लेकिन उनकी सोंच उनके विचार आज भी हमारे बीच उनकी उपस्थिति महसूस कराता है। उनके सोंच "कोई भूखा ना सोए" को लेकर पूरे भारत में जगह जगह रोटी बैंक खुल रहा है और जरूरतमंदों की सेवा की जा रही है। रोटी बैंक छपरा की सेवा विगत पांच सालो से चाहे किसी भी विकट परिस्थिति में मूसलाधार बारिश हो, उमस भरी गर्मी हो, हाड़कंपाती सर्दी हो, बाढ़ की हाहाकारी हो या कोरोना जैसी महामारी हो सेवादार अपने पूरी निष्ठा तन्मयता और समर्पण के साथ सेवा में तत्पर रहते हैं और प्रतिदिन रात्रि में निःशुल्क भोजन वितरण करते हैं। कार्यक्रम में सारण के गणमान्य एवं प्रबुद्धजनों के बीच भारत के कई राज्यों से आए एवं बिहार के विभिन्न संगठन एवं समाज में सदैव अपना श्रेष्ठ योगदान देने वाले सामाजिक कार्यकर्ता,रोटी बैंक छपरा को सहयोग करने वाले प्रतिदिन,साप्ताहिक एवं मासिक अन्नदाता ने हिस्सा लिया जिसमें सभी अपने अपने क्षेत्र के विभूति है ।कोई भोजन दान,अन्नदान कोई रक्तदान ,कोई शिक्षा दान, कोई स्वक्षता जैसे क्षेत्र में सराहनीय कार्य कर रहे हैं।

नॉनस्टॉप सेवा के बेमिसाल पांच साल पूरा होने पर रोटी बैंक छपरा ने इन सभी विभूतियों को राष्ट्रीय एकता सेवा सम्मान से सम्मानित किया गया जिसमें रोटी बैंक वाराणसी,रोटी बैंक प्रयागराज (उत्तरप्रदेश),रोटी बैंक रायपुर,रोटी बैंक कोरबा (छत्तीसगढ़), खाना बैंक ट्रस्ट,मिलन एडवेंचर ग्रुप,लायंस क्लब छपरा टाउन,लायंस क्लब छपरा सारण, रोटरी सारण, रोटरी क्लब छपरा, लियो क्लब छपरा टाउन,लियो क्लब छपरा सारण प्रमुख रूप से रहे।

वैश्य समाज पर हो रहे आत्यचार पर संज्ञान ले जिला प्रशासन : अर्जुन गुप्ता

प्रात : किरण संवाददाता

दिनारा। अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन के प्रदेश कार्यालय प्रभारी सह मीडिया प्रभारी अर्जुन गुप्ता ने दिनार प्रखंड के अर्थु गांव में वैश्य समाज के लोगो के साथ दिनारा थाना प्रभारी द्वारा किया गया तानाशाही रवैया पर अर्थु गांव जाकर पीड़ित परिवार से मिल इस घटना की विस्तृत जानकारी ली तथा जिला पदाधिकारी रोहतास और पुलिस अधीक्षक रोहतास से दूरभाष पर बात कर स्थानीय पुलिस द्वारा महिलाओ के साथ की गई।

दुर्व्यवहार की शिकायत की साथ ही दोषी पदाधिकारियों पर उचित करवाई करने की भी मांग की जिला पदाधिकारी रोहतास और पुलिस अधीक्षक रोहतास ने इस घटना की जॉच करवाने की बात कही श्री गुप्ता ने कहा की जिस तरह का आत्यचार स्थानीय पुलिस प्रशासन द्वारा किया गया है इसकी जितनी भी निंदा की जाए कम है श्री गुप्ता ने कहा की गणेश प्रसाद साह के परिजनों और स्थानीय लोगो के कथानानुसार 29 सितंबर की रात लगभग 11 बजे स्थानीय पुलिस द्वारा गणेश साह के दो मंजिला मकान पर फोल्डिंग सीधी लगा छत पर चढ़ महिलाओ के साथ मारपीट गाली गलौज और दुर्व्यावहार कर थाना लाया गया तथा उनके ऊपर झूठा मुकदमा दर्ज कर जेल भेज दिया गया यहां तक की उनकी एक बाइक को भी पुलिस ने घर से उठा लिया आज के समय में उनका पूरा परिवार पुलिसिया आतंक से सहमा हुआ है। श्री गुप्ता ने प्रेस के माध्यम से जिला प्रशासन से आग्रह किया की अविलंब स्थानीय थाना प्रभारी को सस्पेंड कर इसकी जॉच करा दोषी पदाधिकारी पर करवाई की जाए साथ ही गणेश साह के परिवार के ऊपर दर्ज झूठे मुकदमे वापस ली जाए मौके पर दिनारा वैश्य महासम्मेलन दिनारा विधानसभा सह प्रभारी चंद्रभूषण सहित कई वैश्य नेता मौजूद थे।

सम्पादकीय

जाति गणना पर सीडब्लुसी की बैठक!

कांग्रेस पार्टी बिहार में हुई जाति गणन को गंभीरता से ले रही है और किस तरह से इसका राजनीतिक इस्तेमाल हो सकता है इस पर पार्टी विस्तार से विचार करेगी। बताया जा रहा है कि कांग्रेस की कार्य समिति यानी सीडब्लुसी की बैठक इस मुद्दे पर हो सकती है। हालांकि बैठक कब होगी और उसका एजेंडा क्या होगा यह पता नहीं है। ध्यान रहे अभी पांच राज्यों में विधानससभा के चुनाव होने वाले हैं। चुनाव आयोग किसी भी समय इसकी घोषणा कर सकता है। ऐसे में कांग्रेस के सारे नेता प्रचार में लगेंगे या चुनावी कामकाज में व्यस्त हो जाएंगे। सो, उससे पहले ही इस मसले पर बैठक करनी होगी या फिर चुनाव के बाद बैठक होगी।कांग्रेस के जानकार नेताओं का कहना है कि पार्टी पांच राज्यों के चुनाव में इसका मुद्दा बनाने वाली है। राहुल गांधी अपनी सभाओं में खुल कर जाति गणना का समर्थन कर रहे हैं और वादा कर रहे हैं कि कांग्रेस की सरकार केंद्र में बनी तो पूरे देश में जाति गणना कराएगी। दूसरी ओर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी इस मसले पर कांग्रेस को कठघरे में खड़ा किया है और कहा है कि कांग्रेस पहले भी जात-पात पर देश को बांटती थी और अब भी वही पाप कर रही है। इसका मतलब है कि भाजपा की नजर में जाति गणना पाप है। सो, कांग्रेस चुनावों में इसे मुद्दा बना सकती है।पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस का एजेंडा भाजपा को ओबीसी, एससी और एसटी विरोधी साबित करना है। इसके लिए उसके पास दो हथियार हैं। पहला, जाति गणना। बिहार ने इसका रास्ता दिखा दिया है। जिस तरह से छत्तीसगढ़ में भूपेश बघेल सरकार ने आरक्षण की सीमा बढ़ा कर 77 फीसदी करने का फैसला किया है उसी तरह का ऐलान मध्य प्रदेश में किया जा सकता है। ध्यान रहे मध्य प्रदेश का समाज बहुत गहराई तक धार्मिक समाज है। वहां हिंदुत्व की जड़ें बहुत मजबूत हैं। कांग्रेस के नेता जातियों की गिनती का कार्ड चल कर कांग्रेस उसमें सेंध लगाने की कोशिश कर रही है।कांग्रेस के पास दूसरा मुद्दा महिला आरक्षण का है, जिसमें ओबीसी महिलाओं के लिए आरक्षण की व्यवस्था नहीं की गई है। इस आधार पर भी भाजपा को पिछड़ा विरोधी बताने का अभियान चल रहा है। बताया जा रहा है कि कांग्रेस नेता मान रहे हैं कि कार्य समिति की बैठक करके इन दोनों मामलों में कोई प्रस्ताव पास किया जाए और चुनाव में उसका प्रचार किया जाए तो कांग्रेस को उसका फायदा होगा। हालांकि यह पता नहीं है कि मध्य प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष और सीएम पद के दावेदार कमलनाथ इसके लिए कितना तैयार होंगे। वे जाति का कार्ड खेलने की बजाय नरम हिंदुत्व के रास्ते पर चल रहे हैं और भाजपा नेताओं से ज्यादा बागेश्वर धाम के धीरेंद्र शास्त्री के चरणों में लोट लगा रहे हैं। राजस्थान और छत्तीसगढ़ दोनों जगह कांग्रेस का पिछड़ा मुख्यमंत्री है। सो, इन राज्यों में कांग्रेस अपना एजेंडा चला सकती है।

रणछोड़ हैं या रण छेड़ रहीं हैं तीन देवियां?

राकेश अचल

नारीशक्ति वंदना के युग में मध्यप्रदेश भाजपा की महिला नेत्रियां विधानसभा चुनाव के रण से बाहर हो रहीं हैं या अपनी ही पार्टी के खिलाफ रण शुरू करने जा रहीं हैं? फिलहाल भाजपा की तीन नेत्रियां अलग-अलग कारणों से जेरे बहस हैं ये एक ऐसा सवाल है जो पूर्व मुख्यमंत्री सुश्री उमा भारती और मप्र सरकार की मंत्री श्रीमती यशोधरा राजे सिंधिया के विधानसभा चुनाव न लड़ने की घोषणा के बाद जन्मा है। मप्र भाजपा में एक तीसरी बड़ी नेत्री पूर्व लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन भी चुनावी रण से बाहर कर दी गयीं हैं।

सिंधिया घराने की महिला सदस्य श्रीमती यशोधरा राजे सिंधिया आरम्भ से ही अपनी माँ राजमाता विजयाराजे सिंधिया की राजनीतिक विरासत पर दावा करती आयीं हैं, लेकिन उन्हें भाजपा ने कभी राजमाता की लोकसभा सीट से लोकसभा में नहीं भेजा। उन्हें ग्वालियर सीट से जरूर लोकसभा का उप चुनाव लड़ाया गया था लेकिन बाद में उन्हें विधानसभा के चुनावों तक सीमित कर दिया गया। 1994 में प्रदेश की राजनीति में आयीं यशोधरा राजे सिंधिया अपनी बड़ी बहन श्रीमती बसुंधरा राजे की तरह भाग्यशाली नहीं है। उन्हें बीते तीन दशक में मध्यप्रदेश की सरकार में मंत्री बनने का सुख तो मिला लेकिन मुख्यमंत्री बनने का ख्वाब यदि इन्होने देखा भी हो तो कभी पूरा नहीं हुआ।

यशोधरा राजे तीन दशक की अपनी राजनितिक यात्रा में पहले अपने भतीजे केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया के लिए समस्या रहीं। प्रदेश की सरकार ने भी उन्हें बेमन से झेला और जब ज्योतिरादित्य सिंधिया खुद भाजपा में आ गए तो उनकी पूछ-परख और कम हो गयी। यशोधरा अपनी राजनीतिक विरासत अपने बेटे अक्षय को भी नहीं सौंप पाने से निराश है। यशोधरा राजे की तीन संताने बताई जातीं है लेकिन लोगों को केवल अक्षय के बारे में ही जानकारी है क्योंकि शुरू में वे शिवपुरी आते-जाते थे। यशोधरा राजे के दूसरे बेटे अभिषेक और बेटी त्रिशला को कभी किसी ने देखा नहीं। वे दोनों शायद अमेरिका में ही रहते हैं और उनकी राजनीति में कोई दिलचस्पी भी नहीं है।

यशोधरा राजे सिंधिया ने स्वास्थ्य संबंधी कारणों से इस बार विधानसभा चुनाव न लड़ने का ऐलान किया लेकिन राजनीति से औपचारिक सन्यास की घोषणा नहीं की। इसका मतलब वे या तो लोकसभा चुनाव में प्रत्याशी बनाने के लिए आश्वस्त कर दी गयीं हैं या फिर उन्होंने पार्टी नेतृत्व का मूड भांप कर अपने आपको विधानसभा चुनाव से लग कर लिया है। पार्टी का भी धर्म संकट ये हैं कि वो एक ही परिवार से एक से ज्यादा लोगों को तवज्जो देता है तो उसके ऊपर परिवारवाद का आरोप लगता है। वैसे भी यशोधरा राजे सिंधिया पार्टी की न स्टार नेता हैं और न स्टार प्रचारक। वे एक विधानसभा सीट की नेता रहीं हैं। वे पार्टी के साथ रण छेड़ने की स्थिति में नहीं हैं, क्योंकि उनके आगे-पीछे कोई जनाधार भी नहीं है।

भाजपा में यशोधरा राजे सिंधिया से पहले पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती भी पार्टी नेतृत्व के फैसलों को लेकर नाराज हैं। उनकी आवाज लगातार अनसुनी की जा रही है और अब तो प्रह्लाद पटेल को विधानसभा चुनाव मैदान में उतार कर पार्टी नेतृत्व ने उन्हें एक तरह से खारिज ही कर दिया ह। उमा जी अब शायद लोधियों की भी नेता नहीं मानी जा रहीं। उमा भारती ने अपनी राजनितिक विरासत अपने भतीजे को सौंपने की कोशिश की। उसे विधायक भी बनाया लेकिन बात ज्यादा आगे बढ़ी नहीं क्योंकि उन्हें पार्टी नेतृत्व का समर्थन नहीं मिल पाया। आज उमा भारती घायल सिंघनी की भांति दहाड़ रहीं हैं लेकिन अब उनके पास इतनी ऊर्जा नहीं बची है की वे भाजपा के मौजूदा नेतृत्व को ललकार कर एक बार फिर से भाजपा से बगावत कर सकें। हालाँकि भाजपा ने उनके समर्थक प्रीतम लोधी को पिछोर विधानसभा सीट से टिकिट जरूर दे दिया है।

एक जमाने में ग्वालियर के रानी महल की कृपा और संरक्षण से राजनीति में आंधी की तरह आयीं उमा भारती का अब रानी महल में भी कोई संरक्षक नहीं है। उनके मित्र संघ के पूर्व प्रचारक गोविंदाचार्य भी आरसे पहले संघ और पार्टी से खारिज किये जा चुके हैं। ऐसे में उमा भारती अपने आपको भाजपा में असहज महसूस कर रहीं हैं। लेकिन उनके लिए पार्टी में न अब कोई घर है और न घाट। अर्थात उनकी दशा बंजारों जैसी हो गयी है। अपने आचरण से वे मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान का विश्वास भी खो चुकीं हैं अन्यथा इस संकट के दौर में दोनों मिलकर कुछ खिचड़ी पका सकते थे। शिवराज सिंह चौहान भी पार्टी नेतृत्व की आँख की किरकिरी बनते नजर आ रहे हैं। पार्टी उनके चेहरे पर विधानसभा का चुनाव नहीं लड़ रही है। उनके विधानसभा चुनाव लड़ने और न लड़ने कोलेकर अभी तक संशय है।

उमा भारती पांच बार संसद रहीं, चार बार केंद्र में मंत्री रहीं, उन्होंने ही 2003 के विधानसभा चुनाव में भाजपा को सत्ता में स्थापित कर दिखाया था और खुद मुख्यमंत्री बनी। पार्टी ने उन्हें उत्तर प्रदेश से भी लोकसभा और विधानसभा चुनाव लड़ने को कहा, वो जितिन भी लेकिन अब एक लम्बे आरसे से वे हासिये पर हैं। 2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने उमा भारती को गंगा सफाई के लिए मंत्री बनाया और न जाने कब उन्हें इसी गंगा में तिरोहित भी कर दिया। उमा भारती के साथी रहे नरेंद्र सिंह तोमर आज भी चुनावी राजनीति में ठीके हुए हैं लेकिन उमा भारती का तम्बू उखड़ चुका है।भाजपा में तीसरी शक्तिशाली नेता लोकसभा की पूर्व अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन उम्र के लिहाज से अब मार्गदर्शक मंडल में शामिल कर दी गयीं हैं लेकिन वे अभी भी अपने आपको चुनावी राजनीति के लायक मानती है। पार्षद से लोकसभा अध्यक्ष जैसे बड़े पद तक पहुंची सुमित्रा महाजन की भी आत्मा अतृप्त है क्योंकि अपनी लम्बी राजनीतिक पारी खेलने के बावजूद वे अपने बेटे मिलिंद को अपना राजनितिक उत्तराधिकार नहीं सौंप सकीं। यानि इस मामले में उनकी दशा भी उमा भारती और यशोधरा राजे जैसी ही है। सुमित्रा ताई के पुत्र मिलिंद महाराष्ट्रा ब्राम्हण सहकारी बैंक में गोलमाल के आरोपी हैं। अब भाजपा में उनके लिए कोई जगह नहीं बची है।नारी शक्ति वंदन कानून बनने के बाद मप्र भाजपा की जिन भाजपा नेत्रियों को सम्मान मिलना चाहिए था वे तीनों अपमानित होकर राजनीति से विदा लेती दिखाई दे रहीं हैं या उन्हें राजनीति से जबरन विदा किया जा रहा है।

कट्टरपंथियों की असहिष्णुता का शिकार अहमदिया मुसलमान

उत्सुकतावश अहमदिया समुदाय के स्टाल पर कुछ समय के लिये रुकना हुआ।यहाँ मेरी मुलाकात जिन लोगों से हुई उनमें जैन चौधरी नामक एक उत्साही व होनहार युवा भी थे जोकि अहमदिया समुदाय की पंजाब शाखा से सम्बद्ध थे। उनसे हुई संक्षिप्त बातचीत में यही लगा कि यह एक शिक्षित समुदाय है जोकि प्रमुखता से विश्व शांति व सद्भाव की बातें करता है। इस समुदाय के लोगों की दिलचस्पी किसी दूसरे धर्म, समुदाय अथवा वर्ग के लोगों में कमियां निकलने, उनकी निंदा करने या उन्हें गलत साबित करने में नहीं बल्कि वैश्विक शांति व सद्भाव में ही है। मैंने अपने जीवन में कभी भी अहमदिया समुदाय के किसी भी समागम में हिस्सा नहीं लिया न ही इनके द्वारा आयोजित किसी कार्यक्रम में कभी शिरकत करने का कोई मौका मिला। परन्तु कुछ दिनों पूर्व 27 मई को चंडीगढ़ में जब अहमदिया समुदाय की पंजाब शाखा ने एक सर्व धर्म समागम का आयोजन किया गया और शिरकत के लिये मुझे भी आमंत्रित किया गया तब पहली बार इस समुदाय के किसी कार्यक्रम को व्यक्तिगत रूप से देखने सुनने का अवसर मिला। अहमदिया समुदाय द्वारा आयोजित इस सर्वधर्म समागम में अहमदिया समुदाय के अतिरिक्त हिन्दू समुदाय की ओर से इस्कॉन मंदिर रोहिणी के प्रमुख, ईसाई समुदाय के पादरी सिख समुदाय के धर्मगुरु व एस जी पी सी के सदस्य, कई गुरुद्वारे के प्रमुख, ब्रह्माकुमारी मिशन व बुद्धिस्ट समुदाय के अतिरिक्त कई शिक्षाविद भी उपस्थित थे।

तनवीर जाफरी
स्वतंत्र लेखक

हिमाचल प्रदेश की राजधानी शिमला में जून 2022 में लगे एक पुस्तक मेले में जाने का अवसर मिला। यहाँ अन्य तमाम बुक स्टाल के साथ ही एक बुक स्टाल अहमदिया समुदाय के मुसलमानों द्वारा भी लगाया गया था। जबकि इस्लाम धर्म के अन्य किसी वर्ग यहाँ तक कि किसी दूसरे धर्म के लोगों का भी कोई बुक स्टाल यहां नजर नहीं आया। उत्सुकतावश अहमदिया समुदाय के स्टाल पर कुछ समय के लिये रुकना हुआ।यहाँ मेरी मुलाकात जिन लोगों से हुई उनमें जैन चौधरी नामक एक उत्साही व होनहार युवा भी थे जोकि अहमदिया समुदाय की पंजाब शाखा से सम्बद्ध थे। उनसे हुई संक्षिप्त बातचीत में यही लगा कि यह एक शिक्षित समुदाय है जोकि प्रमुखता से विश्व शांति व सद्भाव की बातें करता है। इस समुदाय के लोगों की दिलचस्पी किसी दूसरे धर्म, समुदाय अथवा वर्ग के लोगों में कमियां निकलने, उनकी निंदा करने या उन्हें गलत साबित करने में नहीं बल्कि वैश्विक शांति व सद्भाव में ही है। मैंने अपने जीवन में कभी भी अहमदिया समुदाय के किसी भी समागम में हिस्सा नहीं लिया न ही इनके द्वारा आयोजित किसी कार्यक्रम में कभी शिरकत करने का कोई मौका मिला। परन्तु कुछ दिनों पूर्व 27 मई को चंडीगढ़ में जब अहमदिया समुदाय की पंजाब शाखा ने एक सर्व धर्म समागम का आयोजन किया गया और शिरकत के लिये मुझे भी आमंत्रित किया गया तब पहली बार इस समुदाय के किसी कार्यक्रम को व्यक्तिगत रूप से देखने सुनने का अवसर मिला।

अहमदिया समुदाय द्वारा आयोजित इस सर्वधर्म समागम में अहमदिया समुदाय के अतिरिक्त हिन्दू समुदाय की ओर से इस्कॉन मंदिर रोहिणी के प्रमुख, ईसाई समुदाय के पादरी सिख समुदाय के धर्मगुरु व एस जी पी सी के सदस्य, कई गुरुद्वारे के प्रमुख, ब्रह्माकुमारी मिशन व बुद्धिस्ट समुदाय के अतिरिक्त कई शिक्षाविद भी उपस्थित थे। कार्यक्रम की शुरूआत भारतीय राष्ट्रगान जन गण मन से हुई। इस पूरे कार्यक्रम के दो ही मुख्य सार थे। एक तो यह कि लगभग सभी धर्म व समुदाय के वक्ताओं ने अहमदिया समुदाय को एक मजलूम (अत्याचार सहने वाले) समुदाय के रूप में चिन्हित किया। और दूसरा यह कि अहमदिया समुदाय के किसी भी वक्ता द्वारा मुस्लिम समुदाय के किसी भी वर्ग के विषय में कोई भी नकारत्मक बात नहीं की गयी न ही उनकी चर्चा की गयी। केवल विश्व शांति सद्भाव के सन्देश दिए गए। इस विषय पर जब मैंने आयोजक गण से जानना चाहा कि उन्होंने अन्य कई समुदाय के धर्मगुरुओं को तो आमंत्रित किया परन्तु मुस्लिम समुदाय के किसी भी वर्ग के धर्मगुरु को आमंत्रित क्यों नहीं किया? इसपर जवाब मिला कि ऐसा इसीलिये है कि उनका विरोध ही केवल मुस्लिम समुदाय के लगभग सभी वर्गों द्वारा किया जाता है। यहाँ तक कि मुसलमानों के जो दो वर्ग आपस में भी लड़ते हैं वे भी अहमदिया विरोध के नाम पर एकजुट हो जाते हैं।

मैंने भी अन्य लोगों की ही तरह जब भी अहमदिया मुसलमानों के बारे में कभी सुना या पढ़ा तो यही कि पाकिस्तान में इनकी मस्जिदें तोड़ी गयीं या उनमें आग लगाई गयी। या इनके कब्रिस्तानों में कब्रों को तोड़ा गया। या किसी अहमदिया मुसलमान की बेरहमी से हत्या की गयी। इत्तेफाक से यह उसी पाकिस्तान देश में सबसे ज्यादा होता है जहाँ धर्म के नाम का ढोल सबसे अधिक पीटा जाता है। जिस देश की बुनियाद ही धर्म के नाम पर पड़ी, दुर्भाग्यवश वही देश सबसे अधिक अधर्म का भी शिकार है। इस देश में एक बड़ा कट्टरपंथी वर्ग यह तय करता है कि कौन मुसलमान है तो कौन गैर मुस्लिम। कौन जन्नत में जायेगा तो कौन जहन्नुम में। किसे स्वयं को मुसलमान कहने का अधिकार है और किसे नहीं। और इसी कट्टरपंथी व रूढ़िवादी वर्ग के लोग अहमदिया मुसलमानों की जान व माल के दुश्मन बने हुए हैं। चाहे इनके तन पर कपड़े व पेट में रोटी हो न हो पर शिया, अहमदिया, सिख, हिन्दू, ईसाई या अल्पसंख्यक वर्ग के किसी व्यक्ति या समुदाय के विरुद्ध फतवा जारी कर देना इनकी प्राथमिकताओं में शामिल है।

पाकिस्तान को गर्त में ले जाने वाले इन कट्टरपंथियों की हद दर्जे की संकीर्णता व असहिष्णुता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इन्होंने पाकिस्तान के पहले नोबेल पुरस्कार विजेता अब्दुस सलाम जिन्हें 1979 में भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार हासिल हुआ था उनका नाम ही स्कूलों की पाठ्य पुस्तिकाओं से केवल इसलिये हटा दिया था क्योंकि वह अहमदिया समुदाय से सम्बन्ध रखते थे। यहाँ तक कि अब्दुल सलाम की कब्र पर लगे पत्थर से उनके नाम के साथ लगा ह्यमुस्लिमह्ल शब्द भी मिटा दिया गया था। गौर तलब है कि अहमदिया समुदाय को पाकिस्तान में मुसलमान नहीं माना जाता है। अब पाकिस्तान की शान बढ़ाने के लिये अब्दुल सलाम की कब्र पर यह जरूर लिखा गया है- ह्लपहला नोबेल पुरस्कार विजेताह्ल। हाँ नवाज शरीफ ने अपने कार्यकाल में इस्लामाबाद की कायद-ए-आजम यूनिवर्सिटी के नेशनल सेंटर फॉर फिज़िक्स का नाम बदल कर सलाम के नाम पर रखने को मंजूरी जरूर दे दी थी। हालांकि यह भी कट्टरपंथियों को बहुत नागवार गुजरा था।

भारतीय राज्य पंजाब के लुधियाना के कस्बा कादियान में 1889 में स्थापित हुये अहमदिया समुदाय के संस्थापक मिर्जा गुलाम अहमद थे। मिर्जा गुलाम अहमद स्वयं को पैगंबर मोहम्मद का अनुयायी तो बताते थे परन्तु उन्हें इस्लामी मान्यताओं के अनुसार आखिरी पैगंबर नहीं मानते थे। बल्कि वे स्वयं को अल्लाह की ओर से भेजा गया मसीहा मानते थे। उनकी विचारधारा इस विश्वास पर आधारित थी कि मुस्लिम धर्म और समाज को पतन से बचाने के लिए पवित्र रूप से सुधारों की जरूरत है। अहमदिया मुस्लिम समुदाय की मान्यताओं के मुताबिक मिर्जा गुलाम अहमद को ईश्वर ने धार्मिक युद्धों को खत्म करने, खून खराबे की निंदा करने और नैतिकता-न्याय के साथ शांति बहाल करने के लिए पृथ्वी पर भेजा था। अहमदिया मुसलमानों द्वारा हजरत मुहम्मद को आखरी पैगंबर नहीं मानना और मिर्जा गुलाम अहमद को अल्लाह की ओर से भेजा गया मसीहा मानना, साथ ही स्वयं को अहमदिया मुसलमान भी लिखना मुस्लिम धर्म के कुछ वर्गों को नहीं भाता। यहाँ तक कि वे इन्हें देखना इनसे वास्ता रखना तक नहीं पसंद करते। ऐसे में और भी कई सवाल खड़े होते हैं। क्या इस्लाम धर्म से सम्बंधित सभी वर्गों की मान्यताएं एक जैसी हैं? विभिन्न इस्लाम सम्बंधित समुदायों में नमाज पढ़ने व वजू करने के तरीके अलग हैं। अजानें भिन्न हैं। रोजा इफ़्तार का वक़्त व सहरी का समय भिन्न है। कुरआन शरीफ के अनुवाद में अंतर है। कोई वर्ग हजरत मुहम्मद की रिसालत के दौर के बाद चार खलीफाओं के दौर -ए -खिलाफत को मानता है तो कोई इसे मानने के बजाये बारह इमामों के इमामत के दौर पर यकीन रखता है। इसी तरह खोजा-बोहरा समुदाय के लोगों की मान्यतायें अलग हैं। इसका मतलब यह तो नहीं कि जिनसे आपकी मान्यताएं या विश्वास मेल न खायें उनकी मस्जिदें तोड़ दी जायें, उनकी दरगाहों व इमाम बारगाहों को ध्वस्त कर दिया जाये। उनके जुलूसों पर हमले किये जाएँ, आत्मघाती हमलावरों की फौज बना दी जाये और मस्जिदों में नमाजियों को शहीद किया जाये? इन कट्टरपंथियों को याद रखना चाहिए कि करबला में हजरात मुहम्मद के परिजनों को बेरहमी से भूखा प्यासा शहीद करने वाले भी ऐसी ही कट्टरपंथी विचारधारा के लोग थे जिनमें तमाम मुफ़्ती, हाफिज, कारी और मुअज्जिन (अजान देने वाले) भी शामिल थे। करबला का यह कलंक इस्लाम के माथे से कभी मिटने वाला नहीं है। अल्लामा इकबाल ने यूँ ही नहीं कहा था कि - क्या तमाशा हुआ इस्लाम की तकदीर के साथ= कत्ल शब्बीर हुए नारा- ए-तकबीर के साथ? दुर्भाग्यवश आज तक खून बहाने का यह सिलसिला जारी है और पाकिस्तान में अल्पसंख्यक हिन्दू, ईसाई, सिख बरेलवी व शिया समुदायों की ही तरह अहमदिया मुसलमान भी कट्टरपंथियों की असहिष्णुता का शिकार बना हुआ है।

कमरतोड़ महंगाई और बेरोजगारी से पाकिस्तान की अवाम बेहाल, बने गृहयुद्ध जैसे हालात

आटे का भाव 150 रुपए तक पहुंच गया है। बिजली के बिल ने आम अवाम की कमरतोड़ कर रख दी है। डॉलर की कीमत 300 रुपए पाकिस्तान रुपए से ऊपर पहुंच गई है। पाकिस्तान में महंगाई 28 फीसदी से ज्यादा पहुंच चुकी है। लोगों का जीना मुश्किल हो गया है। रोजमर्रा की जरुरतों को पूरा करने के लिए पाकिस्तान दूसरे देशों से भीख मांग रहा है। कंगाल पाकिस्तान की आवाम सड़क पर है। डॉलर की कालाबाजारी हो रही है। आम घरेलू उपभोक्ता को प्रति यूनिट 100 रुपए से भी ऊपर बिजली का बिल चुकाना पड़ रहा है। बिजली का बिल नहीं चुकाए जाने की स्थिति में लोग आत्महत्या कर रहे है। बिजली बिल में यह बढ़ोतरी आईएमएफ की कर्जे के बदले कठोर शर्तों के कारण हुई है, जिसे पाक सरकार मानने को मजबूर है। दरअसल आईएमएफ ने कर्ज के साथ यह उसकी अदायगी के लिए यह शर्त रखी थी। जिसमें अब समूचा पाकिस्तान बुरी तरह तिलमिला रहा है। पाकिस्तान की एयरलाइंस के दिवालिया होने की वजह से इंटरनेशनल बेइज्जती हो रही है। कुछ दिन पहले सउदी अरब और यूएई में ईंधन के पैसे नहीं चुकाने की वजह से विमानों को रोक लिया गया था। इसके बाद एयरलाइंस अधिकारियों के लिखित आश्वासन के बाद ही विमानों को उड़ान भरने की उम्मीद मिली है।

योगेंद्र योगी
लेखक राजस्थान सरकार से मान्यता प्राप्त स्वतंत्र पत्रकार है

जी20 के सफलतापूर्वक हुए आयोजन से भारत की अंतरराष्ट्रीय छवि में इजाफा हुआ है, वहीं पड़ौसी मुल्क पाकिस्तान में हाहाकार मचा हुआ है। पाकिस्तान लगातार रसातल की तरफ जा रहा है। पाकिस्तान की हालत नारकीय हो गई है। पाकिस्तान में पेट्रोल 320 रुपए से ऊपर है। आटे का भाव 150 रुपए तक पहुंच गया है। बिजली के बिल ने आम अवाम की कमरतोड़ कर रख दी है। डॉलर की कीमत 300 रुपए पाकिस्तान रुपए से ऊपर पहुंच गई है। पाकिस्तान में महंगाई 28 फीसदी से ज्यादा पहुंच चुकी है। लोगों का जीना मुश्किल हो गया है। रोजमर्रा की जरुरतों को पूरा करने के लिए पाकिस्तान दूसरे देशों से भीख मांग रहा है। कंगाल पाकिस्तान की आवाम सड़क पर है।

डॉलर की कालाबाजारी हो रही है। आम घरेलू उपभोक्ता को प्रति यूनिट 100 रुपए से भी ऊपर बिजली का बिल चुकाना पड़ रहा है। बिजली का बिल नहीं चुकाए जाने की स्थिति में लोग आत्महत्या कर रहे है। बिजली बिल में यह बढ़ोतरी आईएमएफ की कर्जे के बदले कठोर शर्तों के कारण हुई है, जिसे पाक सरकार मानने को मजबूर है। दरअसल आईएमएफ ने कर्ज के साथ यह उसकी अदायगी के लिए यह शर्त रखी थी। जिसमें अब समूचा पाकिस्तान बुरी तरह तिलमिला रहा है। पाकिस्तान की एयरलाइंस के दिवालिया होने की वजह से इंटरनेशनल बेइज्जती हो रही है। कुछ दिन पहले सउदी अरब और यूएई में ईंधन के पैसे नहीं चुकाने की वजह से विमानों को रोक लिया गया था। इसके बाद एयरलाइंस अधिकारियों के लिखित आश्वासन के बाद ही विमानों को उड़ान भरने की उम्मीद मिली है।

बेरोजगारी का आलम यह है कि फैक्ट्रियां, उत्पाद और व्यवसाय लगभग चौपट हो चुके हैं। विदेशी निवेश शून्य हो चुका है। महंगाई और बेरोजगारी के कारण पाकिस्तान अपराध की गिरफ्त में आता जा रहा है। बेरोजगारी का आलम य है कि लाखों युवाओं ने देश छोडे के लिए आवेदन कर रखा है, किन्तु पाकिस्तान की सरकार उन्हें मंजूरी नहीं दे रही है। फाकाकशी के कारण भिखारियों की संख्या लगातार बढ़ रही है। ऐसी स्थिति में पाकिस्तान में गृहयुद्ध के हालात बन गए हैं। सेना ने पाक सत्ता में हस्तक्षेप शुरू कर दिया है। सेना ने डॉलर की कालाबाजारी रोकने के लिए कई स्थानों पर कार्रवाई करी। इससे डॉलर की रेट कुछ रुपए नीचे आ गई।

पाकिस्तान में आई गिरावट का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है उसके पासपोर्ट की साख नीचे से चौथे नम्बर पर पहुंच गई है। पाकिस्तान में सरेआम विद्रोह के स्वर गूंज रहे है। बलूचिस्तान के निवासी कारगिल का रास्ता खोले जाने की मांग कर रहे हैं ताकि भारत से व्यापारिक लेन-देन शुरू हो सके। इसके अलावा बुनियादी सुविधाओं की मांग को लेकर बलूचिस्तान के लाखों लोगों ने सरकार के खिलाफ प्रदर्शन किया। पाक सेना को हालात को नियंत्रण करने के लिए भेजा गया है। कुछ ऐसी ही हालत पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर की है।

पाकिस्तान की भयावह होती स्थिति का सच पाक मीडिया भी नहीं दिखा रहा है। मीडिया पर पाक सरकार का अंकुश है। सोशल मीडिया पर दबे-छिपे तरीके से पाकिस्तान के हालात उजागर हो रहे हैं। मौजूदा हालत में पाक नागरिक यह कहने लगे हैं कि उन्होंने पाकिस्तान में शामिल होकर कौनसा अपराध कर दिया। पाक सरकार के खिलाफ लोगों को अब किसी तरह की कानूनी कार्रवाई का डर नहीं है। लोग खुलकर अपने आक्रोश का इजहार कर रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पाकिस्तान की साख इतनी बदतर हो चुकी है कि संयुक्त अरब अमरात के प्रिंस ने जी20 में शिरकत के लिए पाकिस्तान में 6 घंटे रुकने की घोषणा की थी, किन्तु वे भी इससे पलट गए। इस्लामिक देशों के बूते भारत को धमकाने वाले पाकिस्तान से सभी देशों ने मुंह मोड़ लिया है। भिखारी जैसी हालत वाले पाकिस्तान से कोई भी देश अब रिश्ता रखने से कतराने लगा है। इतना ही नहीं पाकिस्तान के कई शहरों के लोगों के लिए वीजा पर बैन लगाया दिया है। यह नौबत तब आई है जब कई देशों में पाक के लोगों द्वारा लगातार अपराधिक गतिविधियों में शामिल होने का पता चला। इससे गो बैक पाकिस्तानी की मुहिम चली हुई है। ब्रिटेन में हुए एक सर्वे में 14 प्रतिशत पाकिस्तानी युवाओं को बेकारी और कामचोरी के लिए जिम्मेदार ठहराया गया है। ये युवा ब्रिटेन सरकार द्वारा बेरोजगारों के लिए दिए जाने वाले भत्ते पर गुजारा कर रहे हैं। इससे पहले भी सऊदी अरब और दूसरे मुल्क में भी पाकिस्तानियों की बेजा हरकतों के कारण गो पाकिस्तानी का ट्रेंड चल चुका है। पाकिस्तानी डॉक्टर के अमरीका में एक आतंकी योजना में शामिल होने के बाद ऐसा ही ट्रेंड वहां भी चला था। पूरे विश्व में पाकिस्तानियो की किरकिरी हो रही है।

आईएमएफ (अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष) ने पाकिस्तान से कहा है कि गरीबों को राहत देने के लिए अमीरों पर टैक्स लगाएं। पाकिस्तान को अमीरों पर कर लगाने और गरीबों की रक्षा करने के लिए कहा गया है। आईएमएफ की प्रबंध निदेशक क्रिस्टालिना जॉजीर्वा ने संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूएनजीए) से इतर पाकिस्तान के कार्यवाहक प्रधान मंत्री अनवारुल हक काकर के साथ बैठक की और पाकिस्तान से यह सुनिश्चित करने का आग्रह किया कि वह अमीरों पर कर लगाए और गरीबों की रक्षा करे। क्रिस्टालिना ने कहा कि मैंने पाकिस्तान के प्रधान मंत्री से कहा कि अमीरों पर अधिक कर लगाएं और गरीबों की रक्षा करें। मुझे यकीन है कि पाकिस्तान के लोग भी यही चाहते हैं। यह बैठक पाकिस्तान के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि वह अपने नागरिकों को बिजली बिलों पर कुछ राहत प्रदान करने के लिए आईएमएफ से मंजूरी चाहता है, जिससे देशव्यापी विरोध प्रदर्शन और स्थानीय लोगों में गुस्सा पैदा हो गया है, जो अधिक कर लगाने और बिजली दरों में वृद्धि के लिए सरकार से सवाल करते हैं। उनके लिए अपने बिलों का भुगतान करना असंभव है। अमीर कर चोरी करके बच जाते हैं जबकि गरीबों को बिल भुगतान और वसूली के लिए निशाना बनाया जाता है। लेकिन सवाल यही है क्या पाकिस्तान की अंतरिम सरकार में इतनी हिम्मत है कि रसूखदारों पर ज्यादा टैक्स लगा सके। पाकिस्तान की कर वसूलने वाली सरकारी मशीनरी भ्रष्टाचार की जंग से सडगल चुकी है। अधिकारी और सत्ता में रहे नेता आकंठ तक भ्रष्टाचार में डूबे हुए हैं। ऐसे में इस बात की संभावना क्षीण है कि पाकिस्तान अमीरों पर ज्यादा टैक्स लगाने में दमखम दिखा पाएगा। देखना यही है कि पाकिस्तान अब आईएमएफ की इस सलाह पर कैसे अमल कर पाता है। आईएमफ की इस सलाह से पहले पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ ने अपने ही देश की सरकार पर निशाना साध चुके हैं। शरीफ ने कहा कि हमारा देश दुनिया से पैसों की भीख मांग रहा है, वहीं पड़ोसी भारत चांद पर पहुंच गया। प्रधानमंत्री नवाज शरीफ ने खुद पाकिस्तान की बदहाली की पोल खोल दी है। दाने-दाने को मोहताज पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ ने लंदन में बैठकर कहा कि पाकिस्तान आज दुनिया के देशों से पैसे की भीख मांग रहा है, जबकि भारत चांद पर पहुंच गया है और जी-20 सम्मेलन की मेजबानी कर रहा है। पाकिस्तान की आर्थिक हालात में सुधार नहीं हुआ तो बगावत पर उतारू लोगों को संभालने के लिए पाक सेना सुरसा का मुंह फाड़े खड़ी है। मौजूदा हालत में पिस हर तरह से पाकिस्तान की जनता रही है। पाकिस्तान की यह हालत एक दिन में हुई है। आतंकवाद को प्रोत्सहान देने की नीति के कारण पाकिस्तान खोखला हो चुका है।

किताबों में अलग कानून-अफसरों के कानून अलग

सनत जैन

सरकारी अधिकारी किताबों में लिखित कानून के अनुसार काम नहीं करते हैं। सरकारी अधिकारी अपनी सोच से कानून और नियम बनाकर काम करते हैं। आम जनता के लिए कानून की किताबों में जो कानून और नियम लिखे हैं। ठीक उसके विपरीत अधिकारी अपने मनमाने कानून के हिसाब से का

संक्षिप्त खबरें

लेंटर से जुड़ी छत गिरने से मजदूर की मौत

उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले के शाहपुर थाना क्षेत्र में रविवार को लेंटर से जुड़ी छत ढहने से मलबे में दबकर एक मजदूर की मौत हो गई, जबकि उसका बेटा गंभीर रूप से घायल हो गया। पुलिस सूत्रों ने बताया कि शाहपुर थाना क्षेत्र के तावली गांव में एक मकान की लेंटर की छत ढहने से मजदूर अब्दुल रहमान (55) की मौत हो गई और उसका बेटा शाहिद गंभीर रूप से घायल हो गया। शाहिद को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। थाना प्रभारी आनंद देव मिश्रा ने बताया कि यह घटना उस समय हुई, जब मजदूर घर में मरम्मत कार्य के दौरान लेंटर तोड़ रहा था। उन्होंने बताया कि पुलिस ने मृतक का शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण वाराणसी पहुंचीं, एयरपोर्ट पर स्वागत

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण रविवार को वाराणसी पहुंचीं। बाबतपुर स्थित लाल बहादुर शास्त्री अन्तरराष्ट्रीय हवाईअड्डे पर भाजपा के प्रोटोकाल प्रभारी शैलेष पांडेय सहित अन्य नेताओं ने केन्द्रीय मंत्री की गर्मजाशी से अगुआनी की। एयरपोर्ट से केन्द्रीय मंत्री कड़ी सुरक्षा के बीच बीएचयू के लिए रवाना हो गईं। केन्द्रीय मंत्री आईआईटी बीएचयू के स्टूडेंट काउंसिलिंग सर्विसेज की ओर से आयोजित मेंटल वेलनेस वीक का उद्घाटन करने के बाद विद्यार्थियों को संबोधित करेंगी। कार्यक्रम में भाग लेने के बाद केन्द्रीय मंत्री शाम पांच बजे वाराणसी एयरपोर्ट से दिल्ली के लिए रवाना हो जाएंगी। इसके पहले केन्द्रीय मंत्री निर्मला सीतारमण बीते 26 अगस्त को अपने माता-पिता के साथ वाराणसी निजी दौरे पर आईं थीं। दो दिनों के काशी प्रवास में उन्होंने श्री काशी विश्वनाथ दरबार और मां अन्नपूर्णा का दर्शन पूजन करने के बाद कांची कामकोटि पीठ के शंकराचार्य शंकर विजयेंद्र सरस्वती सहित अन्य संतों से मिल कर आशीर्वाद लिया था।

नगर पंचायत के अध्यक्ष के खिलाफ जान से मारने की धमकी देने का मुकदमा दर्ज

उत्तर प्रदेश के बलिया जिले की बांसडीह नगर पंचायत के अध्यक्ष के खिलाफ एक सरकारी विद्यालय की प्रधानाध्यापिका को अपशब्द कहने और जान से मारने की धमकी देने के आरोप में मुकदमा दर्ज किया गया है। पुलिस सूत्रों ने दर्ज रिपोर्ट के हवाले से रविवार को बताया कि बांसडीह कोतवाली क्षेत्र में स्थित कंपोजिट कन्या प्राथमिक विद्यालय की प्रधानाध्यापिका शीला सिंह की तहरीर पर बांसडीह नगर पंचायत के अध्यक्ष सुनील कुमार सिंह के खिलाफ शनिवार को मुकदमा दर्ज किया गया। सूत्रों के मुताबिक, शीला सिंह ने तहरीर में उल्लेख किया है कि बांसडीह नगर पंचायत के अध्यक्ष सुनील कुमार सिंह गत चार अक्टूबर को विद्यालय आए और प्रधानाध्यापक की कुर्सी पर बैठकर अभद्र भाषा का प्रयोग किया और जान से मारने की धमकी दी। बांसडीह कोतवाली के प्रभारी योगेंद्र सिंह ने बताया कि पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर मामले की छानबीन शुरू कर दी है। उन्होंने कहा कि पुलिस मामले में आवश्यक वैधानिक कार्रवाई करेगी।

चकबंदी वादों के निस्तारण के लिए होगा ग्राम अदालतों का आयोजन

बदायूँ: । बन्दोबस्त अधिकारी चकबन्दी ने अवगत कराया है कि चकबन्दी न्यायालयों में विचाराधीन वादों के त्वरित निस्तारण हेतु वादकारियों के हित के दृष्टिगत जनपद के उप संचालक चकबन्दी, बन्दोबस्त अधिकारी चकबन्दी तथा सम्बन्धित चकबन्दी अधिकारी समन्वय स्थापित कर किसी ग्राम से सम्बन्धित आपत्ति/अपील/निगरानी की सुनवाई हेतु चिन्हित करते हुए ग्राम अदालतों का आयोजन कर अभियान स्तर पर वादों का निस्तारण करने के निर्देश दिये गये हैं। उन्होंने बताया कि विभिन्न चकबन्दी न्यायालयों में विचाराधीन समस्त वादों (आपत्ति/अपील/ निगरानी) के त्वरित निस्तारण हेतु वादकारियों के हित के दृष्टिगत ग्रामों को चिन्हित कर ग्राम अदालतों का आयोजन किये जाने हेतु माह अक्टूबर, 2023 की कार्य योजना प्रस्तावित है, जिसमें 11 अक्टूबर को तहसील बिल्सी अन्तर्गत ग्राम नैथुआ में, 27 अक्टूबर को तहसील बदायूँ अन्तर्गत गिधौल तथा 31 अक्टूबर को तहसील बिल्सी के अन्तर्गत पहाड़पुर के पंचायत भवनों में उप संचालक चकबन्दी ब0अ0च0 च0अ0 न्यायालयों में उप संचालक चकबन्दी, बन्दोबस्त अधिकारी चकबन्दी, चकबन्दी अधिकारी, सहायक चकबन्दी अधिकारी, चकबन्दी कर्ता, चकबन्दी लेखपाल की उपस्थिति में ग्राम अदालतों का आयोजन होगा।

वायु सेना को हर तरह के युद्ध में हावी होने के लिए रणकौशल बढाना होगा: वायु सेना प्रमुख

प्रयागराज, एजेंसी

वायु सेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल वी आर चौधरी ने कहा है कि आधुनिक युद्धों की कोई सीमा नहीं है इसलिए वायु सेना को हर तरह के युद्ध में हावी होने के लिए अंतरिक्ष, साइबर और जमीनी क्षमताओं के तालमेल को बढाते हुए अपने रणकौशल को बढाना होगा। एयर चीफ मार्शल चौधरी ने रविवार को यहां 92 वें वायु सेना दिवस के मौके पर आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि मल्टी-डोमेन ऑपरेशन से लेकर हाइब्रिड युद्ध तक, वायु सेना को यह पहचानने की जरूरत है कि आधुनिक युद्ध पारंपरिक सीमाओं से परे है। उन्होंने कहा कि इसे ध्यान में रखते हुए, ह्व हमें युद्ध क्षेत्र पर हावी होने के लिए वायु, अंतरिक्ष, साइबर और जमीनी क्षमताओं को सहजता से एकीकृत करना होगा। हमें खुद से यह सवाल पूछना चाहिए कि, मैं और क्या कर सकता हूं? अपने आप को आज की जरूरतों तक सीमित न रखें। आज से आगे सोचें और आपको एहसास होगा कि अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। प्रमुख रक्षा अध्यक्ष जनरल अनिल चौहान और नौसेना तथा थल सेना प्रमुखों की मौजूदगी में वायु सैनिकों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि पिछले नौ दशकों में भारतीय वायुसेना की ताकत लगातार बढी है और यह दुनिया की बेहतरीन वायु सेनाओं में से एक बन गई। उन्होंने सवाल किया, ह्व लेकिन क्या इतना काफी है? यदि भारत 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनने की राह पर है, तो 2032 में जब हम 100 वर्ष पूरे करेंगे, तब तक भारतीय वायुसेना को सर्वोत्तम नहीं तो सर्वोत्तम में से एक होना चाहिए। वायु सेना प्रमुख ने कहा,ह्व सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण बात, मैं आपसे यह आग्रह करना चाहूंगा कि आप जो कुछ भी करते हैं उसमें उत्कृष्टता के लिए प्रयास करें। यह समझौता योग्य नहीं है. हमें अपने संचालन, प्रशिक्षण, रखरखाव और प्रशासन के हर पहलू में खुद को उच्चतम मानकों पर रखना चाहिए। हमें प्रौद्योगिकी और नवाचार में अग्रणी बनने का प्रयास करना चाहिए। हमें तकनीकी श्रेष्ठता बनाने के लिए अत्याधुनिक अनुसंधान, विकास और अधिग्रहण में निवेश करना चाहिए। नवाचार हमारे डीएनए का हिस्सा बनना चाहिए, जिससे हम उभरते खतरों और चुनौतियों से आसानी से निपट सकें। हमें स्वयं का ईमानदारी से मूल्यांकन करने और परिवर्तन में आने वाली किसी भी बाधा का समाधान करने की आवश्यकता है। हमें जिस बल संरचना को विकसित करने की आवश्यकता है वह भविष्य के लिए तैयार होनी चाहिए। न्होंने कहा कि सभी को नवाचार को बढ़ावा देते हुए प्रत्येक वायु योद्धा को वायु सेना को बेहतर बनाने में योगदान का अवसर देना चाहिए। उन्होंने कहा कि इस जटिल और बहुआयामी रणनीतिक माहौल में रणनीति को परिष्कृत करना और हर क्षेत्र में क्षमताओं को बढाना जरूरी है। उन्होंने कहा कि हवाई क्षेत्र और अंतरिक्ष में बड़ी ताकत बनने के लिए हमें अंतरिक्ष क्षेत्र के महत्व को पहचानना चाहिए और अपनी अंतरिक्ष क्षमताओं का विकास जारी रखना चाहिए। वायु सेना प्रमुख ने कहा कि तेजी से बदलती दुनिया में हमें सभी तरह की नई चुनौतियों से निपटने के लिए सदैव तैयार रहना चाहिए। उन्होंने कहा, ह्व हमें अनुशासन, अखंडता की संस्कृति को बढ़ावा देना जारी रखना चाहिए और उभरते खतरों के प्रति हमेशा सतर्क रहना चाहिए। हमारे राष्ट्र की रक्षा के प्रति हमारी प्रतिबद्धता दृढ़ है और हम अपने क्षेत्र की रक्षा करना, संभावित विरोधियों को रोकना और अपने लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करना जारी रखेंगे। भारतीय वायु सेना सिर्फ एक सैन्य बल नहीं है, यह हमारे देश की सामूहिक शक्ति और दृढ़ संकल्प का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि पिछला वर्ष काफी चुनौतियाँ लेकर आया लेकिन यह खुशी की बात है कि वायुसेना ने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया और हर चुनौती का सफलतापूर्वक सामना किया। उन्होंने कहा, ह्व हमने न केवल चुनौतियों से पार पाया है, बल्कि उन चुनौतियों को अवसर में भी बदला है। वर्तमान भू-राजनीतिक परिदृश्य ने हमें स्वदेशी क्षमता विकसित करके आयात पर निर्भरता कम करने का अवसर प्रदान किया है। वायु सेना प्रमुख ने वायु यौद्धाओं से उनकी अपेक्षाओं का उल्लेख करते हुए कहा, ह्व दो साल पहले भारतीय वायुसेना को अपने पहले संबोधन में मैंने बताया था कि सभी वायु योद्धाओं से मेरी क्या अपेक्षाएं हैं ताकि भारतीय वायुसेना प्रासंगिक और समसामयिक बनी रहे। मैंने परिवर्तन की आवश्यकता के बारे में बात की थी और कहा था कि कैसे हमें हाइब्रिड युद्ध और मल्टी-डोमेन ऑपरेशन को फिर से परिभाषित करने, फिर से कल्पना करने और पुनः कैलिब्रेट करने की आवश्यकता है। इस साल मैं भारतीय वायुसेना के लिए अपने दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित करना चाहूंगा कि हम कहां हैं ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर "परिवर्तनकारी शिक्षा के लिए प्रयास" विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन

प्रात: किरण संवाददाता

अमरोहा। राष्ट्रीय राजमार्ग बाईपास स्थित श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय/ संस्थान में एन ई पी 2020 पर परिवर्तनकारी शिक्षा के लिए प्रयास विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का शानदार आयोजन किया गया, इस नेशनल समिट में देश के विभिन्न केंद्रीय एवं स्टेट यूनिवर्सिटी के कुलपतियों, विख्यात वैज्ञानिको समेत उद्योग जगत की कई जानी-मानी हस्तियों ने शिरकत की। इस शानदार राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सफल क्रियान्वयन पर मंथन करते हुए सभी ने इसके बल पर भारत को फिर से दुनिया का सिरमौर बनने की वकालत की।श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय/ संस्थान के डॉक्टर सी वी रमन सभागार में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर आधारित दो दिवसीय "परिवर्तनकारी शिक्षा के लिए प्रयास" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार का शुभारंभ समूह अध्यक्ष डॉ सुधीर गिरी, मुख्य अतिथि भारतीय विश्वविद्यालय संघ के अध्यक्ष प्रो डीएस चौहान, प्रधान सलाहकार प्रो वी पी एस अरोड़ा, प्रतिकुलाधीपति डॉ राजीव त्यागी, यूपीटीयू के पूर्व कुलपति प्रो आर के खांडल, तेजपुर सेंट्रल यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो वीके जैन, अमेजॉन के रीजनल हेड साउथ एशिया प्रो लोकेश मेहरा, उत्तराखंड ओपन विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोओ पी नेगी आदि ने सरस्वती मां की प्रतिमा के सम्मुख दीप प्रज्वलित करके किया।ह्वइस अवसर पर मुख्य कार्यकारी अधिकारी अजय श्रीवास्तव, प्रभारी कुलपति डॉ राकेश यादव, ग्रुप एडवाइजर आरएस शर्मा, कुलसचिव प्रोपीयूष पांडे, सीएफओ विकास भाटिया, डॉ राजेश सिंह, डॉ दिव्या गिरधर, डॉ एलएस रावत, डॉ एस एन साहू, डॉ एना ब्राउन, मेरठ परिसर से डॉ प्रताप सिंह, डॉ पूजा शर्मा डॉ अनिल जायसवाल, आशी नायर एवं मीडिया प्रभारी विश्वास राणा आदि लोग उपस्थित रहे।

जौनपुर : मुठभेड़ में दो बदमाश गिरफ्तार

जौनपुर, एजेंसी

मछली शहर कोतवाली थाना अंतर्गत लूट के मामले में आरोपित दो बदमाशों को शनिवार की देर रात पुलिस ने मुठभेड़ के दौरान गिरफ्तार किया है। मुठभेड़ के दौरान एक के पैर में गोली लगने से घायल हो गया जबकि दूसरे को पुलिस ने दौड़ाकर पकड़ लिया है। इनके पास से तमंचा व कारतूस बरामद किया है। घायल को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस के अनुसार मछलीशहर थाना क्षेत्र के कौरहा के पास पुलिस टीम संदिग्ध लोगों की जांच कर रही थी। इसी बीच दो बदमाश बाइक से बरईपार की तरफ से आ रहे थे। पुलिस ने उन्हें रोकने की कोशिश की तो दोनों भागने लगे। भागते समय बदमाशों ने फायरिग भी की। एक गोली मछलीशहर थानाध्यक्ष के बुलेट प्रुफ जैकेट से लगी। पुलिस ने भी जवाबी फायरिग में अजय निषाद (34) के पैर में गोली लगी और वह घायल होकर गिर गया। उसे गिफ्तार कर लिया गया। वहीं मौके से भाग रहे दूसरे बदमाश सलीम 30 वर्ष को भी दौड़ाकर पुलिस ने पकड़ लिया। घटना के संबंध में रविवार को जानकारी देते हुए एसपी ग्रामीण शैलेंद्र कुमार सिंह ने बताया कि पकड़े गए अभियुक्त अजय निषाद के खिलाफ 20 से अधिक गंभीर धारों में मुकदमा दर्ज है। दूसरे साथी सलीम के खिलाफ भी 18 से अधिक गंभीर धारा में मुकदमें दर्ज हैं। घायल बदमाश को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया।

फरीदाबाद: छात्र की मौत से गुस्साए लोगों ने किया सडक जाम

फरीदाबाद, एजेंसी

स्थानीय एनआईटी क्षेत्र में एक निजी स्कूल में पढ़ाने वाले 11वीं के छात्र की मौत हो गई। छात्र की मौत के बाद गुस्साएं परिजनों ने रविवार को बीके चौक की सडक पर जाम लगा दिया। जाम की सूचना मिलते ही पुलिस ने मौके पर पहुंचकर लोगों को समझा कर जाम खुलवाया। दरअसल जवाहर कॉलोनी के रहने वाले 11वीं कक्षा के छात्र दक्ष को 28 तारीख की शाम कुछ लोगों ने बुरी तरह से लाठी डंडों से पीट कर घायल कर दिया था। गंभीर हालत में दक्ष को एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया था जहां उसका इलाज चल रहा था । देर रात दक्ष की मौत हो गई । इसके बाद गुस्साये परिजनों ने आरोपी हमलावरों की गिरफ्तारी न होने से नाराज होकर बीके चौक पर जाम लगा दिया । परिवार के मुताबिक दक्ष 11वीं कक्षा का छात्र था और किसी काम से दो नंबर इलाके में गया था। जहां देर शाम लौटते समय कुछ युवकों ने उस पर हमला कर दिया। परिवार ने इस मामले में कई नामजद समेत 13 लोगों के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई थी। परिजनों का आरोप है कि पुलिस ने इस मामले में कुछ लोगों को तो गिरफ्तार कर लिया लेकिन बाकी लोगों की गिरफ्तारी नहीं कर रही । बच्चे की मौत के बाद गुस्साये परिजनों ने बकाया आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग की । लोगों के जाम लगाने की सूचना मिलने के बाद एनआईटी के विधायक नीरज शर्मा भी मौके पर पहुंचे और पुलिस से मामले में सख्त कदम उठाने को कहा। मामले की गंभीरता को देखते हुए डीसीपी समेत तमाम पुलिस के अधिकारी मौके पर पहुंचे । डीसीपी ने बताया कि इस मामले में छह आरोपियों को गिरफ्तार किया जा चुका है, जबकि अन्य के लिए वेरिफिकेशन की जा रही है। इस मामले में जैसे ही सबूत मिलेंगे तमाम आरोपियों की गिरफ्तारी की जाएगी।

तेजी से बदलते सामरिक माहौल को देखते हुए क्षमताओं को बढ़ाने की जरूरत : वायुसेना प्रमुख वीआर चौधरी

प्रयागराज, एजेंसी

भारतीय वायुसेना के प्रमुख एयर चीफ मार्शल वीआर चौधरी ने रविवार को कहा कि आज के जटिल और तेजी से बदलते सामरिक माहौल को देखते हुए वायु सेना को अपनी रणनीति को परिष्कृत करने, सर्वांगीण क्षमताओं को बढ़ाने और भविष्य में संभावित युद्ध लड़ने के लिए एक लचीली मानसिकता विकसित करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि मौजूदा भू-राजनीतिक परिदृश्य ने हमें देशज क्षमता विकसित कर आयात पर निर्भरता घटाने का एक अवसर प्रदान किया है। प्रयागराज के बम्हरौली में मध्य वायु कमान के मुख्यालय परिसर में भारतीय वायुसेना के 91वें वर्षगांठ समारोह में वायुसेना की परेड के दौरान रक्षा प्रमुख (सीडीएस) जनरल अनिल चौहान, एयर मार्शल आरजीके कपूर और वरिष्ठ अधिकारियों को संबोधित करते हुए चौधरी ने कहा, हमने न केवल चुनौतियों का सामना किया है, बल्कि इन चुनौतियों को अवसर में तब्दील किया है। उन्होंने कहा, हमने महिला अग्निवीरों सहित अग्निवीरों के प्रथम बैच और बाद के बैच को सफलतापूर्वक वायुसेना में शामिल किया है, जो वर्तमान में बुनियादी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं, जिसमें खुद सीखने पर अधिक जोर है। चौधरी ने कहा, अकेले इसी वर्ष भारतीय वायुसेना ने दुनियाभर में मित्र देशों के साथ आठ अभ्यास किए हैं। पहली बार, देश में ही निर्मित हल्के लड़ाकू विमानों (एलसीए) ने एक विदेशी अभ्यास में हिस्सा लिया है। देश के भीतर हम जंगलों में आग बुझाने और कई राज्यों में बाढ़ राहत कार्यों में सक्रियता के साथ शामिल रहे हैं। वायुसेना प्रमुख ने कहा, पिछले नौ दशकों में भारतीय वायुसेना निरंतर आगे बढ़ती रही है और इसने खुद को विश्व में सबसे उम्दा वायुसेनाओं में से एक के तौर पर स्थापित किया है, लेकिन क्या यह पर्याप्त है। अगर भारत 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने के पथ पर है, तो भारतीय वायुसेना के लिए भी सर्वोत्तम में से एक होना आवश्यक है। चौधरी ने कहा, हमें प्रौद्योगिकी एवं नवप्रवर्तन में अग्रणी होने का प्रयास करना होगा। हमें अत्याधुनिक अनुसंधान, विकास एवं अधिग्रहण में निवेश करना होगा। नवप्रवर्तन को हमारे डीएनए का हिस्सा बनाना होगा, जिससे हम उभरते खतरों और चुनौतियों से आसानी से निपट सकें। उन्होंने कहा, हमें युद्ध क्षेत्र में प्रभुत्व कायम करने के लिए वायु, अंतरिक्ष, साइबर और जमीनी क्षमताओं को निर्बाध रूप से एकीकृत करना होगा। आप आज की जरूरतों तक खुद को सीमित न करें, बल्कि आज से परे सोचें और आपको एहसास होगा कि अभी काफी कुछ किया जाना बाकी है। चौधरी ने कहा,ह्वएक वायु और अंतरिक्ष सेना बनने के लिए हमें अंतरिक्ष क्षेत्र के महत्व को पहचानना होगा और हमारी अंतरिक्ष क्षमताओं को सतत विकसित करना होगा। यह दुनिया तेजी से बदल रही है और हमें आने वाली सभी नई चुनौतियों का सामना करना होगा। हमें अनुशासन, एकता की संस्कृति निरंतर बनाए रखनी होगी और उभरते खतरों को लेकर हमेशा चौकन्ना रहना होगा। इस मौके पर वायुसेना प्रमुख ने भारतीय वायुसेना के नये ध्वज का अनावरण भी किया।

केदार पुरी में योगी का भव्य स्वागत, बाबा केदार का किया रूद्राभिषेक

प्रयागराज, एजेंसी

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार को उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जनपद अंतर्गत, स्थित विश्व प्रसिद्ध श्री केदारनाथ धाम पहुँच कर बाबा केदार के दर्शन एवं रूद्राभिषेक किया। उन्होंने भगवान केदारनाथ से विश्व में सुख समृद्धि एवं जनकल्याण की कामना करते हुए बाबा केदारनाथ का आशीर्वाद प्राप्त किया। तकरीबन दो घंटे के भ्रमण कार्यक्रम के दौरान केदारपुर में लगातार जय श्री राम एवं हर-हर महादेव के नारे लगते रहे। जहां से भी मुख्यमंत्री योगी गुजरते वहां उनके अभिवादन को खड़े श्रद्धालु जयकारे लगाते। जवाब में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी श्रद्धालुओं का अभिवादन कर जय श्री राम एवं बाबा केदार के जयकारे लगाए। आज सुबह करीब दस बजे मुख्यमंत्री आदित्यनाथ केदारनाथ हैलीपैड पर पहुचें। जहाँ हैली पैड पर उनका स्वागत बद्री केदार मंदिर समिति के अध्यक्ष अजय अजयेंद्र, जिला पंचायत अध्यक्ष रुद्रप्रयाग अमरदेई शाह, भाजपा जिला अध्यक्ष महावीर पंवार, केदार सभा, तीर्थ पुरोहित समाज, जिलाधिकारी डॉ सौरभ गहरवार, पुलिस अधीक्षक डॉ विशाखा समेत अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने पुष्पगुच्छ भेंट कर किया। वहीं पुरोहित समाज ने परंपरागत मंत्रोच्चारण के साथ उनका स्वागत एवं अभिनंदन किया। यहाँ पर तीर्थ पुरोहितों से भेंट करने के बाद मुख्यमंत्री योगी जीएमवीएन अतिथि गृह में कुछ देर विश्राम किया जिसके बाद मुख्यमंत्री योगी बीकेटीसी हट में मुख्य पुजारी शिवलिंग से मिले। पुजारी एवं अन्य तीर्थ पुरोहितों से भेंट के बाद तीर्थ पुरोहित समाज ह्यदंडह्ल की अगुआई में उन्हें मंदिर तक ले गए, यहाँ उन्होंने बाबा केदारनाथ के दर्शन कर विश्व में सुख समृद्धि एवं जन कल्याण की कामना की। करीब पौने घंटे चली पूजा के दौरान मुख्यमंत्री ने बाबा केदारनाथ का रूद्राभिषेक कर विशेष गो मुखी श्रृंघी से दूध एवं जल भी चढ़ाया। रूद्राभिषेक के बाद उन्होंने बाहर आकर नंदी की पूजा की एवं शॉल चढ़ाया। यहाँ मंदिर प्रांगण में खड़े श्रद्धालुओं के बीच बाबा केदारनाथ के नारे लगाने के बाद उन्होंने केदार सभा समेत अन्य तीर्थ पुरोहितों से भेंट की। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि श्री केदारनाथ धाम एवं बदरीनाथ धाम के दर्शनों का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। दोनों धामों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के निर्देशन में भव्य निर्माण कार्य चल रहा है। दुनियाभर में रहने वाले सनातन धर्म के अनुयायी दोनों धामों के दर्शन एवं आशीर्वाद की कामना रखते हैं। वर्ष 2013 में आयी त्रासदी के कारण केदार पुरी में हुए नुकसान से सभी प्रभावित हुए लेकिन स्थानीय लोगों के दृढ़ संकल्प एवं मोदी जी के निर्देशन में केदारनाथ का स्वरुप भव्य होता जा रहा है। दोनों धाम नई आभा के साथ विश्व में अपनी पहचान बना रहे हैं, विरासत के प्रति हमारे लोगों का सम्मान यही है। लाखों की संख्या में श्रद्धालु दोनों धामों के दर्शन करने आ रहे हैं यह नए भविष्य की तस्वीर भी है। सतत विकास एवं पर्यावरण के सभी पहलुओं का ध्यान रहते हुए जिस प्रकार दोनों धामों में कार्य चल रहा है इसके लिए प्रधानमंत्री एवं उत्तराखंड के मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी दोनों ही बधाई के पात्र है। श्रद्धा का उमड़ता हुआ जन सैलाब नए भारत की नई तस्वीर को प्रस्तुत कराता है। उन्होंने कहा कि इसमें दृष्टि भी है दूरदर्शिता भी है, इसमें पर्यटन भी है और श्रद्धालुओं की जन आस्था का सैलाब भी है। इन सब को समेटे हुए केदार पुरी का नव निर्माण बहुत अच्छे ढंग से आगे बढ़ रहा है। हमारे यह तीर्थ स्थल राष्ट्रीय एकात्मता का प्रतीक हैं। उन्होंने स्थानीय नागरिकों, श्रद्धालुओं, तीर्थ पुरोहितों, सुरक्षा एजेंसियों एवं व्यवस्थाओं से जुड़े हुए सभी पदाधिकारियों का धन्यवाद देते हुए ।

करीब 300 लोगों को साइबर फ्रॉड, और महिला विरुद्ध अपराध के संबंध में किया जागरुक

फरीदाबाद, एजेंसी

डीसीपी एनआईटी अमित यशवर्धन के द्वारा दिए गए दिशा निर्देश के तहत कार्रवाई करते हुए थाना सुरजकुण्ड प्रभारी की टीम पुलिस चौकी अंखीर ने अपने एरिया की सेक्टर 21-सी में रहने वाले लोगो को साइबर फ्रॉड, महिला विरुद्ध अपराध और नशा के संबंध में जागरुक किया है। जागरूकता प्रोग्राम में सेक्टर-21सी मार्केट वेलफेयर एसोसिएशन की तरफ से अनिल अरोड़ा, रणवीर सिंह, डी आर खुराना, प्रमोद शर्मा, नीरू भाटिया, मनीष मित्तल और नीरज शर्मा के साथ मार्केट में उपस्थित लोगों ने भाग लिया। पुलिस प्रवक्ता सूबे सिंह ने बताया कि साइबर फ्रॉड के जागरुकता अभियान के तहत पुलिस चौकी अंखिर इंचार्ज ओमप्रकाश की टीम ने चौकी के एरिया सेक्टर 21 में लोगो को साइबर फ्रॉड, महिला विरुद्ध अपराध और नशा के संबंध में जागरुक करते हुए बताया कि आजकल साइबर अपराधियों ने ठगी के नए-नए रास्ते खोज लिए हैं जिसके तहत वह आमजन के बैंक खातों से उनकी खून पसीने की कमाई चुटकियों में उड़ा लेते हैं। इसके लिए वह अलग-अलग माध्यमों का उपयोग करते हैं। उन्होंने बताया कि साइबर अपराधी किसी भी प्रकार से आपका बैंक अकाउंट, एटीएम कार्ड नंबर, क्रेडिट कार्ड नंबर, सीवीवी या मोबाइल ओटीपी पूछने का प्रयास करेंगे परंतु आप उनके साथ अपने बैंक अकाउंट क्रेडिट या डेबिट कार्ड से संबंधित किसी भी प्रकार की जानकारी साझा करें। उन्होंने बताया कि जागरूक व्यक्ति साइबर अपराधियों को आसानी से पहचान सकता है और उनके झांसे में नहीं आता इसलिए आवश्यक है कि साइबर अपराध के प्रति जागरूक बने और अपने साथियों को भी इसकी जानकारी दें ताकि वह भी साइबर अपराध का शिकार होने से बच सकें। उन्होंने बताया कि कई बार फ्रॉड करने वाला आपके किसी सगे संबंधी का व्हाट्सएप हैक करके व्हाट्सएप कॉल करता है और किसी मजबूरी का कारण बताकर आपसे पैसे ऐंठ लेता है। अगर आपके किसी संबंधी का व्हाट्सएप कॉल आता है या कोई जनरल कॉल आता है तो अपने सगे संबंधी से आपका फोन में से नंबर से बात कर कंफर्म करें। उन्होंने बताया कि किसी भी प्रकार की ऑनलाइन नौकरी अतिरिक्त आय, लॉटरी इत्यादि के लालच में न पड़े। ईमेल या व्हाट्सएप पर प्राप्त फर्जी लिंक पर क्लिक न करें जब तक उन पर आप 100% सुनिश्चित न हो। अपने फोन में अनावश्यक एप जैसे एनीडेस्क क्विक सपोर्ट टीमव्यूअर डाउनलोड नहीं करें इससे आपका फोन कोई दूसरा व्यक्ति एक्सेस कर सकता है। व्हाट्सएप पर अनावश्यक या अंजान वीडियो कॉल ना उठाएं क्योंकि यह हनी ट्रैप का मामला हो सकता है जिसमें आपको फंसा कर आपसे पैसों की मांग की जा सकती है।

वायु सेना को मिला नया ध्वज

प्रयागराज, एजेंसी

वायु सेना को 92 वें स्थापना दिवस पर रविवार को यहां नया ध्वज मिल गया जिसके साथ ही यह दिन वायु सेना के इतिहास में ऐतिहासिक दिन के रूप में दर्ज हो गया। इस तरह नौसेना के बाद वायु सेना को नया ध्वज मिल गया है। नौसेना ने भी पिछले वर्ष ही नया ध्वज अपनाया था। वायु सेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल वी आर चौधरी ने वायु सेना की 91 वीं वर्षगांठ के मौके पर यहां आयोजित भव्य समारोह में नये वायु सेना ध्वज का अनावरण किया। इस मौके पर वायु सेना की ताकत और मारक क्षमता का प्रदर्शन करते हुए भव्य परेड निकाली गयी। वायु सेना के अनुसार नया ध्वज भारतीय वायु सेना के मूल्यों को बेहतर ढंग से प्रकट करने के लिए बनाया गया है। इसके लिए ध्वज के ऊपरी दाएं कोने में ह्यफ्लाई साइडह्ल की ओर वायु सेना क्रेस्ट को शामिल किया गया है। इस क्रेस्ट में राष्ट्रीय प्रतीक अशोक स्तंभ और उसके नीचे देवनागरी में ह्यसत्यमेव जयतेह्ल लिखा है। नीचे एक हिमालयी ईगल है जिसके पंख फैले हुए हैं, जो भारतीय वायुसेना के रणकौशल को दशार्ता है। हल्के नीले रंग की एक अंगूठी जैसी आकृति हिमालयी ईगल को घेरे हुए है जिस पर ह्यभारतीय वायु सेनाह्ल लिखा है। हिमालयी ईगल के नीचे सुनहरे रंग में देवनागरी में भारतीय वायुसेना का आदर्श वाक्य नभः स्पृशं दीप्तम अंकित है। यहआदर्श वाक्य भगवद गीता के अध्याय 11 के श्लोक 24 से लिया गया है और इसका अर्थ उज्ज्वल तू स्वर्ग को छूएगा या दूसरे शब्दों में ह्यगौरव के साथ आकाश को छूना है। इतिहास में पीछे जाएं तो रॉयल वायुसेना के ध्वज में ऊपरी ओर बाएं कैंटन में यूनियन जैक और फ्लाई साइड पर रॉयल वायु सेना का लाल, सफेद और नीले रंग का निशान शामिल था। स्वतंत्रता के बाद, निचले दाएं कैंटन में यूनियन जैक को भारतीय तिरंगे और ह्यरॉयल वायु सेना निशानह्ल को ह्यवायु सेना तिरंगेह्ल के साथ प्रतिस्थापित करके भारतीय वायु सेना का ध्वज बनाया गया था।

ट्रैफिक नियामो का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ अभियान जारी रहेगा: डीसीपी ट्रैफिक

फरीदाबाद, एजेंसी

डीसीपी ट्रैफिक अमित यशवर्धन के दिशा-निर्देश के तहत कार्रवाई करते हुए यातायात पुलिस द्वारा यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहन चालकों के खिलाफ चलाए गए अभियान से एक दिन में 392 वाहन चालकों के चालान काटकर जुमार्ना लगाया। पुलिस प्रवक्ता सूबे सिंह ने बताया कि यातायात पुलिस ने यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहन चालकों के खिलाफ विशेष अभियान चलाया जिसके तहत यातायात पुलिस द्वारा विशेष अभियान के तहत 392 वाहन चालकों के चालान काटे गए जिसमें रॉन्ग साइड ड्राइव के 209, डैंजरस ड्राइविंग 13,ड्रिंक एंड ड्राइव 49 और रॉन्ग पार्किंग 121 वाहन चलाने वाले शामिल है। साथ ही 18 वाहनों को इंपाउंड किया गया है। रॉन्

संक्षिप्त खबरें

तीन दिवसीय प्रशिक्षण जारी

टेटिया बम्बर (मुंगेर)। प्रखंड स्तरीय सतत विकास लक्ष्य को प्रखंड कार्यालय सभागार में आयोजित तीन दिवसीय प्रशिक्षण गत शुक्रवार को दूसरे दिन जारी रहा। टेटिया बम्बर बनहारा कैशोली पंचायत के वार्ड सदस्यों को प्रखंड पंचायत राज पदाधिकारी मनोज कुमार ने स्वास्थ्य गांव की जानकारी दी।

मारपीट में दो जख्मी

टेटिया बंबर (मुंगेर)। थाना क्षेत्र के तिलकारी गांव में जमीन विवाद को लेकर दो पक्षों के बीच जमकर मारपीट की घटना हुई। जिसमें सुरेश सिंह व जानकारी देवी घायल हो गई घायल का इलाज पीएससी में कराया गया थाना अध्यक्ष अभयकांत चंद्रा ने जानकारी देते हुए बताया कि आवेदन मिलने पर मुकदमा दर्ज कर कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

एक मोटरसाइकिल के साथ देसी शराब 45 लीटर जब्त

मुंगेर। हेमजापुर थाना पुलिस ने शुक्रवार की सुबह छर्रा पट्टी गांव की सड़क के रास्ते शराब तस्करी करने के लिए जा रहे 45 लीटर देसी शराब और एक बाइक को बरामद किया गया है। ओपी प्रभारी संजय कुमार ने बताया की महाराना गांव से दो युवक बैग में देसी शराब लेकर छर्रा पट्टी गांव के रास्ते से एन एच 80 पर आ रहा था। वहां पर पहले से मौजूद पुलिस को देखकर कारोबारी बैंग छोड़कर भाग निकला बैग की तलाशी ली गई, तो उसमें से 45 लीटर देसी शराब बरामद हुआ है।

जिला महासचिव ने समाज कल्याण मंत्री को सौंप ज्ञापन

सदर मुंगेर। आंगनबाड़ी सेविका सहायिका संघ के जिला महासचिव ने अपनी पांच सूत्री मांग को लेकर माननीय मंत्री समाज कल्याण विभाग बिहार सरकार मदन सहनी को एक ज्ञापन सौंपा। उन्होंने मंत्री से कही की हमारे मांग पर विचार कर जल्द हमारी मांग को पूरा करने की कृपा करें। ज्ञापन देती सेविका ने कही की हम लोग बैठकर कर रो रहे हैं सर। वही मंत्री ने आश्वासन दिए कि आप लोग को रोने नहीं देंगे हम आपके मांगों पर विचार करेंगे। मौके पर उपस्थित सदर प्रखंड ग्रामीण परियोजना अध्यक्ष अंजू आरा, जमालपुर अध्यक्ष अनिता कुमारी सहित दर्जनों सेविका उपस्थिति रही।

दुर्गा पूजा शांति समिति की बैठक संपन्न

टेटिया बम्बर (मुंगेर)। टेटिया बम्बर थाना परिसर में शांति समिति का बैठक किया गया। इस बैठक में पूजा समिति के अध्यक्षों के द्वारा अपनी समस्या से अनुमंडल पदाधिकारी आदित्य कुमार झा को अवगत कराया गया। जिसके बाद अनुमंडल पदाधिकारी आदित्य कुमार झा द्वारा सभी विभाग को निर्देश दिया की सभी समस्याओं का जल्द से जल्द समाधान किया जाये। इसके बाद अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी राकेश कुमार ने कई दिशा निर्देश देते हुए कहा की मेले में आये हुए श्रद्धालु के लिए पुरुष एवं महिलाओं के लिए अलग-अलग दर्शन के लिए बैरेकेटिंग का उपाय किया जाये, साथ ही में डीजे चालको को हिदयात देते हुए कहा की आप लोग डीजे न बजायेंगे इस मौके पर मौजूद रहे टेटिया बम्बर थाना इंचार्ज अभयकांत चंद्रा व प्रखंड प्रमुख प्रतिनिधि, अजीत कुमार सरपंच प्रतिनिधि, जितेंद्र कुमार, जिला परिषद ओम प्रकाश यादव, बंगामा के मुखिया निरंजन निषाद।

दशहरा पूजा के शांतिपूर्ण आयोजन को लेकर बैठक आयोजित

पूर्णिया/ चम्पानगर । जिले के चंपानगर ओपी अंतर्गत दशहरा पूजा को लेकर शांति समिति की बैठक की गई। जिसमें चंपा नगर बाजार के न्यास समिति सदस्य एवं मुख्य पार्षद सहित सभी गणमान्य लोग मौजूद थे। बैठक में मेला में शांति बनाए रखने हेतु कई बिंदुओं पर चर्चा की गई। उल्लेखनीय है कि चंपानगर दशहरा मेला में उत्तर बिहार का एक प्रसिद्ध मेला है। जहां कई दशकों से भव्य देवी मां के दर्शनार्थ लाखों भक्तों की भीड़ होती है जिसमें अष्टमी नवमी एवं दशमी के दिन अत्यधिक भीड़ होती है भीड़ को नियंत्रित करने हेतु बनैली राज परिवार के कुमार बिनोदानंद सिंह ने कहा कि चिरैया रहिका, टेंपो स्टैंड, मसूरिया बॉर्डर एवं पेट्रोल पंप पर रोड ब्रेकर को लगाया जाए। बलिदान के दिन छागर बलिदान हेतु पर्ची को समय पूर्व काटने पर उपस्थित सदस्यों ने जोड़ दिया। जिससे भीड़ नियंत्रित हो सके। मूर्ति विसर्जन के दिन रोड ब्रेकर पर पुलिस की तैनाती पर जोर दिया गया। मेला में थिएटर आने पर प्रतिबंधित किया गया। बेनैली राज परिवार की ओर से मेले में सभी स्थानीय लोगों से शांति व्यवस्था हेतु सहयोग करने की अपेक्षा की गई। मेला में मुख्य पार्षद प्रतिनिधि निर्भय कुमार सिंह बेनेली राज परिवार के वधू सह समाजसेविका मृदुला सिन्हा पूर्व जीपस सुनील मेहता सहित सभी गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे। बैठक की अध्यक्षता करते हुए थाना अध्यक्षा डेजी कुमारी ने मेले में शांति व्यवस्था हेतु उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों से सहयोग का अपील किया।

दिनदहाड़े दनादन चली कई राउंड गोलियां

पुलिस कार्यशैली पर उठे सवाल, क्षेत्र निगरानी ड्यूटी के नाम पर पर बढ़ती जा रही लापरवाही

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। जिलेभर में अपराधी इतने बेलगाम हो गए हैं कि उन्हें प्रशासन का तनिक भी खौफ नहीं है। अपराधी फिल्मी अंदाज में एक अपने हाथ में पिस्टल लहराते हुए आते हैं और दिनदहाड़े बेखौफ होकर एक नहीं दो नहीं तीन नहीं चार-चार गोलियां फायरिंग की वारदात को अंजाम देते नजर आते हैं।

वही क्षेत्र के गांव वाले भी कुछ कम नहीं अपने एकता की ताकत का मिसाल पेश करते हुए उक्त अपराधी को दौड़ा कर पकर लेते हैं और उन्हे पुलिस के हवाले कर देते है, हालांकि इस घटना से पूरा इलाका डरा सहमा हुआ दिखाई दे रहा है, तो वही लोग अपने घरों में बंद नजर आते है। ऐसा ही एक मामला लोदीपुर थाना परिक्षेत्र के समसपुर गांव इलाके से सामने आया है। घटना को लेकर बताया जा रहा है कि स्थानीय इलाके के विनोद मंडल और उसके परिवार पर अपराधियों ने लगातार कई राउंड फायरिंग की वारदात को अंजाम दिया है। वही इस दौरान गनीमत रही कि अपराधी द्वारा चलाई गई एक भी गोली किसी को नुकसान पहुंचा नही सकी थी। लेकिन अपराधी लगातार चार फायरिंग की गई गोली का निशाना चूक होता चला गया, लेकिन इस तरह के लगातार फायरिंग से पुरा पुलिस प्रशासन की व्यवस्था पर सवाल खड़े हो गये है।

वही दिनदहाड़े सरमसपुर गांव इलाका में लगातार गोलियों की आवाज से दहल उठा है। इस गोली कांड की वारदात का आसपास के लगे सीसीटीवी कैमरे के पुटेज में कैद हो गई थी जिसमें घटित घटना की कई एंगल से लाइव वीडियो आप स्पष्ट रूप से देखा जा सकता हैं। किस तरह अपराधी दिनदहाड़े गोली तड़तड़ा रहा है। गोली चलाने वाला अपराधी विरेन्दर मंडल उर्फ हग्गा अपने ननिहाल सरमसपुर में ही रहता है जबकि उसका पुश्तैनी घर रहमतुल्लापुर नाथनगर बताया जा रहा है। वही घटना को लेकर विवाद का कारण घर के पास रास्ते का बताया जा रहा है। वही मौके पर पहुँची लोदीपुर थाना पुलिस ने उक्त अपराधी को अपने गिरफ्त में ले लिया है। वहीं लोदीपुर थाना अध्यक्ष आर के झा ने कहा कि घटना को लेकर उचित जाँच कर अपराधी युवक के विरुद्ध सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

छात्रावास सहित अन्य सुविधाओं की मांग ले प्रबंधन को सौपा ज्ञापन

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर (नवगछिया) ।अभाविप नवगछिया के महिला सदस्यों के द्वारा संगठन के अध्यक्ष साक्षी भारद्वाज के नेतृत्व में महिला कालेज के प्राचार्या को छात्रावास चालू किये जाने की मांग को लेकर एक ज्ञापन सौंपा है। जिसमें छात्राओं के द्वारा कहा गया है कि महाविद्यालय के प्रांगण में अवस्थित मैदान की साफ सफाई कर ठीक कराने, शुद्ध पेयजल की व्यवस्था करने, छात्रा को बैठने के लिए सेड इत्यादि की व्यवस्था किये जाय सहित अन्य व्यवस्था उपलब्ध कराने मांग रखी है। इस दौरान संगठन के कालेज अध्यक्ष साक्षी भारद्वाज ने बताया कि बर्षो से कालेज की छात्रा अपने लिए कॉलेज प्रबंधन से छात्रावास एवं अन्य सुविधाओं की व्यवस्था मुहैया कराने मांग कर रही है। परंतु महाविद्यालय प्रशासन के द्वारा अब तक इन छात्राओं की मांग पर किसी भी प्रकार का रुचि नहीं दिखा रही हैं और न नही इस ओर ध्यान दे विचार किया जा रहा है जो बहुत ही खेद का विषय है। उक्त मामले को लेकर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद नवगछिया इकाई के द्वारा इसे अभिलम्ब चालू कराने को लेकर महाविद्यालय के प्रबंधन, अनुमंडल पदाधिकारी, जिला अधिकारी, एवं विश्व विधालय के कुलपति तक छात्रावास व्यवस्था मुहैया कराने हेतू कई बार आवेदन दी जा चुकी है। वही अभाविप कार्यकता ने अंतिम चेतावनी देते हुए महाविद्यालय प्रशासन को कहा है कि आग्रह और विनती है कि सैकड़ों बार हम लोग कर चूके है, अब अभाविप का आगामी दिनों से अनिश्चित कालीन हड़ताल के साथ साथ वृहित रूप से आंदोलन जारी किया जायेगा। इस मौके पर कालेज उपाध्यक्ष आकांश कुमारी तथा कॉलेज मंत्री कोमल भारती कॉलेज की छात्रा कुसुम, दीपा, मीरा, अंजलि, आकांक्षा, दीक्षा, कोमल, ब्यूटी, सोनम, सिखा, साक्षी, राधा, रीना, सोनाली, कंचन, सीमा, आदि महिला सदस्य उपस्थित थी।

भाजपा युवा मोर्चा के बिहार प्रदेश अध्यक्ष एक दिवसीय दौरे पर पहुंचे भागलपुर

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। आगामी लोकसभा चुनाव को लेकर क्षेत्रवार कार्यकताओं व समर्थकों को संगठन के प्रति सशक्त बनाने के उद्देश्य को लेकर भाजपा युवा मोर्चा के बिहार प्रदेश अध्यक्ष भारतेंदु मिश्रा एक दिवसीय दौरे पर भागलपुर पहुंचे है। जहां उनके आगमन को लेकर समर्थकों में काफी हर्षित माहौल दिखा है। उनका आगमन बिहार प्रदेश अध्यक्ष बने के बाद पहली बार हुआ है, हालांकि भारतेंदु मिश्रा भागलपुर क्षेत्र के ही रहने वाले हैं। भाजपा युवा मोर्चा के बिहार प्रदेश अध्यक्ष भारतेंदु मिश्रा का भागलपुर की धरती पर आगमन होने के बाद कार्यकताओं द्वारा फूल माला पहनाने के साथ अंग वस्त्र देकर उनका भव्य स्वागत किया।वही प्रदेश अध्यक्ष भारतेंदु मिश्र ने अपने समर्थकों व कार्यकर्ता को प्रेरित करते हुए उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि बिहार सरकार की नाकामी पर जमकर बरसे साथ ही उन्होंने कहा कि संगठन को मजबूत बनाना है और बीजेपी कमल को इस बार भारी बहुमत से खिलाना है, साथ ही उन्होंने कहा कि शक्ति केंद्र स्तर पर, मंडल स्तर पर और प्रखंड स्तर पर संगठन के कार्यकताओं की टीम को मजबूत करना है, साथ ही बूथ कमेटी को भी काफी सक्रिय करना है, कार्यक्रम की शुरूआत भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा बिहार प्रदेश अध्यक्ष भारतेंदु मिश्रा, कहलगांव विधायक पवन यादव, युवा मोर्चा भागलपुर इकाई के जिलाध्यक्ष चंदन ठाकुर, बंटी यादव के अलावे कई अधिकारी व कार्यकताओं ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। उसके बाद भारत माता के वंदना से कार्यक्रम की शुरूआत से की। कार्यक्रम के दौरान दर्जनों भाजपा युवा मोर्चा के पदाधिकारी के अलावा कार्यकर्ता व समर्थकों की भारी संख्या में मौजूदगी रही थी।

दुर्गा पूजा को लेकर थाना परिसर में शांति समिति की बैठक आयोजित की गई

प्रात : किरण ब्यूरो

प्रातः किरण संवाददाता

संग्रामपुर (मुंगेर) दुगार्पूजा शांति एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न कराने को लेकर थाना परिसर में दुगार्पूजा को लेकर शांति समिति की बैठक थानाध्यक्ष रंजन कुमार की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। थानाध्यक्ष श्री कुमार ने कहा कि थाना क्षेत्र में 15 स्थानों पर दुगार्पूजा होता है। संवेदनशील स्थानों पर सीसीटीवी कैमरा लगाने, अत्यधिक भीड़ वाले सड़कों पर वोलन टीयर द्वारा भी निगरानी करने को कहा गया।

प्रखंड विकास पदाधिकारी अजेश कुमार ने कहा कि सभी पूजा समितियों को लाइसेंस अनिवार्य रूप से लेने एवं नियम एवं शर्तो का पालन करने को कहा गया। पूजा समिति को पूजा पंडाल में बिजली वायरिंग का एनओसी लेने का भी निर्देश दिया गया।थानाध्यक्ष ने कहा कि पूजा एवं विसर्जन के दौरान डीजे बजाने पर पूरी तरह प्रतिबंध रहेगा। पूजा पंडाल में सीसीटीवी लगाने का भी निर्देश दिया गया। पूजा के दौरान चिन्हित स्थानों पर मजिस्ट्रेट के नेतृत्व में पुलिस तैनात रहेगी। शांति समिति के सदस्यों का व्हाट्सएप ग्रुप रहेगा,जिसके माध्यम से सभी एक दूसरे के संपर्क में रहेंगे। बैठक में सीओ स्नेहा सत्यम,सुलतानगंज के पुर्व विधायक गणेश पासवान,उप प्रमुख सचिन कुमार,पुर्व जिला पार्षद सदानंद राय,राधे रजक, चैम्बर अध्यक्ष मनोज शाह,शिव कुमार शिवन,नरेश दास , कारु सिंह,प्रकाश सिंह,विनय सिंह, रामानुज शर्मा,मुखिया हरिनंदन यादव,भाजपा मंडल अध्यक्ष राकेश रोशन,नगर पंचायत संग्रामपुर के उप मेयर मनोज साह, मेयर प्रतिनिधि नंदकिशोर यादव सुनील सिंह, राकेश कुमार रोशन, निलेश कुमार,प्रमोद भगत,पोरस यादव,आदि के अलावे दुगार्पूजा मेला समिति सदस्य एवं अध्यक्ष शामिल थे।

डीएम कार्यालय पहुंचे छात्राओं ने मांगों को ले सौंपा ज्ञापन

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। जिले के आसपास क्षेत्र इलाके में अवस्थित सभी बी.इडी कॉलेज के दर्जनों छात्र छात्राएं अपनी मांगों को ले जिलाधिकारी कार्यालय पहुंची। जहां छात्राओं ने जिलाधिकारी से मिलकर अपनी मांगों से संबंधित ज्ञापन सौपा है।

इस दौरान सभी प्रदर्शनकारी बी. इडी के अपीयरिंग छात्र छात्राएं टीचर्स ट्रेनिंग भागलपुर, टीचर्स ट्रेनिंग औद्योगिक प्रक्षेत्र बरारी, टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज धोरैया, पूरनमल बाजोरिया टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज नाथनगर भागलपुर के बी.इडी के सत्र 2022-24 की फाइनल ईयर छात्र-छात्राएं शामिल हैं, जो सीटेट की परीक्षा उत्तीर्ण हो चल रही है। वही प्रदर्शनकारी बी.इडी के छात्रों का साफ तौर पर कहना है कि हम लोग 2022 - 24 सत्र के बी.इडी के फाइनल ईयर के छात्र हैं, हमें भी आगामी होने वाले बीपीएससी परीक्षा में शामिल होने का मौका दिया जाय, साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि अपनी संबंधित मांग से जुड़े आवेदन को बिहार के राज्यपाल, जिला शिक्षा विभाग पटना, भागलपुर के जिलाधिकारी के अलावे कई वरीय पदाधिकारीयों को भेजा है। वही प्रदर्शनकारी छात्रों का कहना था कि एक साथ भारी मात्रा में वैकेंसी निकलने से अच्छा है कि सरकार द्वारा हर वर्ष वैकेंसी निकली जाय जिससे छात्रों को नियमित रोजगार मिलते रहे, वहीं उन्होंने कहा कि हम सभी प्रदर्शन कर रहे छात्र सीटेट पास चल रहे है साथ ही हमलोग नियमित तौर पर करंट स्टूडेंट हैं हमें आगामी बीपीएससी परीक्षा में शामिल होने का मौका दिया जाय जिससे हम लोगों के कौशल शैक्षणिक योग्यता का प्रमाण दिखाने का एक मार्ग मिल सकें।

आगामी 2024 के लोकसभा चुनाव के पूर्व भागलपुर को मिल सकती है एक बड़ी सौगात

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। आगामी 2024 के लोकसभा चुनाव के पूर्व भागलपुर को एक बड़ी सौगात मिल सकती है। केंद्रीय विक्रमशिला विश्वविद्यालय के स्थापना का सपना साकार हो सकता साकार है। विगत 2015 में विक्रमशीला विश्वविद्यालय की स्थापना को लेकर 500 करोड़ की पीएम पैकेज की घोषणा की गई थी। जिसे अब धरातल पर हकीकत में लोगों का सपना पूरा होता दिख रहा है। केंद्र सरकार के 8 साल कार्यकाल पूर्ण होने के बाद कहलगांव क्षेत्र इलाके के मलकपुर अंतीचक में अवस्थित ऐतिहासिक धरोहर को जंनोधार के लिए अथक प्रयास के बाद विक्रमशिला विश्वविद्यालय बनाने को लेकर केंद्र सरकार ने बिहार के शिक्षा विभाग को स्वीकृति दे दी है। विश्वविद्यालय के निर्माण कार्य हेतू फिलहाल 205 एकड़ जमीन चिन्हित किया गया है। जिला प्रशासन भागलपुर डिटेल प्लान बनाकर शिक्षा विभाग के माध्यम से केंद्र सरकार को भेजेगी। आशंका है कि उक्त मसले पर श्रेय लेने का होड़ मचेगी हुई है और केंद्र बनाम राज्य यानी एनडीए बनाम इंडिया की हवा से मामला खटाई में पड़ जाएगा। क्या नीतीश कुमार नालंदा विश्वविद्यालय की तरह विक्रमशिला को केंद्रीय विश्वविद्यालय बनने देंगे ये सवाल खड़े हो रहे हैं लोगों के जहन में अब देखना है कि सरकार अपनी ओर से क्षेत्र की विकास गतिविधियों को लेकर क्या रूख अख्तियार करती हैं।

पूर्व केंद्रीय मंत्री स्वर्गीय रामविलास पासवान का मनाया गया पुण्यतिथि

प्रात : किरण संवाददाता

तारापुर (मुंगेर 8 अक्टूबर) ।देश के दूसरे अंबेडकर के रूप में माने जाने वाले पूर्व केंद्रीय मंत्री स्वर्गीय रामविलास पासवान की पुण्य तिथि रविवार को पार्टी कार्यालय तारापुर पर लोजपा रामविलास के कार्यकताओं द्वारा सादे समारोह के बीच मनाया गया । गौरतलब है कि कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रखंड अध्यक्ष जय राम मंडल ने किया। पुण्यतिथि के मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में लोजपा रामविलास के राष्ट्रीय सचिव मिथिलेश कुमार सिंह ने कहा कि पार्टी के संस्थापक सह पूर्व केंद्रीय मंत्री स्वर्गीय श्री पासवान ने देश व प्रदेश में रहने वाले लोगों के लिए हर मुद्दों पर अपने पूरे राजनीतिक जीवन काल तक शोषित पीड़ित दलित पिछड़ा अति पिछड़ा एवं स्वर्ण की आवाज को हमेशा संसद में रखने का काम किया । आगे कहा कि पूर्व केंद्रीय मंत्री स्वर्गीय श्री पासवान ने देश के 6 प्रधानमंत्री के कार्यकाल में भारत सरकार के केंद्रीय मंत्री के रूप में उन्हें काम करने का मौका मिला। इतना ही नहीं जीवित काल तक इनके ऊपर किसी भी तरह का भ्रष्टाचार के आरोप नहीं लगे।

पूर्व केंद्रीय मंत्री स्वर्गीय श्री पासवान का ही देन हैकि संसद में लगातार आवाज उठाए जाने के कारण खासकर स्वर्ण जाति को दस प्रतिशत आरक्षण का लाभ देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने दिया। स्वर्गीय श्री पासवान ने इस्पात, दूरसंचार, खाद आपूर्ति एवं अन्य कई मंत्रालयों को बखूबी बेहतर तरीके से चलाया। 2014 एवं 2019 में इनके ही पुत्र सह लोजपा रामविलास के राष्ट्रीय अध्यक्ष सांसद चिराग पासवान ने भी जमुई संसदीय क्षेत्र से राजनीति की पहली पाड़ी की शुरूआत कर जमुई लोकसभा को देश और दुनिया के सामने कई बड़े-बड़े महत्वपूर्ण कार्य को किया । कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए युवा लोजपा के प्रदेश सचिव डॉक्टर सर्वेश कुमार ने कहा कि हम सभी कार्यकताओं के द्वारा उनकी सच्ची पुण्यतिथि तभी मानी जाएगी जब हम सभी लोग पूर्व केंद्रीय मंत्री स्वर्गीय श्री पासवान के बताए रास्ते पर चलने का संकल्प ले । सांसद प्रतिनिधि चंद्रशेखर चौधरी ने कहा कि पूर्व केंद्रीय मंत्री स्वर्गीय श्री पासवान हमेशा जात-पात से ऊपर उठकर अपने कुशल राजनीति नेतृत्व का परचम अपनी काम के बदौलत लहराए रखा । इसके पूर्व तारापुर असरगंज संग्रामपुर टेटिया बंबर एवं हवेली खड़गपुर से आए कार्यकताओं ने स्वर्गीय श्री पासवान के तैल चित्र पर पुष्पांजलि कर उन्हें श्रद्धा निवेदित किया । इस मौके पर युवा लोजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष शशि शेखर राणा जीवन सिंह आईटी सेल के जिला अध्यक्ष रोहित सिंह विनोद कुमार सिंह बालदेव पासवान इत्यादि सैकड़ो कार्यकताओं ने भी पुण्यतिथि के मौके पर पूर्व केंद्रीय मंत्री स्वर्गीय श्री पासवान के जीवन वृत्त पर विस्तार पूर्वक प्रकाश डाला।

धीरे-धीरे जानलेवा बनते जा रहा तारापुर - खड़गपुर पीडब्ल्यूडी सड़क

प्रात : किरण संवाददाता

तारापुर। तारापुर- खड़गपुर पीडब्ल्यूडी सड़क मार्ग पिछले कई महीनों से जगह - जगह धसने एवं पिछले चार दिनों की झमाझम बारिश को लेकर जानलेवा साबित होकर रह गया है। गौरतलब है कि पिछले कई वर्षो से जमुई से बालू लदा वाहन का प्रमुख मार्ग लक्ष्मीपुर खड़गपुर तारापुर असरगंज के रास्ते भागलपुर सहित गंगा के उस पार विभिन्न जिलों के लिए 24 घंटे का परिचालन रहता है । लगभग साल भर के दौरान सड़क दुर्घटना में पिता-पुत्र एवं पिता- पुत्री सहित कॉलेज की लड़कियां की मौत भी बालू से लदा ट्रक की चपेट में आने से हुई है। खासकर शाम ढलते ही इस सड़क मार्ग में कब, कौन, और किस समय, ट्रक की चपेट में अपनी जान गंवा बैठेंगे यह कहना बड़ा ही मुश्किल हो गया है ।

तारापुर - खड़गपुर 12 किलोमीटर की दूरी में अनुमंडल प्रशासन : तारापुर ने सबसे खतरनाक ब्लैक स्पॉट के रूप में बेलहरनी नदी को चिन्हित किया है , लेकिन इस ब्लैक स्पॉट के आसपास पीडब्ल्यूडी एवं स्थानीय प्रशासन ने सड़क दुर्घटना पर काबू पाने के लिए किसी तरह का कोई बड़ा पहल आज तक नहीं कर पाया है । ठीक इसी तरह महपुर एवं राजा रानी तालाब के समीप बड़े-बड़े गड्ढे हर रोज लोगों को मौत का आमंत्रण दे रहा है। जहां आए दिन सड़क दुर्घटना से लेकर अनियंत्रित होकर छोटी - बड़ी वाहनों के पलटने से लोगों की मौत हो जाती है। बता दें कि कुछ ही दिनों पहले स्नातक फाइनल परीक्षा के दौरान डगरी नदी के समीप अपने पिता के साथ आर एस कॉलेज तारापुर परीक्षा केंद्र पर परीक्षा देने आ रही पिता एवं पुत्री की मौत हाइवा ट्रक की चपेट में आने से हुई थी। वहीं दूसरी ओर माघी पूर्णिमा के मौके पर सुबह - सुबह बेहद घना कोहरा के बीच सुल्तानगंज गंगा स्नान कर तारापुर के रास्ते जमुई लौट रही श्रद्धालुओं से भरा एक कमांडर जीप जो बेलहरनी नदी के समीप अनियंत्रित होकर दुर्घटनाग्रस्त हो गई । जिसमें महिला की मौत मौके पर ही गाड़ी के नीचे दबने से हो गई। वहीं पिछले महीने अपने भाई के साथ तारापुर कॉलेज से अपना काम निपटाने के बाद अपने भाई के साथ बाइक पर सवार होकर घर आ रही एक छात्रा की मौत सड़क दुर्घटना में हुई है।

जनसंवाद कार्यक्रम के जरिये सरकारी योजनाओं की दी गयी जानकारी

प्रात : किरण संवाददाता

पूर्णिया । सदर अनुमंडल अंतर्गत कसबा प्रखंड के मल्हरिया पंचायत में जिला प्रशासन द्वारा जनसंवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उक्त कार्यक्रम में जिला पदाधिकारी पूर्णिया कुंदन कुमार, उप विकास आयुक्त साहिल, अपर समाहर्ता के डी प्रोज्जवल सहित जिले के सभी विभागों के पदाधिकारी द्वारा उपस्थित जनसमूह को जिले में संचालित सरकार की महत्वपूर्ण विकासात्मक एवं जन कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी। साथ ही लोगों से फीडबैक भी प्राप्त किए गए। मालूम हो कि सरकार के विभिन्न महत्वपूर्ण योजनाओं से आमजनों को अवगत कराने तथा उनसे सुझाव एवं प्रतिक्रिया प्राप्त करने के मद्देनजर जिला प्रशासन द्वारा पंचायतों में जनसंवाद कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। जनसंवाद कार्यक्रम के दौरान जिला पदाधिकारी कुन्दन कुमार द्वारा कहा गया कि जनसंवाद कार्यक्रम का आयोजन कर ग्रामीणों से सुझाव एवं प्रतिक्रियाएं ली जा रही है।

ताकि सरकार द्वारा संचालित विकासात्मक एवं कल्याणकारी योजनाओं का क्रियान्वयन और बेहतर तरीके से किया जा सके। उन्होंने उपस्थित ग्रामीणों से कहा कि सरकार समाज के अंतिम पायदान के लोगों के विकास के लिए कई योजनाओं का संचालन कर रही है। उन योजनाओं को जमीन पर उतरने के लिए जिला प्रशासन आपके साथ है।

जन संवाद कार्यक्रम के माध्यम से जिला प्रशासन आपसे आपके द्वारा की जा रही बेहतर चीजों को समझने और उनमें आ रही समस्याओं को कैसे दूर किया जाए, यही जनसंवाद कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है। जिलाधिकारी ने कहा कि राज्य सरकार का लगातार प्रयास है कि कैसे हर व्यक्ति की जिंदगी को बेहतर बनाया जाए। कोई भी इंसान या समाज परफेक्ट नहीं होता उसे परफेक्शन की ओर ले जाया जाता है। राज्य सरकार गावों को स्मार्ट विलेज बनाने के लिए कई तरह की योजनाएं चल रही है। उसके अंतर्गत हर घर नल जल, हर गली सड़क, मुख्यमंत्री सोलर स्ट्रीट लाइट योजना एवं अन्य योजनाओं के तहत विकासात्मक कार्य लगातार किए जा रहे हैं। राज्य सरकार ने शिक्षा व्यवस्था को इतना बेहतर बनाया की आज हर जिले में इंजीनियरिंग एवं मेडिकल कॉलेज खोले गए ताकि हमारे युवा शिक्षित होकर देश और विदेश के अच्छे संस्थानों में प्लेसमेंट पाए तथा तकनीकी शिक्षा को प्राप्त करें। जन संवाद कार्यक्रम में स्वास्थ्य विभाग द्वारा स्टॉल लगाकर कैंसर के लक्षण की जांच एवं शुगर तथा बीपी की जांच किया गया और स्वस्थ रहने के लिए लोगों जागरूक भी किया गया। स्टॉल के माध्यम से गर्भवती महिलाओं तथा नवजात शिशु के स्वास्थ्य जांच को लेकर तिथि वार हैंड बिल/कैलेंडर का भी वितरण किया गया है।

एकजुटता के बल पर ही कुशवाहा समाज का विकास संभव : महेंद्र प्रसाद

प्रात : किरण संवाददाता

पूर्णिया । पूर्णिया के एमराल्ड होटल में कुशवाहा की गरिमा बिहार प्रदेश के संयोजक मनोज कुमार सिंह के द्वारा एक विचार गोष्ठी आयोजित किया गया है। जिसका विषय वर्तमान समय में कुशवाहा समाज के लोगों की दशा और राजनैतिक दिशा था। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि झारखंड विधानसभा के पूर्व सचिव और धनवाद के जिला एवं सत्र न्यायाधीश महेंद्र प्रसाद थे। महेंद्र प्रसाद ने अपने वक्तव्य में यह स्पष्ट किया कि कुशवाहा समाज के लोगों का गौरवशाली अतीत रहा है और आजकल इनकी स्थिति काफी दयनीय हो गई है जिसके कारण कुशवाहा जाति के लोग एकजूट नहीं है और ये अभी बहुत सारे खेमे में बटे हुए हैं। कुशवाहा समाज के लोगों के विकास के लिए एकजुटता बहुत जरूरी है तभी कुशवाहा समाज के लोगों का कल्याण हो सकता है। इस सभा में महिला नेत्री मीनू सिंह ने कहा कि आज कुशवाहा समाज के लोगों को एक सुत्र में जोड़ने के लिए हर संभव प्रयास किया जाना चाहिए और इस काम महिलाए भी पीछे नहीं रहेगी। वे भी पुरूषों के कदम से कदम मिलाकर चलने की कोशिश करेगी। संयोजक मनोज कुमार सिंह कुशवाहा ने कहा कि आज के दौर में कुशवाहा समाज के लोग अनेकों खेमे में बटे हुए हैं उन्हें एकजुट करने की नितांत आवश्यकता है ताकि कुशवाहा समाज के लोगों का मतों का बिखराव रोकने के लिए प्रयास करना चाहिए। उन्होंने कहा कि आज जो जातिय जनगणना का प्रारूप प्रकाशित किया गया है उसका हम विरोध करते हैं क्योंकि पहले की जनगणना के मुकाबले आज की जातिय जनगणना में कुशवाहा समाज के लोगों की संख्या पहले के मुकाबले आधी से भी कम दिखाई जा रही है जो किसी भी किमत पर विश्वसनीय नहीं हो सकता है। बैठक में तारांनद सिंह, पूर्व बीडीओ, प्रदीप कुमार मेहता, मिथिलेश कुमार उर्फ चून्नू, मुखिया प्रतिनिधि खुटटी धुनैली पंचायत श्रीनगर प्रखंड दिनेश कुमार सिंह, कदवा कटिहार संजय कुमार सरफरोश, खगड़िया सहित कई लोग उपस्थित थे।

लोजपा नेताओं ने मनाया पूर्व केंद्रीय मंत्री रामविलास पासवान की पुण्यतिथि

प्रात : किरण संवाददाता

पूर्णिया । लोक जनशक्ति पार्टी एवं दलित सेना के संस्थापक पूर्व केंद्रीय मंत्री पद्मभूषण रामविलास पासवान की पुण्यतिथि कला भवन पूर्णिया में आयोजित की गई। राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पार्टी के वरिष्ठ नेता माधव सिंह ने भारत सरकार से करोड़ों कार्यकताओं के प्रेरणा स्रोत पद्मभूषण पूर्व केंद्रीय मंत्री रामविलास पासवान को भारत रत्न से सम्मानित करने की मांग की है। उन्होंने कहा कि हम सबों के अभिभावक रामविलास पासवान जी भारत रत्न डॉ भीमराव अम्बेदकर के बाद देश के सबसे बड़े दलित नेता थे। उन्होंने सामाजिक न्याय को धरातल पर उतरने का काम किया। पद्मभूषण रामविलास पासवान ने पूरा जीवन सामाजिक न्याय, वंचितों, दलितों, शोषितो और पिछड़ो के लिए समर्पित किया।

वह सभी वर्गों के साथ में लेकर चलने वाले नेता थे। किसान सेल के जिला अध्यक्ष बद्री प्रसाद मेहता ने कहा कि देश के गरीबों को मुफ्त में 5 किलो चावल 1 किलो दाल देने लिए रामविलास पासवान और देश के नायक प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हृदय से धन्यवाद देता हूं। कार्यक्रम के अध्यक्षता दलित सेना के जिला अध्यक्ष बिहारी लाल पासवान ने की। कार्यक्रम में लेबर सेल के जिला अध्

कैरोल लोम्बार्ड और गोल्डी हॉन जैसी दिग्गज अदाकारा संग तुलना पर भूमि पेडनेकर ने कही यह बात

बॉलीवुड एक्ट्रेस भूमि पेडनेकर इन दिनों अपनी फिल्म थैंक यू फॉर कमिंग को लेकर सुर्खियों में हैं। यह फिल्म सिनेमाघरों में रिलीज हो चुकी है। भूमि पेडनेकर ने अपने बोल्ड अभिनय के लिए हमेशा प्रशंसा प्राप्त की है। पश्चिमी मीडिया ने भूमि के अभिनय की तुलना कैरोल लोम्बार्ड और गोल्डी हॉन जैसे अभिनय उद्योग के दिग्गज सितारों से की और अभिनेत्री का रुतबा आसमान छू गया। इस बारे में भूमि पेडनेकर ने कहा, थैंक यू फॉर कमिंग में मेरे प्रदर्शन के कारण मीडिया ने मेरी तुलना कैरोल लोम्बार्ड और गोल्डी हॉन जैसे सर्वकालिक महान अभिनय कलाकारों से की, ये मेरे लिए बहुत संतुष्टि की बात है। मैं इस सराहना को जीवन भर संजो कर रखूंगा। लोग कहते हैं कि मैंने जीवन भर की उपलब्धि हासिल कर ली है, मैं उन पर विश्वास नहीं करती। मुझे मिल रहे प्यार से मैं काफी अभिभूत हूं। एक्ट्रेस ने कहा, एक अभिनेत्री के तौर पर मैं हमेशा धारा के विपरीत तैरना चाहती थी। चुनौती जितनी बड़ी होगी और कार्य जितना कठिन होगा, आपके पास इस सांचे को तोड़ने के उतने ही अधिक अवसर होंगे। ऐसा माहौल मेरे लिए प्रेरणादायी है। मैं अपने फिल्म निर्माताओं को धन्यवाद देती हूं जिन्हें मेरे प्रयासों पर विश्वास था और मैं उनके दृष्टिकोण के लिए एक कदम आगे बढ़ूंगी। भूमि टीवाईएफसी में मुख्य अभिनेत्री के रूप में आ रही हैं, जो पितृसत्तात्मक दुनिया में महिला खुशी के महत्वपूर्ण विषय पर आधारित हैं। वह कहती हैं, करण बुलानी एक अविश्वसनीय रूप से प्रतिभाशाली निर्देशक हैं और मैं थैंक यू फॉर कमिंग के लिए रिया कपूर और एकता कपूर जैसे प्रतिभाशाली, दूरदर्शी निर्माताओं को पाकर खुद को भाग्यशाली महसूस करती हूं। भूमि ने कहा, उन्होंने मुझे एक ऐसा फिल्म अनुभव दिया है जो जीवन भर याद रहेगा और उन्हें धन्यवाद देने के लिए मेरे पास शब्द नहीं होंगे। यह हर किसी के लिए एक आवश्यक फिल्म है – लड़कियों और लड़कों को अवश्य देखनी चाहिए। क्योंकि वह एक बहुत ही महत्वपूर्ण और प्रासंगिक विषय पर टिप्पणी कर रहे हैं। वह कहती हैं, एक लड़की के अपने अधिकार हैं। महिला को उसका अधिकार है। उन्हें इन अधिकारों का प्रयोग करने के अवसर का जश्न मनाना चाहिए। टीवाईएफसी स्त्रीत्व का उत्सव है और इस फिल्म का शीर्षक रखते हुए मुझे बेहद गर्व है। यह एक महत्वपूर्ण संदेश देने का साधन बन गया। कहा कि मैं इस फिल्म की कमाई के बारे में नहीं कहूंगा लेकिन मुझे इस फिल्म पर बहुत प्राउड है।

फुल टशन में हिना खान टीवी पर करेंगी वापसी

हिना खान ने ये रिश्ता क्या कहलाता है छोड़ने के बाद अपने करियर को और ऊंचाइयों पर ले गई हैं। उस शो को छोड़ते ही वह बिग बॉस 11 में जा पहुंचीं। ट्रॉफी तो वह जीतते जीतते रह गईं लेकिन उसके बाद उनकी इमेज पूरी तरह से बदल गई। अभी तक दर्शकों ने उन्हें सीधी सादी बहू के रूप में देखा था। बिग बॉस से वह स्टाइलिश डीवा के रूप में सभी को प्रभावित करने में कामयाब रहीं। पिछले कुछ सालों में हिना फिल्मों, वेब सीरीज और म्यूजिक वीडियो में व्यस्त रहीं। अब ऐसा लग रहा है वह फिर से टीवी पर वापसी करने जा रही हैं। वह डांस रियलिटी शो में धांसू डांस करती दिख सकती हैं। झलक दिखला जा 11 जल्द ही शुरू होने वाला है। यह टीवी के मोस्ट पॉपुलर शोज में से है। कई कंटेस्टेंट के नाम पहले ही सामने आ चुके हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, शोएब इब्राहिम, शिवांगी जोशी, सुंबुल तौकीर खान, मनीषा रानी, सुरभि चांदना, उर्वशी ढोलकिया, डेजी शाह, शिव ठाकरे और फैजल शेख नजर आएंगे। इस लिस्ट में अब हिना खान का नाम भी जुड़ सकता है।

पहले भी मिला ऑफर

सूत्र के हवाले बताया कि हिना खान कंटेस्टेंट के रूप में झलक दिखला जा 11 में हिस्सा ले सकती हैं। हिना को पहले भी झलक दिखला जा और नच बलिए का ऑफर दिया गया था। अब ऐसा लगता है कि वह रियलिटी शो के जरिए टीवी पर वापसी की तैयारी में हैं।

कौन होंगे शो के जज?

झलक दिखला जा में वैसे तो हर साल माधुरी दीक्षित और करण जौहर जज के रूप में होते हैं लेकिन इस बार वे नहीं होंगे। रिपोर्ट है कि मलाइका अरोड़ा और फराह खान जज की कुर्सी पर बैठेंगी। उनके साथ अरशद वारसी होंगे जो 6 साल बाद टीवी पर लौटेंगे।

मिशन रानीगंज मेरी बेस्ट फिल्म

एक्टर अक्षय कुमार ने कहा कि हम एक्टर्स केवल अच्छे रिस्पॉन्स के लिए तरसते हैं। मैं फिल्म के रिस्पॉन्स से बहुत ज्यादा खुश हूं। ये मेरी अब तक कि सबसे बेस्ट फिल्म है। वहीं अक्षय का मानना है कि फिल्में प्रमोशन से नहीं चलती हैं। उन्होंने कहा कि फिल्म रानीगंज की स्क्रिप्ट सुनते ही मुझे ये कहानी बहुत पसंद आ गई थी। मैं ऐसी फिल्में करना पसंद करता हूं, जो समाज को अच्छा मैसेज दे। फिल्म मिशन रानीगंज ने पहले दिन बॉक्स ऑफिस पर 2.8 करोड़ रुपए की कमाई की है। मुझे जसवंत सिंह गिल ने कहा था कि 'ये फिल्म तुम सिख बनकर करना और पग जरूर पहनना।'

मेरे हिसाब से प्रमोशन करना बेफिजूल है

अक्षय ने कहा मेरे हिसाब से प्रमोशन करना बेफिजूल है। मैंने पहले कई फिल्मों के प्रमोशन नहीं किए लेकिन उनका रिस्पॉन्स अच्छा है। कुछ ऐसी भी फिल्में हैं जिनका प्रमोशन करने के बाद भी रिस्पॉन्स सही नहीं था। जब लोग एक दूसरे को फिल्म देखने की सलाह देते हैं, तो वो सही मायने में प्रमोशन होता है।

क्या यह फिल्म नेशनल अवॉर्ड की हकदार है?

इस पर अक्षय ने कहा कि नेशनल अवॉर्ड ही नहीं बल्कि जो भी अवॉर्ड हैं। टीनू देसाई उन सबके हकदार हैं। उन्होंने इस फिल्म के लिए बहुत मेहनत किया है। वो पिछले 4 सालों से इस स्टोरी पर काम कर रहे हैं। उन्होंने

रानीगंज जैसी फिल्म बनाना कितना चैलेंजिंग होता है?

फिल्म की प्रोड्यूसर दीपशिखा देशमुख ने कहा कि ऐसी फिल्में बनाना बहुत बड़ा चैलेंज होता है। फिक्शन फिल्मों में आप अपने अनुसार कहानी बदल सकते हैं। रियल स्टोरी बेस्ड फिल्में बनाना बहुत बड़ी जिम्मेदारी होती है। इस फिल्म में हम और अच्छा भी कर सकते थे। फिलहाल कम समय में हमने अपना बेस्ट दिया था।

फिल्म की कहानी क्या है?

फिल्म में एक इंसान की सूझबूझ और अदम्य साहस की कहानी दिखाई गई है। बात 1989 की है, जसवंत सिंह गिल और उनकी टीम ने रानीगंज में कोयले की खदान से 65 मजदूरों को निकालने के लिए एक रेस्क्यू मिशन किया था। मजदूर जिंदा रहने की आशा छोड़ देते हैं ,ऐसे में जसवंत सिंह गिल उनके लिए मसीहा बनकर आते हैं। जसवंत सिंह गिल दृढ़ निश्चय के साथ मजदूरों को बचाने में लग जाते हैं और आखिरकार सफल भी होते हैं।

झलक दिखला जा 11 में नजर आ सकती हैं निक्की तंबोली

एक्ट्रेस निक्की तंबोली के सभी प्रशंसकों के लिए एक बेहद आश्चर्यजनक अपडेट आ रहा है। बिग बॉस में अपने शानदार स्टारडम के बाद से सभी सही कारणों से मनोरंजन क्षेत्र में मांग में रहने वाली इस धमाकेदार अभिनेत्री को विश्वसनीय स्रोतों के अनुसार बिग बॉस में अपना जलवा बिखेरनेवाली खूबसूरत और हॉट अभिनेत्री निक्की तंबोलीआज काल काफी डिमांड में है।

सूत्रों की माने तो इस अभिनेत्री को झलक दिखला जा के 11वें सीज़न के लिए संपर्क किया गया है। हालांकि निक्की तंबोलीं की और से अभी कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं की गई है, लेकिन कहा जा रहा है कि शो के निर्माता निक्की के स्टारडम को भुनाने के लिए उनको शो में लेने के लिए बेहद उत्सुक हैं। सूत्र ये भी बात रहे है की निर्माता निक्की की क्षमता को जानते है की वो आसनी से दर्शकों को खींच लाती है, तो यही वजह है की मेकर्स यह सुनिश्चित करने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास कर रहे हैं कि वे निक्की तम्बोली शो का हिस्सा बने। पिछले कुछ वर्षों में, निक्की तंबोली ने म्यूजिक वीडियो, रियलिटी शो में अपने शानदार प्रदर्शन से लोगों का ध्यान खींच है और अब, लगता है की वह अपनी आगामी ओटीटी रिलीज पप्पी लव के साथ ओटीटी स्पेस पर भी कब्ज़ा कर लेगी, जिससे वह अपना ओटीटी डेब्यू कर रही है। निक्की इस प्रोजेक्ट में सबसे महत्वपूर्ण किरदार निभाने के लिए पूरी तरह तैयार है और कहानी उनके किरदार के इर्द-गिर्द ही घूमती है। जबकि प्रशंसकों को पहले से ही निक्की को उनके ओटीटी डेब्यू में देखने के लिए अपने आप को संभाल रखा है वहां, अब रियलिटी शो में उनकी एंट्री की खबरें उनके चाहकों का अपने आप को संभालना और भी मुश्किल कर देंगी।

12वीं फेल में अपने किरदार को असल दिखाने के लिए विक्रांत मैसी ने की इस तरह की तैयारी

विक्रांत मैसी अपनी कला के प्रति उल्लेखनीय समर्पण के लिए जाने जाते हैं। वह जल्द ही विधु विनोद चोपड़ा की फिल्म 12वीं फषल में नजर आने वाले हैं। फिल्म 12वीं फेल में भी अपने इम्पैक्टफुल रोल से विक्रांत ने एक बार फिर दर्शकों को प्रभावित किया है। हाल में सामने आए फिल्म के ट्रेलर को दर्शकों, फिल्म उद्योग और आलोचकों से व्यापक प्रशंसा मिली है, जिसमें फिल्म में विक्रांत की बिल्कुल अलग उपस्थिति पर खास ध्यान दिया गया है। चंबल के बीहड़ इलाकों से आने वाले एक किरदार को प्रामाणिक रूप से निभाने के लिए, 12वीं फेल में विक्रांत की भूमिका ने उनके कैरेक्टर की पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए एक निश्चित लुक की मांग की। ऐसे में कुछ अलग करते हुए विक्रांत ने इस बदलाव को हासिल करने के लिए एक नेचुरल अप्रोच को चुना और अपने काम के प्रति समर्पण और प्रामाणिकता के लिए हर मुमकिन कोशिश की। विक्रांत बताते हैं, मैंने यह सुनिश्चित करने के लिए बहुत गहन तैयारी की कि मेरी बोली और लुक, खासकर से, चंबल में पले-बढ़े एक व्यक्ति के अनुरूप हों। जो टैन जैसा दिखता है वह वास्तव में असली सनबर्न है। मैं तेल लगाता हूं और बैठ जाता हूं 2-3 घंटे तक छत पर। एक समय पर, मेरी त्वचा वास्तव में छिलने लगी थी। यह सब यह सुनिश्चित करने के लिए था ताकि फिल्म की प्रामाणिकता, किरदार का सम्मान किया जाए। ट्रेलर में विक्रांत मुख्य भूमिका में हैं और इसमें चंबल के एक छोटे से गांव से दिल्ली के मुखर्जी नगर में यूपीएससी की तैयारी तक की उनकी यात्रा की झलक दिखी है। एक वास्तविक कहानी पर आधारित, यह फिल्म यूपीएससी प्रवेश परीक्षा देने वाले लाखों छात्रों के संघर्षों पर आधारित है। लेकिन साथ ही, यह उस एक परीक्षा से आगे निकलती है और लोगों को असफलताओं के सामने हिम्मत न हारने, सभी बाधाओं से लड़ने की भावना को जीवित रखने के लिए प्रोत्साहित करती है।

जूनियर एनटीआर की देवरा दो पार्ट में होगी रिलीज

साउथ सुपरस्टार जूनियर एनटीआर जल्द ही फिल्म देवरा में नजर आने वाले हैं। कोरातला शिवा के निर्देशन में बन रही इस फिल्म से जाह्नवी कपूर साउथ इंडस्ट्री में कदम रखने जा रही हैं। वहीं इस फिल्म में सैफ अली अली विलेन के रोल में नजर आने वाले हैं। वहीं अब मेकर्स ने देवरा को लेकर एक बड़ी अपडेट दी है। कोरातला शिवा ने फिल्म देवरा के एक्स अकाउंट पर एक लेटेस्ट वीडियो शेयर किया है। इसके साथ उन्होंने बताया की फिल्म देवरा दो पार्ट में रिलीज होगी। इस फिल्म का पहला पार्ट 5 अप्रैल 2024 को सिनेमाघरों में रिलीज किया जाएगा। वीडियो में निर्देशक ने कहा, ये फिल्म तटीय भारत की भूली हुई भूमि पर आधारित है और इसका कैनवास बहुत बड़ा है। जैसे ही हमने फिल्म की शूटिंग शुरू की, कैनवास अपने आप सामने आ गया और बड़ा और बड़ा होने लगा। फिल्म में हर किरदार का अपना दमखम है और उन्हें गहराई से और विस्तार से दर्शाने की जरूरत है, जिसे हम एक पार्ट में सही तरीके से नहीं दिखा सकते। उन्होंने कहा, इसलिए हमने इस बड़ी कहानी और कैनवास को दो पार्ट्स में बताने का फैसला लिया है। कहानी बड़े पैमाने पर बनाई जाएगी।

नेपोटिज्म पर बोले सनी देओल

सनी देओल के छोटे बेटे राजवीर देओल ने फिल्म 'दोनों' से बॉलीवुड डेब्यू किया है। 6 अक्टूबर को उनकी फिल्म सिनेमाघरों में रिलीज हुई है। हाल ही में बेटे की फिल्म का प्रमोशन करते हुए सनी देओल ने इंडस्ट्री में नेपोटिज्म को लेकर बात की और उन्होंने इस पर अपना पक्ष रखा। सनी ने कहा कि अगर एक पिता अपने बेटे के बारे में बेहतर नहीं सोचेगा, तो कौन सोचेगा? इंटरव्यू में सनी ने कहा- 'लोग नेपोटिज्म के बारे में बात करते रहते हैं, मुझे काफी समय तक इसका मतलब नहीं पता था। मैं सोचता था कि ये है क्या? फिर जब इसका मतलब पता चला तब मैंने बाद में सोचा कि अगर एक पिता अपने बच्चे के लिए नहीं करेगा, तो भला किसके लिए करेगा?' सनी ने आगे कहा- 'चाहे वह एक्टिंग हो या फिर कोई भी इंडस्ट्री, हर पिता यही सोचता है कि वह अपने बच्चे की जिंदगी को कैसे आरामदायक बनाए।'

नेपोटिज्म शब्द का कोई मतलब नहीं

सनी ने कहा- 'नेपोटिज्म शब्द ज्यादातर वो लोग इस्तेमाल करते हैं, जिन्हें किसी कारण से सक्सेस नहीं मिली होती है। वे अपनी निराशा व्यक्त करने के लिए इस शब्द का इस्तेमाल करते हैं, जबकि इस शब्द का कोई मतलब नहीं है।' अपने परिवार का उदाहरण देते हुए सनी ने कहा- मेरे पिता ने अपनी पहचान खुद बनाई। आज मैं, बॉबी या अभय जो कुछ भी हैं, वह हमारी अपनी पहचान है। बेशक, अब मुझे पता है कि पिता होने का क्या मतलब होता है। अब मैं एक पिता का दर्द और डर समझता हूं, लेकिन राजवीर की जर्नी उसकी अपनी है।

गोस्टोर की विशेषज्ञ सहायता प्राप्त खरीदारी: ऑनलाइन शॉपिंग की ऐसी सुविधा, जो अमेजन या फ्लिपकार्ट पर नहीं

नई दिल्ली, एजेंसी। गोस्टोर डॉट कॉम, घरेलू उपकरणों की खरीदारी के लिए एक ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म है, एक्सपर्ट एसिस्टेड बाइंग (विशेषज्ञ सहायतायुक्त खरीदारी) इसकी एक अनूठी पहल है, अपने इस विशेष गुण के कारण ऑनलाइन शॉपिंग में इस प्लेटफॉर्म ने एक अभूतपूर्व बदलाव किया है। यही गुण इसे इसके अन्य प्रतियोगियों जैसे अमेजन और फ्लिपकॉर्ट से अलग करती है, क्योंकि यह व्यक्तिगत मार्गदर्शन ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म पर ग्राहकों के खरीदारी के अनुभव को शानदार बना देता है।

दूसरे प्रमुख प्लेटफॉर्म पर कई तरह की केटेगरी हैं जबकि गोस्टोर डॉट कॉम केवल इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरणों की विक्री पर ही आधारित प्लेटफॉर्म है। केवल इलेक्ट्रॉनिक घरेलू उपकरणों की विक्री पर विशेष रूप से केंद्रित होने के कारण गोस्टोर डॉट कॉम इससे जुड़ी ग्राहकों की सभी जरूरतों को पूरा करता है जिससे यहां से खरीदारी करने वाले ग्राहकों को शानदार अनुभव मिलता है।

÷क्लिक-एंड-मोर्टार÷ एक अभिनव मंच है जो रिटेल उपभोक्ताओं की भौतिक और डिजिटल दुनिया को एक में ही समाहित करता है। यह स्वीकार करता है कि आधुनिक उपभोक्ता मात्र उत्पादों से कहीं अधिक की इच्छा रखते हैं, वे खरीदारी से पहले सामान को अच्छी तरह से जांचना और परखना चाहते हैं। गोस्टोर डॉट कॉम इसी पारंपरिक प्रायोजित कड़ी को खत्म करता है, जिससे समझदार उपभोक्ताओं और दूरदर्शी खुदरा विक्रेताओं दोनों को कई तरह के फायदे मिलते हैं।

विशेषज्ञ सहायता युक्त खरीदारी करने की सुविधा गोस्टोर डॉट की एक खास विशेषता है जो इसे दूसरे प्रतिभागियों से अलग करती है। कुछ निम्न बातें हैं जो इसे खास बनाती हैं-

व्यक्तिगत मार्गदर्शन- हालांकि अमेजन और फ्लिपकार्ट ग्राहकों को एक विशाल उत्पाद चयन की पेशकश करते हैं, लेकिन उनके पास अक्सर प्रत्येक खरीदार की विशिष्ट जरूरतों के अनुरूप व्यक्तिगत

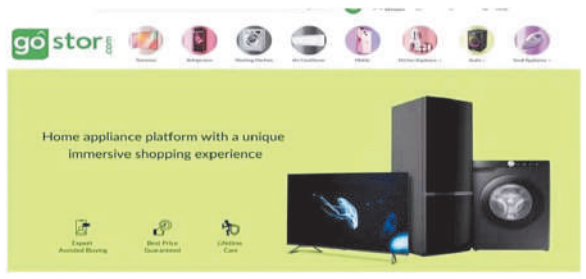

मार्गदर्शन का अभाव होता है। वहीं दूसरी ओर, गोस्टोर डॉट कॉम की विशेषज्ञ सहायता युक्त खरीदारी की सुविधा ग्राहकों को लाइव

वीडियो कॉल के माध्यम से अनुभवी इलेक्ट्रॉनिक्स विशेषज्ञों से जुड़ने का अवसर देती है, जिससे वे व्यापक स्तर पर एक-एक करके अपनी जरूरतों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। व्यक्तिगत मार्गदर्शन से ग्राहकों को अपनी जरूरतों के अनुसार ही उत्पादों का चुनाव करने में आसानी होती है।

वास्तविक व्यावहारिक अनुभव- जबकि अमेजन और फ्लिपकार्ट मुख्य रूप से उत्पाद के विवरण और ग्राहक की समीक्षाओं पर निर्भर करते हैं, वहीं गोस्टोर डॉट कॉम अपने ग्राहकों को वास्तविक व्यावहारिक अनुभव प्रदान करता है। यह अभूतपूर्व दृष्टिकोण ग्राहकों को निश्चित समय में उत्पादों को समझने और जानने में मदद करता है, जिससे उन्हें खरीदारी करने से पहले सुविधाओं और कार्यक्षमता की गहन समझ मिलती है।

विशेषज्ञ जिनपर आप कर सकते हैं भरोसा- गोस्टोर डॉट कॉम के विशेषज्ञ इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरणों के क्षेत्र के जानकार होते हैं। प्रश्नों का उत्तर देने, उत्पाद के बारे में पूरी जानकारी प्रदान करने वाले ये विशेषज्ञ खरीदारी के अनुभव को समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह जानकारी ग्राहकों को अच्छी तरह से निर्णय लेने में मदद करती है, जिससे खरीदारी के बाद उनको अधिक संतुष्टि मिलती है।

घर पर मिलने वाली सुविधा- यह ऐसी दुनिया है जहां आसानी से मिलने वाली सुविधा ही सर्वोपरि है, हमारा ये प्लेटफॉर्म ग्राहकों को आसानी से उनके घर पर ही भौतिक रूप से सीधे इलेक्ट्रॉनिक स्टोर से विडियो के माध्यम से विशेषज्ञ की सहायता उपलब्ध कराती है। इससे कई दुकानों पर जाने या केवल ऑनलाइन जानकारी पर निर्भर रहने की परेशानी समाप्त हो जाती है, इस नई सुविधा के साथ, घर बैठे खरीदारी करना न केवल कुशल बल्कि आनंददायक भी बन जाती है। खरीदारी के बाद भी सहायता- गोस्टोर डॉट कॉम अपने ग्राहकों के प्रति खरीदारी के बाद भी प्रतिबद्ध रहता है। यह समझता है कि खरीदारी से पहले होने वाली परेशानी खरीदारी के बाद भी बनी रह सकती है। यही कारण है कि गोस्टोर डॉट कॉम सेवाओं की एक श्रृंखला प्रदान करता है, जिसमें सर्विसिंग लागत को कम करने के लिए विस्तारित वारंटी और सुनिश्चित बाय बैक गारंटी भी शामिल है, जो उपभोक्ताओं को भविष्य में उनके सामान का उचित दाम मिलने के साथ उसे अपडेट करने में भी मदद मिलती है। खरीदारी के बाद भी मिलने वाली ये सेवाएं न केवल मानसिक शांति प्रदान करती हैं बल्कि भविष्य के लिए योजना बनाने में आत्मविश्वास भी पैदा करती हैं - ये ऐसी खास सुविधायें हैं जो गोस्टोर डॉट कॉम को अमेजन या फ्लिपकार्ट की प्रतिस्पर्धा से अलग करती हैं।

विशेषज्ञ सहायता युक्त खरीदारी की शुरुआत करके गोस्टोर डॉट कॉम ने इलेक्ट्रॉनिक्स उत्पादों के लिए ऑनलाइन शॉपिंग परिदृश्य को फिर से परिभाषित किया है। यह अनूठी और अत्यधिक व्यक्तिगत सुविधा पारंपरिक ऑफलाइन खरीदारी और ऑनलाइन सुविधा के बीच के अंतर खत्म करती है, यह ग्राहकों को एक ऐसा अनुभव प्रदान करती है जो अन्य ई-कॉमर्स प्लेटफार्म पर उपलब्ध अनुभव से कहीं बेहतर है।

रिलायंस जिओ की साथ जुड़े महेंद्र सिंह धोनी, इस ब्रांड के बने एंबेसडर

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी नए रोल में नजर आएंगे। मुकेश अंबानी की रिलायंस इंडस्ट्रीज के साथ महेंद्र सिंह धोनी ने नई पारी की शुरुआत की है। रिलायंस इंडस्ट्रीज के जियो मार्ट का नया ब्रांड एंबेसडर महेंद्र सिंह धोनी को बनाया गया है। ये पहला मौका नहीं है जब महेंद्र सिंह धोनी किसी कंपनी की ब्रांड एंबेसडर बनाए गए हो। किसी पहले भी वो कई कंपनियों के ब्रांड एंबेसडर बन चुके है। रिलायंस इंडस्ट्रीज की ओर से जानकारी दी गई है कि महेंद्र सिंह धोनी जिओ मार्ट के ब्रांड एंबेसडर बनाए गए हैं। कंपनी ने बयान जारी कर कहा कि भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी जिओ मार्ट के ब्रांड एंबेसडर है। फेस्टिवल सीजन शुरू होने से पहले कंपनी ने यह बड़ा बदलाव किया है। इसके साथ ही फेस्टिव सीजन के लिए फेस्टिवल कैंपेन का नाम भी कंपनी ने बदल दिया है। जिओ मार्ट का फेस्टीव कैंपेन अब जियो उत्सव, सेलिब्रेशन ऑफ इंडिया' के नाम से जाना जाएगा। इस कैंपेन के अंतर्गत सेल आठ अक्टूबर से शुरू होगी। बता दें कि महेंद्र सिंह धोनी ब्रांड एंबेसडर के तौर पर 45 सेकंड के एक फिल्म में भी नजर आने वाले है। जिओ मार्ट का ब्रांड एंबेसडर बनाए जाने पर खुद महेंद्र सिंह धोनी ने भी खुशी जाहिर की है। उन्होंने कहा कि भारत अपनी जीवंत संस्कृति, लोगों और त्योहारों के लिए जाना जाता है। जिओ मार्ट का जिओ उत्सव भी इसी का प्रतीक है। मैं जिओ मार्ट के साथ जुड़ने पर बेहद खुश हूं।

एचसीएमसीटी मणिपाल हॉस्पिटल, दिल्ली ने हृदय रोग के लिए भोपाल में विशेष ओपीडी शुरू की

भोपाल, आज दिल्ली-स्थित एचसीएमसीटी मणिपाल हॉस्पिटल्स ने अक्षय हॉस्पिटल, भोपाल के साथ गठबंधन में अपनी स्पेशलाईज़्ड कार्डियो ओपीडी शुरू की। इस विशेष ओपीडी में क्रोनिक हृदय रोग के पीड़ितों का इलाज किया जाएगा। इस ओपीडी के लिए मशहूर हार्ट सर्जन, डॉ. युगल किशोर मिश्र हर माह भोपाल का दौरा करेंगे, और हृदय रोगियों को विशेषज्ञ परामर्श के साथ विश्वस्तरीय इलाज, जैसे मिनिमली इनवेसिव और रोबोटिक सर्जरी प्रदान करेंगे।

भारत में बढ़ते हृदय रोग जन स्वास्थ्य की एक बड़ी समस्या बनते जा रहे हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लूएचओ) के अनुसार, हृदय रोग भारत में होने वाली मौतों का मुख्य कारण हैं, जिनकी वजह से 25 प्रतिशत मौतें होती हैं। भारत में हृदय रोग की बढ़ती घटनाओं के अनेक कारण हैं, जिनमें अन्य रोगों की मौजूदगी, जीवनशैली, उम्र, और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं की कम उपलब्धता शामिल है। इन वजहों से लोगों, परिवारों और समुदायों के स्वास्थ्य पर गहरा असर हो सकता है।

कच्चे तेल की ऊंची कीमतें सरकारी ऑयल मार्केटिंग कंपनियों का कराएगी नुकसान: मूडीज

नई दिल्ली, एजेंसी। बीते कई दिनों से इंटरनेशनल मार्केट में कच्चा तेल उबाल पर है। कच्चे तेल की ऊंची कीमतों से देश की तीन सरकारी स्वामित्व वाली तेल विपणन कंपनियों- इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड, हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एचपीसीएल) और भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड (बीपीसीएल) का लाभ घटेगा। मूडीज की एक रिपोर्ट के अनुसार, मई 2024 में लोकसभा चुनावों के कारण कच्चे माल की ऊंची लागत का भार उपभोक्ताओं पर डालने के लिए उनके पास सीमित अवसर है।

रिपोर्ट के मुताबिक, इन तेल कंपनियों का बाजार मार्जिन- उनकी शुद्ध वास्तविक कीमतों और अंतरराष्ट्रीय कीमतों के बीच का अंतर चालू वित्त वर्ष की अप्रैल-जून तिमाही के उच्च स्तर से काफी कमजोर हो गया है। अगस्त के बाद से डीजल पर विपणन मार्जिन नकारात्मक हो गया है, जबकि पेट्रोल पर मार्जिन उसी अवधि

में काफी कम हो गया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि यदि तेल की कीमतें 85 डॉलर प्रति बैरल से 90 डॉलर/बैरल के मौजूदा स्तर पर बनी रहती हैं, तो तीनों ऑयल मार्केटिंग कंपनियों की कमाई, जिनमें से सभी को बीएए3 स्थिर रेटिंग प्राप्त है, वित्त वर्ष 2024 की दूसरी छमाही में कमजोर हो जाएंगी। मूडीज की रिपोर्ट में कहा गया है कि फिर भी, इस मूल्य सीमा पर पूरे साल की कमाई ऐतिहासिक स्तरों के साथ तुलनीय रहेगी।

यदि कच्चे तेल की कीमतें लगभग 100 डॉलर प्रति बैरल तक बढ़ जाती हैं, तो वित्त वर्ष 2024 की दूसरी छमाही में घाटा शुरू हो जाएगा। मूडीज का कहना है कि हमारा मानना है कि वैश्विक विकास कमजोर होने के कारण तेल की ऊंची कीमतें लंबे समय तक कायम रहने की संभावना नहीं है।

कच्चे माल की लागत में वृद्धि सितंबर में कच्चे तेल की कीमत लगभग 17 प्रतिशत बढ़कर 90 डॉलर प्रति बैरल से अधिक हो जाने के बाद आई है, जो वित्त वर्ष 2024 की पहली तिमाही में औसतन 78 डॉलर प्रति बैरल थी।

अब बैंक में नहीं बदल सकेंगे 2000 के नोट, सिर्फ आरबीआई ऑफिस में बदले जा सकेंगे

नई दिल्ली, एजेंसी। 2000 रुपए के नोट को बैंक में जमा करने या इसे दूसरे नोट से बदलने का आखिरी मौका आज यानी 7 अक्टूबर को निकल चुका है। अब यानी कल, 8 अक्टूबर से ये नोट सिर्फ आरबीआई ऑफिस में बदले जा सकेंगे। शुक्रवार को आ गवर्नर शक्तिकांत दास ने बताया कि अभी लगभग 12 हजार करोड़ रुपए के 2000 के नोट चलन में हैं, जिनका आना अभी बाकी है।

वहीं 96 प्रतिशत से ज्यादा 2000 रुपए के नोट बैंक में वापस आ गए हैं, जिनकी वैल्यू 3.43 लाख करोड़ है। इसमें से 87 प्रतिशत नोट को बैंक में जमा किया गया है। बाकी नोटों को दूसरे नोटों से एक्सचेंज किया गया है। इससे पहले नोट बदलने की आखिरी तारीख 30 सितंबर थी, लेकिन आरबीआई ने इस डेडलाइन को बढ़ाकर 7 अक्टूबर 2023 कर दिया था।

7 अक्टूबर के बाद भी 2 हजार रुपए के बैंक नोट वैध बने रहेंगे। बैंक में नोट जमा करने की डेडलाइन खत्म होने के बाद 2000 रुपए के नोट आरबीआई के 19 इश्यू ऑफिस में नोट बदले या जमा किए जा सकेंगे। एक बार में 20 हजार रुपए तक के 2000 के नोट बदले जा सकेंगे।

वहीं अगर इन्हें अपने बैंक अकाउंट में क्रेडिट

करवाना है तो 2000 के कितने भी नोट इश्यू ऑफिस के जरिए जमा करवा सकते हैं। इसके अलावा लोग दो हजार के नोट डाक विभाग से भी ऋद्ध के 19 इश्यू दफ्तरों को भेज सकते हैं। ये नोट का मूल्य संबंधित व्यक्ति के खाते में क्रेडिट कर दिया जाएगा।

2000 का नोट नवंबर 2016 में मार्केट में आया था। तब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 500 और 1000 के नोट बंद करने का ऐलान किया था। इनकी जगह नए पैटर्न में 500 का नया नोट और 2000 का नोट जारी किया गया था। हालांकि आरबीआई साल 2018-19 से 2000 के नोटों की छपाई बंद कर चुका है। वहीं 2021-22 में 38 करोड़ वेल्यू के 2000 के नोट नष्ट किए गए थे।

यह फैसला सभी के लिए लागू है। हर व्यक्ति को जिसके पास 2000 के नोट हैं, उन्हें 7 अक्टूबर 2023 तक बैंक की किसी भी ब्रांच में डिपॉजिट करने या दूसरे नोटों से एक्सचेंज कराने को कहा गया था। लेकिन जिन लोगों ने तय तारीख तक ऐसा नहीं किया है वे अब आरबीआई ऑफिस के द्वारा नोटों को एक्सचेंज या बैंक अकाउंट में जमा करा सकेंगे।

त्यौहारों से पहले जी.एस.टी. काऊंसिल ने बढ़ाई मिठास, गुड़ समेत कई चीजों पर कम हुआ टैक्स

नई दिल्ली, एजेंसी। जी.एस.टी. काऊंसिल ने त्यौहारों से पहले लोगों को राहत देने वाले कई उपायों पर अमल किया है। आज काऊंसिल ने त्यौहारों पर गुड़ की मिठास बढ़ते हुए कई प्रोडक्ट पर जी.एस.टी. की दरों को कम करने का फैसला लिया। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने जी.एस.टी. काऊंसिल की 52वीं बैठक के बाद एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में इनके बारे में जानकारी दी। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बताया कि गुड़ पर जी.एस.टी. की दर घटाकर 5 फीसदी कर दी गई है। अभी तक गुड़ पर 28 फीसदी की दर से टैक्स लग रहा था। इसी तरह सिलाई- कढ़ाई में इस्तेमाल होने वाले जरी धागे पर जी.एस.टी. की दर 18 से घटाकर 5 प्रतिशत कर दी गई हैं।

जी.एस.टी. काऊंसिल की इस बैठक में टैक्स की दरों के अलावा भी कई अहम फैसले लिए गए। वित्त मंत्री ने बताया कि काऊंसिल ने अपीलेट ट्रिब्यूनल के सदस्यों के टेन्योर को मौजूदा 65 साल से बढ़ाकर 67 साल तक करने की मंजूरी दी। कम से कम 10 साल तक के अनुभव वाले वकीलों को अपीलेट ट्रिब्यूनल का सदस्य बनाया जा सकेगा।

जी.एस.टी. काऊंसिल की बैठक में एक्स्ट्रा न्यूट्रल अल्कोहल (ई.एन.ए.) को लेकर ये फैसला लिया गया कि इस पर टैक्स के बारे में राज्य सरकारें अपने-अपने हिसाब से फैसले ले सकती हैं। वित्त

मंत्री ने कहा कि भले ही अदालत ने ई. एन. ए. पर टैक्स के बारे में फैसला लेने का अधिकार जी.एस.टी. काऊंसिल को दे दिया, हमने यह अधिकार राज्यों के हवाले करने का फैसला किया है। इसका मतलब हुआ कि अब इंडस्ट्रियल यूज वाले ई. एन. ए. पर राज्य सरकारें ही टैक्स लगाएंगी। सीतारमण ने शीरा पर जी.एस.टी. 28 प्रतिशत से घटाकर 5 प्रतिशत किया। इससे गन्ना किसानों को होगा फायदा होगा। काऊंसिल की बैठक में कुछ टैक्सपेयर्स को भी राहत दी गई। बैठक के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में रैवेन्यू सैक्रेटरी संजय मल्होत्रा ने बताया कि बढ़ाए गए प्री-डिपॉजिट को लेकर 31 जनवरी 2024 तक अपील दायर की जा सकती है। उन्होंने कहा कि जिन मामलों में ऑर्डर मार्च 2023 तक पास हुए हैं, उनके लिए अगले साल जनवरी तक अपील की जा सकती है। राजस्व सचिव संजय मल्होत्रा ने दोहराया कि ऑनलाइन गेमिंग और कैसिनो पर शुरू से ही 28 फीसदी जी.एस.टी. लागू था।

एसआईपी से आप भी तैयार कर सकते हैं बड़ा फंड:इससे म्यूचुअल फंड में जोखिम हो जाता कम, यहां देखें इसके फायदे और नुकसान से जुड़ी 12 बातें

नई दिल्ली सिस्टमेटिक इन्वेस्टमेंट प्लान यानी एसआईपी के जरिए म्यूचुअल फंड में निवेश करना काफी आसान होता है। यह बचत और निवेश का एक बेहतरीन तरीका है। एसआईपी के जरिए म्यूचुअल फंड पर पैसे लगाने को लेकर लोगों के मन में इससे जुड़ी कुछ गलतफहमियां हैं। पर्सनल फाइनेंस एक्सपर्ट और ऑप्टिमा मनी मैनेजर्स के संस्थापक व सीईओ पंकज मठपाल आपको एसआईपी से जुड़ी कुछ खास बातें बता रहे हैं। म्यूचुअल फंड की कई किस्में हैं जैसे इक्विटी, डेट और हाइब्रिड फंड आदि। अक्सर देखा जाता है कि इक्विटी फंड में निवेश लंबे समय में अधिक लाभकारी साबित होता है। इसकी वजह यह है इक्विटी फंड में लंबे समय तक स्ढ्ढक्कक्करने से शेयर बाजार में होने वाले उतार-चढ़ाव का जोखिम कम हो जाता है। शेयर बाजार के निचले स्तर और ऊंचे स्तर का एक औसत रिटर्न बनता है और साथ ही कम्पाउंडिंग का फायदा भी मिलता है। लेकिन ऐसा नहीं है कि छोटी अवधि के लिए म्यूचुअल फंड नहीं हैं। निवेशक अपनी जरूरत और निवेश की अवधि को ध्यान में रखते हुए डेट या हाइब्रिड फंड में भी स्ढ्ढक्कक्कर सकते हैं। शायद इसे निवेश का सबसे अच्छा तरीका कहना तो उचित नहीं होगा लेकिन यह नियमित आय वाले लोगों के लिए निवेश का अच्छा तरीका जरूर हो सकता है जैसे वेतनभोगी और कारोबारी जिनकी हर महीने एक निश्चित आय तय है। स्ढ्ढक्कसे निवेश जेब पर भारी नहीं पड़ता और छोटी- छोटी राशि लगातार निवेश करने से लम्बे समय में एक अच्छी खासी रकम जुटाई जा सकती है। स्ढ्ढक्कके लिए सही फंड का चुनाव बहुत जरूरी है। सभी फंड एक जैसे नहीं होते। एक म्यूचुअल फंड किस तरह की प्रतिभूतियों या एसेट में निवेश करता है उस आधार पर उसमें जोखिम और रिटर्न देने की क्षमता कम या ज्यादा हो सकती है। साथ ही आपको कितनी राशि की एसआईपी करनी है यह आपको अपने वित्तीय लक्ष्य के आधार पर तय करना चाहिए। हालांकि कई म्यूचुअल फंड में कम से कम सौ रुपए महीना की भी एसआईपी की जा सकती है लेकिन इससे शायद आपको अपना लक्ष्य हासिल करने में मदद ना मिले। इसलिए अपनी क्षमता के अनुसार जितना अधिक हो सके निवेश करें और समय के साथ स्ढ्ढक्ककी राशि को बढ़ाते भी रहें।

39,999 में मिल रहा आईफोन-12, शुरू हुई ई-कॉमर्स कंपनियों की फेस्टिव सेल

नई दिल्ली, एजेंसी। ई कॉमर्स वेबसाइट फ्लिपकार्ट की द बिग बिलियन और अमेजन की ग्रेट इंडियन फेस्टिवल सेल आज यानी 8 अक्टूबर रात 12 बजे से सभी के लिए सेल शुरू हो गई है। एक दिन पहले ये सेल केवल प्लस और प्राइम मेंबर्स के लिए थी। इसमें 90त्न तक डिस्काउंट का दावा किया जा रहा है। द बिग बिलियन डेज सेल में फ्लिपकार्ट सभी प्रोडक्ट पर आईसीआईसीआई बैंक, एक्सिस बैंक और कोटक महिंद्रा बैंक के क्रेडिट कार्ड से पेमेंट करने पर 10त्न का ऐक्स्ट्रा डिस्काउंट दे रही है। वहीं, अमेजन अपनी सेल में एसबीआई के क्रेडिट और डेबिट कार्ड पर 10 प्रतिशत का ऐक्स्ट्रा डिस्काउंट ऑफर कर रहा है। फ्लिपकार्ट पर आईफोन-12 39,999, आईफोन-13 51,999 और आईफोन-14 64,999 में मिल रही है। सभी आईफोन की कीमतें शुरुआती वैरिएंट की हैं। अलग-अलग वैरिएंट में अलग-अलग डिस्काउंट मिल रहा है। वहीं, हाल ही में लॉन्च हुए आईफोन 15 सीरीज में अमेजन-फ्लिपकार्ट कोई खास डिस्काउंट नहीं दे रहे हैं।

सिर्फ 2 लाख परिवारों के पास देश की 80 प्रतिशत दौलत, भारत में अमीरों का पैसा 20 साल में 16 गुना बढ़ा, गरीबों का सिर्फ 1.4 प्रतिशत

न्यूयॉर्क, एजेंसी। हमारे लिए गर्व की बात है कि देश की जीडीपी जो 2003 में करीब 51 लाख करोड़ रुपए थी, अब 2023 में 312 लाख करोड़ रुपए पहुंच गई है। लेकिन, चिंता की बात यह है कि इन 20 सालों में अमीरों की दौलत 16 गुना और गरीबों की महज 1.4 प्रतिशत बढ़ी है। यानी, तरक्की के मामले में गरीब वहीं के वहीं हैं। देश की 80त्न दौलत सिर्फ 2 लाख परिवारों के पास है। ये बातें अमेरिकी मार्केटिंग एनालिसिस फर्म मर्सेलस इंवेस्टमेंट मैनेजर्स की ताजा रिपोर्ट में सामने आई हैं। एक अन्य रिपोर्ट 'विनर टेक ऑल इन इंडियाज न्यू इकोनॉमी' के अनुसार, आर्थिक विकास से आया 80त्न धन सिर्फ 20 कंपनियों के खाते में जा रहा है। निफ्टी में 10 साल में कुल 116 लाख करोड़ रुपए की पूंजी बनी। इसका 80त्न सिर्फ 20 कंपनियां ले गईं।

सुरक्षा मानकों का पालन तय करने को चाय के नमूनों की जांच कर रहा एफएसएसएआई

कोलकाता, एजेंसी। भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) देश के विभिन्न हिस्सों से जुटाए गए चाय के नमूनों का विश्लेषण कर रहा है, ताकि यह तय किया जा सके कि सुरक्षा मानकों का पालन किया जा रहा है या नहीं। एक अधिकारी ने शनिवार को यह जानकारी दी। एफएसएसएआई के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) जी कमला वर्धन राव ने कहा कि खाद्य सुरक्षा नियामक ने देशभर में चाय उद्योग में सर्वेक्षण कराया था और नमूने जमा किए थे।

भारत में बिजली खपत लगभग 8 प्रतिशत बढ़ी, आर्थिक गतिविधियों में तेजी के संकेत

नई दिल्ली, एजेंसी। वित्त वर्ष 2023-24 की पहली छमाही (अप्रैल-सितंबर, 2023) में भारत की बिजली खपत लगभग 8 प्रतिशत बढ़ी है। सरकारी संस्था की तरफ से जारी रिपोर्ट के अनुसार, इस साल पहले छह महीने में 847 बिलियन यूनिट बिजली खपत हुई है।

भारत की इकोनॉमी लगातार बढ़ रही है। सरकार का दावा है कि आने वाले दिनों में भारत दुनिया की तीसरी

सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। इसी बीच एक और उत्साह बढ़ाने वाली रिपोर्ट सामने आई है। इस वित्तीय वर्ष की पहली छमाही में देशभर में बिजली खपत लगभग आठ प्रतिशत बढ़ी है। अप्रैल से सितंबर की अवधि में भारत में लगभग 847 बिलियन यूनिट (बीयू) बिजली खपत हुई। सरकार के अनुसार, बिजली खपत का बढ़ना देश में आर्थिक गतिविधियों में तेजी को दिखाता है। आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, अप्रैल-सितंबर 2022 के दौरान बिजली की खपत 786 बिलियन यूनिट्स थी। इस साल 61 बीयू अधिक बिजली की खपत हुई। उद्योग विशेषज्ञों का मानना है कि अप्रैल, मई और जून में भारत के बड़े हिस्से में बेमौसम बारिश हुई। इससे बिजली की खपत पर सीधा असर पड़ा। बारिश के प्रभाव पर विशेषज्ञों का मानना है कि देश में बिजली खपत की वृद्धि दोहरे अंक में जाने की आशंका भी थी, यानी खपत 10 फीसद से अधिक भी बढ़ सकती थी।

औद्योगिक जगत की गतिविधियों पर बारीकी से नजर रखने वाले जानकारों के हवाले से समाचार एजेंसी पीटीआई ने बताया, असामान्य रूप से उच्च आर्द्रता स्तर के कारण अगस्त में बिजली की मांग के साथ-साथ खपत में भी उल्लेखनीय सुधार देखा गया।

सबसे बड़े कैचबाज... विराट कोहली ने फिर दिखाई अपनी फुर्ती, हवा में उड़ते हुए मार्श का लिया कैच

चेन्नई (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ वर्ल्ड कप 2023 के पहले मैच में भारतीय टीम के प्रमुख बल्लेबाज शुभमन गिल नहीं खेल रहे हैं। बल्लेबाजी में कमाल करने के साथ ही गिल स्लिप के शानदार फील्डर भी हैं। टीम इंडिया को बल्लेबाजी में भले ही गिल की कमी महसूस हो लेकिन फील्डिंग में ऐसा होता नहीं दिख रहा है। तीसरी ही ओवर में विराट कोहली ने स्लिप में शानदार कैच लेकर ऑस्ट्रेलिया के विस्फोटक ओपनर मिचेल मार्श को वापस पवेलियन भेज दिया।

विराट ने छलांग लगाकर लपका कैच

मिचेल मार्श ऑस्ट्रेलिया के लिए बेहतरीन फॉर्म में चल रहे हैं। भारत के खिलाफ वनडे सीरीज में उन्होंने अच्छी बैटिंग की थी। लेकिन वर्ल्ड कप के पहले मैच में वह खाता भी नहीं खोल पाए। तीसरे ओवर की दूसरी गेंद जसप्रीत बुमराह ने ऑफ स्टंप के बाहर फेंकी। गेंद में उछाल थी और वह मार्श के बल्ले का बाहरी किनारा लेकर स्लिप की तरफ गई। विराट कोहली ने बाएं तरफ छलांग लगाते हुए गेंद को लपक लिया।

भारतीय स्पिनर्स के आगे ऑस्ट्रेलिया सरेंडर

जडेजा की फिरकी में फंसे कंगारु , 2 ओवर में 3 विकेट

चेन्नई (एजेंसी)। आईसीसी वनडे वर्ल्ड कप 2023 का पांचवां मैच भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच चेन्नई के एमए चिंदबरम स्टेडियम में खेला जा रहा है। इस मैच में ऑस्ट्रेलिया ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया था। हालांकि इसको गलत साबित करने में भारतीय टीम के स्टार ऑलराउंडर रविंद्र जडेजा ने अहम भूमिका निभाई। उन्होंने ऑस्ट्रेलिया को लगातार 3 झटके देकर कमर तोड़ दी। जडेजा ने स्टीव स्मिथ, मार्नस लाबुशेन और एलेक्स कैरी को बैक टू बैक आउट कर कंगारुओं को बैकफुट पर धकेल दिया।

जडेजा के चक्रव्यूह में फंसा ऑस्ट्रेलिया

ऑस्ट्रेलिया के स्टार ओपनर डेविड वॉर्नर के आउट होने के बाद स्टीव स्मिथ और मार्नस लाबुशेन पिच पर डट गए थे। वह संघर्ष कर रहे थे लेकिन विकेट नहीं गंवा रहे थे। हालांकि जड्डू की जादुई गेंदों के आगे कंगारू बल्लेबाजों की एक भी नहीं चली। सबसे पहले जडेजा ने 28वें ओवर की पहली गेंद पर स्टीव स्मिथ को चलता किया। उन्होंने स्मिथ को इतना शानदार बोल्ड किया कि हर कोई दंग रह गया। यहां तक कि स्मिथ को खुद अपनी विकेट पर भरोसा नहीं हुआ। ऐसे में स्टीव 46 रन बनाकर आउट हो गए।

इसके बाद अपने अगले और पारी के 30वें ओवर में जडेजा ने कोहराम मचा दिया। पहले उन्होंने मार्नस लाबुशेन (27) को चकमा देकर विकेटकीपर केएल राहुल के हाथों कैच आउट करवाया। फिर उसी ओवर में जडेजा ने एलेक्स कैरी को भी एल्बीडब्ल्यू कर आउट किया। कैरी अपना खाता भी नहीं खोल पाए थे। जडेजा ने ऐसे लगातार 3 विकेट लेकर ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाजी युनिट की कमर तोड़ दी।

सिर्फ जडेजा ही नहीं बल्कि इस मैच में खेल रहे भारत के अन्य दो स्पिनर रविचंद्रन अश्विन और कुलदीप यादव का भी दबदबा देखने को मिला। कुलदीप ने भी अपने जाल में कंगारू बल्लेबाजों को फंसा रखा है। यादव ने डेविड वॉर्नर और ग्लेन मैक्सवेल के रूप में 2 बड़े विकेट भी लिए हैं। अश्विन ने भी अच्छी गेंदबाजी की और कैमरन ग्रीन का विकेट भी झटका। बता दें कि अब तक ऑस्ट्रेलिया के गिरे 7 विकेट में से 6 विकेट भारतीय स्पिनर्स ने लिए हैं।

वर्ल्ड कप 2023

इतिहास में दर्ज हो गया रोहित शर्मा नाम

चेन्नई(एजेंसी)। भारतीय टीम वर्ल्ड कप 2023 में ऑस्ट्रेलिया से भिड़ रही है। इस मैच में टॉस के लिए मैदान पर आते ही भारतीय कप्तान रोहित शर्मा के नाम बड़ा रिकॉर्ड दर्ज हो गया है। रोहित ने भारतीय टीम के हेड कोच राहुल द्रविड़ के साथ ही मोहम्मद अजहरुद्दीन को पीछे छोड़ दिया।

रोहित शर्मा वर्ल्ड कप 2023 – ऑस्ट्रेलिया के कप्तान पैट कमिंस ने विश्व कप 2023 के अपने पहले मैच में टॉस जीतकर भारत के खिलाफ पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। भारत के प्रतिभाशाली सलामी बल्लेबाज शुभमन गिल इस मुकाबले में नहीं खेल रहे हैं। कप्तान रोहित शर्मा ने बताया कि उनकी जगह ईशान किशन भारत के लिए ओपनिंग करेंगे। वहीं इस मैच में टॉस के लिए आते ही रोहित शर्मा के नाम भी बड़ा रिकॉर्ड दर्ज हो गया।

वर्ल्ड कप में सबसे उम्रदराज भारतीय कप्तान

रोहित शर्मा वर्ल्ड कप इतिहास में भारत की कप्तानी करने वाली सबसे उम्रदराज कप्तान बन गए हैं। रोहित शर्मा की उम्र 36 साल और 161 दिन है। 2021 के अंत में रोहित को भारतीय टीम का नियमित कप्तान बनाया गया था। रोहित से पहले मोहम्मद अजहरुद्दीन वर्ल्ड कप में भारत के सबसे उम्रदराज कप्तान थे। उन्होंने 1999 वर्ल्ड कप में 36 साल और 124 दिन की उम्र में भारत की कप्तानी की थी।

विश्व कप मैच में भारत के लिए सबसे उम्रदराज कप्तान
36 साल 161 दिन - रोहित शर्मा (2023)
36 साल 124 दिन - एम अजहरुद्दीन (1999)
34 साल 71 दिन - राहुल द्रविड़ (2007)
34 साल 56 दिन - एस वेंकटराघवन (1979)
33 साल 262 दिन - एमएस धोनी (2015)

2011 में नहीं खेल पाए थे रोहित

भारत में 2011 में आखिरी बार वर्ल्ड कप खेला गया था। उस टीम में रोहित शर्मा को जगह नहीं मिली थी। उससे रोहित काफी निराश थे। उन्होंने एक बार इसे अपने मेरे करियर का सबसे बुरा वक्त बताया था। अब 12 साल बाद एक बार फिर भारत में वर्ल्ड कप खेला जा रहा है। इस बार टीम इंडिया रोहित शर्मा की कप्तानी में मैदान पर उतरी है।

वर्ल्ड कप 2023 : केन विलियमसन खेलने के लिए कब उपलब्ध होंगे हेड कोच ने कर दिया बड़ा खुलासा

न्यूजीलैंड के हेड कोच गैरी स्टेड ने केन विलियमसन की वापसी पर बड़ी अपडेट दी है। स्टेड ने कहा कि विलियमसन 13 अक्टूबर को बांग्लादेश के खिलाफ होने वाले मैच में उपलब्ध रहेंगे। इसके अलावा न्यूजीलैंड के हेड कोच गैरी स्टेड ने तेज गेंदबाज टिम साउदी और लोकी फर्ग्यूसन की फिटनेस पर भी बड़ी अपडेट दी। न्यूजीलैंड को सोमवार को अपना दूसरा मैच नीदरलैंड्स के खिलाफ खेलना है।

नई दिल्ली (एजेंसी)। स्पोर्ट्स डेस्क। केन विलियमसन की वापसी कब होगी केन विलियमसन किस मैच से न्यूजीलैंड टीम की कमान संभालेंगे केन विलियमसन की चोट ज्यादा गंभीर तो नहीं न्यूजीलैंड के लिए पहले हाफ में केन विलियमसन कोई मैच खेलेंगे भी या नहीं फैंस इस तरह के तमाम सवाल सोशल मीडिया पर कर रहे हैं, जिसका जवाब न्यूजीलैंड के हेड कोच गैरी स्टेड ने दे

दिया है। न्यूजीलैंड के हेड कोच गैरी स्टेड ने कहा कि केन विलियमसन 13 अक्टूबर को बांग्लादेश के खिलाफ होने वाले मैच के लिए उपलब्ध रहेंगे। इसके साथ ही स्टेड ने तेज गेंदबाज टिम साउथी और लोकी फर्ग्यूसन की फिटनेस पर भी बड़ी अपडेट दी। न्यूजीलैंड ने मौजूदा वर्ल्ड कप में अपना पहला मैच गत चैंपियन इंग्लैंड के खिलाफ खेला। इस मुकाबले में कीवी टीम को अपने प्रमुख खिलाड़ियों केन विलियमसन, टिम साउथी और लोकी फर्ग्यूसन की सेवाएं नहीं मिल सकी। ये तीनों प्रमुख खिलाड़ी चोटों से जूझ रहे हैं। विलियमसन को दाएं घुटने में चोट है। साउथी को अंगूठे में चोट है जबकि फर्ग्यूसन पीठ दर्द से जूझ रहे हैं। ये तीनों खिलाड़ी पहले मैच में शिरकत नहीं कर सके।

हेड कोच ने दी बड़ी अपडेट

न्यूजीलैंड क्रिकेट के आधिकारिक इंस्टाग्राम हैंडल पर बातचीत करते हुए स्टेड ने कहा कि फर्ग्यूसन नीदरलैंड्स के खिलाफ मैच में उपलब्ध रहेंगे। साउथी का रविवार को आखिरी एक्स-रे हो गया है और नतीजों पर निर्भर करेगा कि वो मैच में उपलब्ध होंगे या नहीं।

मेजर ध्यानचंद के बेटे अशोक बोले- हॉकी का पदक खास, ओलंपिक के लिए खिलाड़ियों का बढ़ेगा आत्मविश्वास

नई दिल्ली (एजेंसी)। वर्ष 1936 के बर्लिन ओलंपिक में भारत ने हॉकी का स्वर्ण जीता था। इसके बावजूद मेजर ध्यानचंद रो रहे थे। दरअसल, वह इस बात से बेहद दुखी थे कि टीम के जीतने के बाद भी उनके देश का नहीं, बल्कि ब्रिटिश इंडिया का झंडा लहराया गया। ऐतिहासिक...एशियाई खेलों में पदकों के शतक से पूरे देश का सीना चौड़ा हो गया। जब पदक के साथ राष्ट्रगान की धुन बजती है और तिरंगा ऊपर उठता है...वह सबसे बड़ा लम्हा होता है। हांगझोऊ में भारतीय खिलाड़ियों के अब तक के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन ने राष्ट्र भावना को चरम पर पहुंचा दिया है। यकीन मानिये, यह खिलाड़ियों के आत्मविश्वास को उस स्तर तक पहुंचा देगा, जहां वे अगले वर्ष पेरिस में होने जा रहे ओलंपिक में देश के लिए अपना सब कुछ झोंक देंगे। मुझे बाबूजी (मेजर ध्यानचंद) ने एक कहानी बताई थी, जो इस वक्त याद आ रही है। 1936 के बर्लिन ओलंपिक में भारत ने अद्भुत प्रदर्शन करते हुए हॉकी का स्वर्ण जीता था और बाबूजी रो रहे थे। दरअसल, उन्हें इस बात का मलाल था कि उनकी टीम के जीतने पर भी देश का नहीं, बल्कि अंग्रेजों की गुलामी में जकड़े ब्रिटिश इंडिया का झंडा लहराया गया। उम्मीद है कि एशियाड में भारत का प्रदर्शन देश में खेलों की बयार को और आगे बढ़ाएगा।

बीसीसीआई भारत बनाम पाकिस्तान मैच के लिए 14,000 टिकट जारी करने की तैयारी में

मुंबई (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट परिषद (बीसीसीआई) 14 अक्टूबर को अहमदाबाद में होने वाले भारत बनाम पाकिस्तान लीग मैच के लिए 14,000 टिकट जारी करने के लिए तैयार है।मैच के टिकटों की बिक्री 8 अक्टूबर, 2023 को दोपहर 12 बजे आईएसटी से शुरू होगी।2023 विश्व कप के शुरुआती मैचों में दर्शकों की अनुपस्थिति के कारण स्टेडियम में भीड़ की मौजूदगी को लेकर अटकलें लगाई जाने लगीं। गुरुवार को मौजूदा चैंपियन इंग्लैंड और 2019 टूर्नामेंट के विजेता न्यूजीलैंड के बीच विश्व कप 2023 के उद्घाटन में कम दिलचस्पी थी।दोपहर में जैसे ही जोस बटलर और टॉम लैथम की टीमें मैदान पर उतरीं, नरेंद्र मोदी स्टेडियम ज्यादातर खाली था।यह पहली बार नहीं है कि विश्व कप से पहले बीसीसीआई को इस तरह का सामना करना

पड़ा है। बीसीसीआई ने टूर्नामेंट से ठीक पहले 9 मैचों की तारीखें बदल दीं, जिससे बड़े पैमाने पर भ्रम की स्थिति पैदा हो गई।आयोजन के शुरू होने से लगभग सौ दिन पहले, 27 जून, 2023 को विश्व कप का कार्यक्रम पहली बार सार्वजनिक किया गया था, जबकि 2018 विश्व कप की तुलना में, जहां कार्यक्रम एक साल से भी अधिक पहले सार्वजनिक किए गए थे।इसके बाद कार्यक्रम में अतिरिक्त समायोजन किया गया, क्योंकि कई मेजबानी संघों ने शहर में अन्य महत्वपूर्ण आयोजनों के साथ मैचों के टकराव पर आपत्ति व्यक्त की थी।पहली घोषणा के लगभग डेढ़ महीने बाद, और 5 अक्टूबर को होने वाले टूर्नामेंट के पहले गेम तक दो महीने से भी कम समय के साथ, स्थिरता सूची को अंततः 9 अगस्त को संशोधित किया गया था।फिर घोषणा हुई कि 24 अगस्त को मास्टरकार्ड धारकों को गैर-भारत खेलों के लिए टिकट मिलेंगे, और एक दिन बाद, आम जनता के लिए। 29 अगस्त से 3 सितंबर वह समय था जब प्रशंसक - मास्टरकार्ड के साथ और उसके बिना - भारत मैच के टिकट खरीदने का लक्ष्य रख सकते थे।6 सितंबर को, बीसीसीआई ने घोषणा की कि सभी मैचों के लिए अतिरिक्त 400,000 टिकट बिक्री के लिए उपलब्ध होंगे, जिसका पहले उल्लेख नहीं किया गया था। इसमें यह भी कहा गया है कि प्रशंसकों को अगले चरण में टिकटों की आगे की बिक्री के बारे में उचित समय पर सूचित किया जाएगा, इसके आसपास की तारीखों पर कोई स्पष्टता नहीं है, जिससे विश्व कप के लिए अच्छी नहीं होने वाली योजना को और अधिक बढ़ावा मिलेगा।शुरुआत में वेबसाइट क्रैश होने और कई लोगों ने ऑनलाइन टिकटों के लिए भारी कतारों की शिकायत करने के बाद बुकमायशो को टूर्नामेंट के लिए अतिरिक्त टिकट जारी करने के लिए भी कहा था।सभी की निगाहें अहमदाबाद पर होंगी, क्योंकि भारत 14 अक्टूबर को पाकिस्तान से भिड़ेगा।

अब भारत को ओलंपिक की मेजबानी का दावा करना चाहिए : आईओए प्रमुख पीटी उषा

हांगझोउ (एजेंसी)। हांगझोउ एशियाई खेलों में रिकॉर्ड पदक जीतने से उत्साहित भारतीय ओलंपिक संघ की अध्यक्ष पी टी उषा ने रविवार को 2036 ओलंपिक की मेजबानी के सरकार के प्रस्ताव का समर्थन किया। भारत ने रविवार को खत्म हुए एशियाई खेलों में 28 स्वर्ण समेत 107 पदक जीते। पिछली बार भारत ने 70 पदक जीते थे।

उषा ने कहा, 'हांगझोउ एशियाई खेलों में रिकॉर्डतोड़ प्रदर्शन के बाद अगर हमारे देश के खिलाड़ी, कोच और राष्ट्रीय महासंघ कड़ी मेहनत करें तो हम पेरिस ओलंपिक में दोहरे अंक में पदक जीत सकते हैं। उन्होंने कहा, 'सरकार भारतीय खेलों और खिलाड़ियों की बेहतरी के लिए हरसंभव प्रयास कर रही है। हमारे प्रधानमंत्री देश के खेलों में काफी रूचि लेते हैं।

उषा ने कहा कि अब भारत को ओलंपिक की मेजबानी का दावा करना चाहिए। उन्होंने कहा, 'हमें 2023 ओलंपिक की मेजबानी का दावा करना चाहिए। मुझे यकीन है कि भारत पेरिस ओलंपिक में तोक्यो से अधिक पदक जीतेगा। पदक जीतने के बाद हम ओलंपिक की मेजबानी का दावा कर सकते हैं।

सरकार 15 से 17 अक्टूबर तक मुंबई में होने वाले अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति के सत्र के दौरान 2036 ओलंपिक की मेजबानी में रूचि जता सकती है। आईओसी के हालिया सुधारों के बाद अब ओलंपिक की मेजबानी के इच्छुक देश अपना प्रस्ताव रखेंगे और आईओसी भावी मेजबान आयोग कार्यकारी बोर्ड के सामने अपनी अनुशंसा रखेगा। कार्यकारी बोर्ड उसके बाद तय करेगा कि आईओसी सत्र में प्रस्ताव मतदान के लिये रखा जायेगा या नहीं।

साउथ अफ्रीका वर्सेस श्रीलंका : वर्ल्ड कप

इतिहास का सबसे तेज शतक लगाने के बाद ऐडन ने क्या कहा दो बैटर्स की जमकर की तारीफ

दक्षिण अफ्रीका के मिडिल ऑर्डर बल्लेबाज एडेन मार्करम ने वर्ल्ड कप इतिहास का सबसे तेज शतक लगाने के बाद रिएक्शन दिया। मार्करम ने कहा कि दक्षिण अफ्रीकी बल्लेबाजों ने भारतीय परिस्थितियों का लाभ उठाने के लिए सकारात्मकता रखने का विकल्प चुना है। दक्षिण अफ्रीका ने रिकॉर्ड 428 रन बनाने के बाद श्रीलंका पर 102 रन की जीत दर्ज की।

नई दिल्ली (एजेंसी)। दक्षिण अफ्रीका के मिडिल ऑर्डर बल्लेबाज एडेन मार्करम ने शनिवार को वर्ल्ड कप 2023 में श्रीलंका के खिलाफ ऐतिहासिक पारी खेली। मार्करम ने केवल 49 गेंदों में शतक जमाया जो कि वर्ल्ड कप इतिहास का सबसे तेज शतक रहा। उन्होंने आयरलैंड के केविन ओ ब्रायन का रिकॉर्ड तोड़ा।

एडेन मार्करम ने पिछले महीने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ वनडे सीरीज में किए शानदार प्रदर्शन को जारी रखा और रिकॉर्डधारी पारी खेली। मार्करम पारी के 31वें ओवर में क्रीज पर आए और श्रीलंकाई गेंदबाजों की बखिया उधेड़ते हुए 54 गेंदों में 14 चौके और तीन छक्के की मदद से 106 रन बनाए।

दक्षिण अफ्रीका ने क्विंटन डी कॉक (100), रासी वान डर डुसैन (108) और मार्करम के शतकों की बदौलत निर्धारित 50 ओवर में 5 विकेट खोकर 428 रन बनाए। यह वर्ल्ड कप इतिहास में किसी भी टीम द्वारा बनाया गया सबसे बड़ा स्कोर है। यह वर्ल्ड कप में पहला मौका रहा, जब एक ही टीम के तीन बल्लेबाजों ने शतक जड़ा हो।

मार्करम ने क्या कहा

यह शानदार एहसास है। मुझे नहीं पता कि बतौर बल्लेबाज मुझसे क्या उम्मीद की जा रही है। पिछले 12 महीनों में हमने एकजुट होकर खेला और सकारात्मकता को अपना हथियार बनाया। शुरुआत में आप विकेट को समझते हैं और फिर रन बनाने के विकल्प खोजते हैं। आप नतीजे के बारे में नहीं सोचते और बस यह करने की कोशिश करते हैं कि कैसे सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करें।

दो खिलाड़ियों की जमकर की तारीफ

एडेन मार्करम ने क्विंटन डी कॉक और रासी वान डर डुसैन की जमकर तारीफ की और कहा कि इनकी साझेदारी ने उनके लिए मंच तैयार कर दिया था। याद दिला दें कि कॉक और डुसैन ने 204 रन की साझेदारी की थी। अंत में मार्करम के साथ डेविड मिलर और हेनरिच क्लासेन ने भी तेजी से रन बनाए थे।

हवा में उड़ेंगे विश्व कप खेलने वाले कप्तान

अमृतसर के आर्टिस्ट ने 10 टीमों को समर्पित पतंगें बनाईं

अमृतसर (एजेंसी)। भारत में शुरू हुए क्रिकेट वर्ल्ड कप 2023 का खुमार पूरे विश्व में फैल चुका है। देश-विदेश से सैलानी विश्व कप देखने के लिए भारत पहुंच रहे हैं। वहीं, विश्व की 10 टीमें भारत में हैं, जो इस कप के लिए दिल-जान एक कर देंगी। इसी बीच पंजाब के अमृतसर में एक व्यक्ति द्वारा विश्व कप को समर्पित पतंगें तैयार की गई हैं। यह पतंगें विश्व रिकॉर्ड होल्डर जगमोहन कनोजिया की तरफ से तैयार की गई हैं।

जगमोहन कनोजिया ने बताया कि ये विश्व कप खेलने वाले सभी कप्तान हवा में उड़ते दिखेंगे। यह विश्व कप भारत के लिए खास है, क्योंकि ये भारत में हो रहा है। इसलिए उन्होंने भारत आई सभी टीमों के कप्तानों का वेलकम करने के लिए पतंगों को तैयार किया है। कनोजिया का कहना है कि उन्होंने भारत टीम की भी एक पतंग तैयार की है ताकि हवा में उड़ते हुए ये संदेश उन तक पहुंचे और इस साल का विश्व कप भारत की झोली में आए।

शिखर धवन ने देवयानी जयपुरिया स्पोर्ट्स एकेडमी के सहयोग से जयपुर में अपनी पहली खेल एकेडमी लॉन्च की

जयपुर (एजेंसी)। शिखर धवन ने देवयानी जयपुरिया स्पोर्ट्स एकेडमी के सहयोग से डीपीएस जयपुर में अपनी स्पोर्ट्स एकेडमी दा वन स्पोर्ट्स लॉन्च की। यह पहल जमीनी स्तर से असाधारण प्रशिक्षण को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है, जो विद्यार्थियों और कोच दोनों के लिए सीखने के प्रचुर अवसर प्रदान करती है। एडवांस टेक्नोलॉजी का उपयोग करते हुए, यह स्पोर्ट्स एसोसिएशन खेल शिक्षा के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण सुनिश्चित करते हुए व्यक्तिगत प्रदर्शन की निगरानी करेगा, प्रगति पर नज़र रखेगा और स्किल डेवलपमेंट को बढ़ाएगा। देवयानी जयपुरिया स्पोर्ट्स एकेडमी, भारत की अग्रणी स्कूल श्रृंखलाओं में से एक का हिस्सा है, जो बच्चों को ऐसे लीडर्स बनने के लिए सशक्त बनाती है जो ज्ञान और समझ के साथ दुनिया पर सकारात्मक प्रभाव डालेंगे। उनका इन्नोवेटिव शिक्षण दृष्टिकोण पाठ्यक्रम के साथ रचनात्मकता को जोड़ता है, जिससे छात्रों को इन्नोवेटिव होने और नए क्षितिज तलाशने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

एकेडमी के शिक्षक सिर्फ शिक्षकों से कहीं अधिक हैं; वे सुविधा प्रदाता हैं, जिन्हें परामर्श कार्यक्रमों के माध्यम से संस्थान के दृष्टिकोण को इंटरैक्टिव और एनरजेटिक क्लासरूम प्रैक्टिसेस में प्रशिक्षित किया गया है। इस अवसर पर शिखर धवन ने कहा कि, डीपीएस जयपुर/डीपीएसआई और दा वन स्पोर्ट्स एकेडमी इच्छुक खिलाड़ियों को प्रशिक्षित करने और असाधारण अवसर प्रदान करने के साझा उद्देश्य के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। वास्तव में, मैं एसोसिएशन और छात्रों को उत्कृष्ट प्रशिक्षण कौशल प्रदान करने के लिए उत्सुक हूं।

एसोसिएशन पर बोलते हुए, देवयानी जयपुरिया, चेयरपर्सन धाराव हाई स्कूल, प्रो-वाइस चेयरपर्सन - डीपीएस इंटरनेशनल गुरुग्राम और डीपीएस जयपुर ने इस अवसर पर कहा कि, हम दृढ़ता से मानते हैं कि प्रत्येक एथलीट में उत्कृष्टता और महानता हासिल करने की क्षमता होती है।

हमारा मिशन खेल प्रशिक्षण के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करना है, जिसमें न केवल तकनीकी कौशल बल्कि चरित्र विकास, खेल कौशल और नेतृत्व क्षमताओं पर भी जोर दिया जाता है।

संक्षिप्त समाचार

नितिन गडकरी को धमकी के आरोपी ने निगला तार, हालत खतरे से बाहर

नागपुर, एजेंसी। नागपुर में केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी के ऑफिस में धमकी भरे कॉल करने का आरोपी जेल में लोहे का तार निगल गया। हालांकि फिलहाल उसकी तबीयत ठीक है। पुलिस ने शनिवार को यह जानकारी दी। एक अधिकारी ने बताया कि गडकरी के ऑफिस में कथित रूप से फोन करने वाले जयेश पुजारी उर्फ कांथा को निगरानी में रखा गया है। उसे हॉस्पिटल ले जाया गया था, जहां डॉक्टरों ने उसे फिट घोषित कर दिया। इस हफ्ते की शुरुआत में उसने जेल अधिकारियों से बताया था कि वह तार का एक टुकड़ा तथा 50 टैबलेट निगल गया है। उसे गुरुवार को अदालत में पेश किया गया जहां उसने यही दावा दोहराया। अदालत के आदेश पर सरकारी चिकित्सा महाविद्यालय एवं अस्पताल में डॉक्टरों ने उसकी जांच की। अधिकारी ने बताया कि मेडिकल जांच से इस बात की पुष्टि हुई है कि उसके पेट में तार के टुकड़े हैं। लेकिन उसकी तबीयत में कोई गड़बड़ी नजर नहीं आई है एवं उसे चिकित्सकों ने फिट घोषित कर दिया है। उन्होंने बताया कि आरोपी को केंद्रीय जेल वापस लाया गया और उसकी स्थिति पर जेल की मेडिकल टीम लगातार नजर रख रही है। अधिकारी ने बताया कि पुजारी बार-बार इस कोशिश में लगा है कि उसे बेलगावी जेल ले जाया जाए, जहां उसे पहले रखा गया था। अधिकारी कहा कि इस बात का संदेह है कि वह ऐसा इसलिए चाहता है, क्योंकि उस जेल में उसने आपराधिक नेटवर्क बना रखा है तथा उसे वहां मोबाइल फोन एवं अन्य सुविधाएं मिल जाती हैं। जब पुजारी बेलगावी जेल में था, तब उसने बेंगलुरू आतंकवादी हमले के अभियुक्त अफसर पाशा के साथ साठगांठ कर पुजारी ने कथित रूप से इस साल जनवरी में गडकरी के कार्यालय में धमकी भरा कॉल किया था। उसने दाउद इब्राहिम गैंग का सदस्य होने का दावा करते हुए 100 करोड़ रुपये की रंगदारी मांगी थी। उसने 21 मार्च को फिर कॉल किया था, जिसके बाद उसे इस मामले में गिरफ्तार कर लिया गया और नागपुर लाया गया।

क्रिकेट वर्ल्डकप पर धर्मशाला से बड़ा अपडेट; मैच वाले दिन नहीं उड़ा पाएंगे ड्रोन, इन चीजों पर भी रहेगा बैन

धर्मशाला, एजेंसी। देश में क्रिकेट विश्वकप 2023 की शुरुआत हो चुकी है। तीसरे दिन भी दो मैचों का आयोजन किया गया। क्रिकेट विश्वकप के लिए देशभर के क्रिकेट स्टेडिय को चयनित किया गया है। इसमें हिमाचल प्रदेश का धर्मशाला में स्थित स्टेडियम भी शामिल है। इन मैचों को देखते हुए इलाके में कई उड़ने वाली चीजों पर प्रतिबंध लगाया गया है। इसमें ड्रोन और पैराग्लाइडिंग भी शामिल है। इस मामले में हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला में विश्व कप क्रिकेट मैच के दौरान पैराग्लाइडिंग, ड्रोन फ्लाइंग, हॉट एयर बैलून, एयरो स्पोर्ट्स जैसी गतिविधियों पर पूरी तरह से प्रतिबंध रहेगा। इस बारे में जिला दंडाधिकारी डॉ. निपुण जिंदल ने आदेश पारित करते हुए कहा कि मैच में विशिष्ट अतिथियों और दर्शकों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए धर्मशाला, कांगड़ा, बैजनाथ, शाहपुर उपमंडलों में यह आदेश लागू रहेंगे। प्रतिबंध का आदेश जारी करते हुए जिंदल ने कहा कि कोई भी संस्था या व्यक्ति इन आदेशों की अवहेलना करेगा तो आवश्यक कार्रवाई अमल में लाई जाएगी। इस बाबत आदेशों की अनुपालना सुनिश्चित करवाने के संबंधित अधिकारियों को निर्देश भी दिए गए हैं ताकि किसी भी स्तर पर विशिष्ट अतिथियों और दर्शकों की सुरक्षा में किसी तरह की चूक नहीं हो। धर्मशाला में होने वाले मैचों को लेकर अधिकारी के आदेश के बाद इलाके में ड्रोन फ्लाइंग, पैराग्लाइडिंग, हॉट एयर बैलून के साथ ही कई उड़ानों पर प्रतिबंध लगाया गया है। आपको बता दें कि हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला क्रिकेट स्टेडियम में चार मैचों की मेजबानी करने के मौका मिला है। इस दौरान अक्टूबर की 10, 17, 22 और 28 अक्टूबर को स्टेडियम में मैच होगा। मैच वाले दिन इस इलाके में उड़ान वाली कई चीजों पर प्रतिबंध रहेगा।

राजस्थान के पोकरण में आर्मी इंटेलिजेंस की बड़ी कार्रवाई, 4 संदिग्धों को किया डिटेन

जैसलमेर, एजेंसी। राजस्थान के जैसलमेर जिले के पोकरण में आर्मी इंटेलिजेंस ने बड़ी कार्रवाई की है। देश की सुरक्षा में सेंध लगाने के मंसूबों को नाकाम किया। नाचना फांटे के पास आर्मी एरिया में घूम रहे 4 संदिग्धों को डिटेन किया। आर्मी न्यू पैटर्न की ड्रेसों के जखीरे के साथ डिटेन किया। 91 ड्रेस सहित जवानों द्वारा पहने जाने वाले सभी आइटमों के साथ डिटेन किया। इंटेलिजेंस ने संदिग्धों से एक कार भी जब्त की है। सरहदी क्षेत्र में इतनी बड़ी संख्या में ड्रेस लेकर पहुंचने के क्या हो सकते है मनसूबे? आर्मी इंटेलिजेंस ने चारों संदिग्धों को नाचना पुलिस को सुपुर्द किया। नहरी इलाके में बाहरी लोगों के आने पर भी सरकार ने प्रतिबंध लगा रखा है। पूर्व में भी सरहदी क्षेत्र में पाक जासूस पकड़े जा चुके है। पूर्व में इंटेलिजेंस ने आर्मी अधिकारियों के फर्जी कार्ड के साथ 4 संदिग्धों को डिटेन किया था। राजाराम, गगन, जयपाल और अमीन को डिटेन किया है। यह सभी सूरतगढ़ के रहने वाले बताए है। सुरक्षा एजेंसियों ने मामले को गंभीरता से लिया है। एक मासूम का उपयोग भी किया गया।

नौसेना के बाद भारतीय वायुसेना ने भी बदला अपना ध्वज

नए ध्वज में सबसे ऊपर और दाएं कोने में भारतीय वायुसेना की शिखा को दर्शाया गया

नईदिल्ली, एजेंसी।
भारतीय वायु सेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल वीआर चौधरी ने रविवार को प्रयागराज में वार्षिक वायु सेना दिवस परेड के दौरान वायु सेना के नए ध्वज का अनावरण किया। 72 वर्षों में यह पहली बार भारतीय वायुसेना द्वारा इस तरह का अभ्यास किया गया है। नौसेना की तरह औपनिवेशिक अतीत का त्याग करते हुए अपने ध्वज में बदलाव किया है। यह एक ऐतिहासिक अवसर था। नए ध्वज में सबसे ऊपर और दाएं कोने में भारतीय वायुसेना की शिखा को दर्शाया गया है।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान भारतीय वायु सेना की आधिकारिक तौर पर 8 अक्टूबर, 1932 को स्थापना की गई थी। इसकी दक्षता और उपलब्धियों को देखते हुए मार्च 1945 में इसे रॉयल शब्द से सम्मानित किया गया था। इसके बाद यह रॉयल इंडियन एयर फोर्स बन गई। 1947 में देश को आजादी मिलने के बाद 1950 में वायुसेना ने अपने नाम में लगा रॉयल उपसर्ग हटा दिया। अपने झंडे को भी बदल लिया।

आरआईएएफ ध्वज में ऊपरी बाएं कैंटन में यूनियन जैक और फ्लाई साइड पर आरआईएएफ राउंडेल (लाल, सफेद और नीला) शामिल था। स्वतंत्रता के बाद निचले दाएं कैंटन में यूनियन जैक को

भारतीय तिरंगे के साथ और आरएएफ राउंडल्स को आईएएफ तिरंगे राउंडेल के साथ बदलकर भारीतय वायुसेना का ध्वज बनाया गया था।

भारतीय वायुसेना ने एक बयान में कहा, भारतीय वायु सेना के मूल्यों को बेहतर ढंग से प्रतिबिंबित करने के लिए अब एक नया ध्वज बनाया गया है। ध्वज के ऊपरी दाएं कोने में फ्लाई साइड की ओर वायु सेना क्रेस्ट को शामिल किया गया है।

भारतीय वायुसेना के शिखा पर राष्ट्रीय चिन्ह है। शीर्ष पर अशोक स्तंभ है। उसके नीचे देवनागरी में सत्यमेव जयते लिखा है। अशोक स्तंभ के नीचे एक हिमालयी ईगल है जिसके पंख फैले हुए हैं, जो भारतीय वायुसेना के लड़ने के गुणों को दर्शाता है। भारतीय वायुसेना का आदर्श वाक्य गौरव के साथ आकाश को छूएं देवनागरी में हिमालयन ईगल के नीचे अंकित है। यह वाक्य वाक्य भगवद गीता के अध्याय 11 के श्लोक 24 से लिया गया है।

मेरठ में तैयार होंगे ड्रोन पायलट, कृषि विश्वविद्यालय में ट्रेनिंग सेंटर हुआ तैयार, युवाओं को मिलेगा रोजगार

मेरठ, एजेंसी।
पायलट सिर्फ हवाई जहाज उड़ाने वाले नहीं, बल्कि ड्रोन उड़ाने वाले भी पायलट कहलाते हैं। ड्रोन उड़ाना अब केवल मौज-मस्ती का जरिया नहीं, इससे आप अच्छी कमाई भी कर सकते हैं। खेती-किसानी में ड्रोन का इस्तेमाल तेजी से बढ़ा है। खाद से लेकर कीटनाशक छिड़काव में ड्रोन का उपयोग किया जा रहा है। ऐसे में देश में प्रशिक्षित ड्रोन पायलट की मांग तेजी से बढ़ी है।

इसे देखते हुए मेरठ के सरदार वल्लभ भाई पटेल कृषि विश्वविद्यालय में युवा कारोबारी विवि के साथ मिलकर नई मुहिम शुरू करने जा रहे हैं। एजी टेक इनोवेशन कंपनी विश्वविद्यालय के साथ मिलकर ड्रोन पायलट तैयार करेगी। इसके लिए ट्रेनिंग सेंटर की स्थापना की जा रही है। इसके बाद यहां ड्रोन पायलट के साथ ही ड्रोन मैकेनिक भी तैयार किए जाएंगे।

कृषि विश्वविद्यालय में ड्रोन पायलट एवं मैकेनिक तैयार करने वाले ट्रेनिंग सेंटर को तैयार कर लिया गया है। एजी टेक इनोवेशन कंपनी मेरठ के निदेशक संकेत जिंदल ने बताया कि 17 अक्तूबर को प्रदेश की राज्यपाल आनंदी बेन पटेल इस ड्रोन पायलट एवं मैकेनिक सेंटर का लोकार्पण करेंगी। इसी के साथ एजी टेक इनोवेशन कंपनी यहां प्रशिक्षण

देना शुरू कर देगी। उनका कहना है कि सरकार भी कृषि क्षेत्र में ड्रोन को बढ़ावा दे रही है, ताकि किसानों का समय और श्रम दोनों बच सके।

संकेत जिंदल ने बताया सिर्फ ड्रोन पायलट तैयार करना काफी नहीं होगा। यदि ड्रोन खराब होगा तो उसकी मरम्मत की जरूरत पड़ेगी। ऐसे में इस आवश्यकता को देखते हुए ड्रोन पायलट के साथ ही ड्रोन मैकेनिक भी तैयार करने का प्रस्ताव तैयार किया गया है। ताकि पायलट और मैकेनिक दोनों जरूरत पूरी हो सके। लाइसेंस और परमिट लेने के बाद भी ड्रोन उड़ाने के लिए कुछ शर्तों का पालन करना होता है। पहली शर्त यह है कि किसी भी प्रतिबंधित क्षेत्र में ड्रोन नहीं उड़ा सकते। ड्रोन चलाने का जो लाइसेंस मि?लता है, उसके लिए 18 से 65 साल के बीच की उम्र होनी चाहिए। इच्छुक व्यक्ति को नागरिक उड्डयन महानिदेशक द्वारा निर्धारित प्रशिक्षण प्रक्रिया से गुजरना होगा।

ड्रोन लाइसेंस आवेदक के पास कम से कम दसवीं या सामान्य स्तर के कोई दूसरी डिग्री होनी चाहिए। हाईटेंशन लाइन या मोबाइल टावर वाली जगहों पर ड्रोन उड़ाना है, तो अनुमति लेनी होगी। ग्रीन जोन के क्षेत्र में ड्रोन के माध्यम से दवाई छिड़काव नहीं कर सकेंगे। खराब मौसम या तेज हवा में ड्रोन उड़ाने पर रोक है। आबादी के आसपास खेती होने पर ड्रोन उड़ाने की अनुमति लेनी जरूरी है। 250 ग्राम या इससे कम वजन वाले ड्रोन को नैनो ड्रोन की कैटेगरी में रखा गया है। इस तरह के ड्रोन को उड़ाने के लिए किसी भी तरह के लाइसेंस या परमिशन की जरूरत नहीं होती। 250 ग्राम से दो किलोग्राम वजन वाले ड्रोन माइक्रो कैटेगरी में आते हैं। दो किलोग्राम से ज?यादा और 25 किलोग्राम से कम वजन वाले ड्रोन स्मॉल ड्रोन की कैटेगरी में आते हैं। इस तरह के ड्रोन को चलाने वाले व्यक्ति के पास ऑपरेटर परमिट-1 होना चाहिए। इसी तरह 25 किलोग्राम से ज्यादा और 150 किलोग्राम से कम वजन वाले ड्रोन मीडियम कैटेगरी में आते हैं। जबकि लार्ज कैटेगरी में आने वाले ड्रोन का वजन 150 किलोग्राम से ज्यादा होना चाहिए। ऐसे को उड़ाने के लिए ऑपरेटर परमिट-2 होना चाहिए।

यूपी एक बीमारू राज्य से एक समृद्ध राज्य के रूप में अपनी पहचान बना रहा है: योगी आदित्यनाथ

लखनउ, एजेंसी।
यूपी सीएम योगी ने कहा कि देश की सबसे बड़ी आबादी वाला यूपी आज पीएम नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह के मार्गदर्शन में लगातार आगे बढ़ रहा है। यूपी एक बीमारू राज्य से एक समृद्ध राज्य के रूप में अपनी पहचान बना रहा है। उन्होंने मध्य क्षेत्रीय परिषद की 25वीं बैठक को काशी विश्वनाथ की नगरी में आयोजित किये जाने का भी प्रस्ताव रखा।

कहा कि यूपी में रहने वाले समाज के वर्ग के लोगों के लिए कल्याणकारी योजनाएं संचालित की जा रहीं हैं। सीएम योगी अपराधियों को कड़ी चेतावनी देते हुए कि यूपी में किसी भी तरह का अपराध बदर्शत नहीं किया जाएगा। कहा कि सरकार सबके साथ है और सभी को सुरक्षा मुहैया करवाना यूपी सरकार की प्राथमिकता है। सीएम योगी ने कहा कि पिछले कुछ सालों में यूपी के हर जिले में तेजी से विकास हुआ है। सीएम योगी ने कहा कि आज पीएम नरेन्द्र मोदी के कुशल नेतृत्व में दुनिया ने देश के सामर्थ्य और शांति के प्रदर्शन को स्वीकार किया है। विभिन्न क्षेत्रों की परिषदों की बैठकों का आयोजन केन्द्र राज्य संबंधों को बेहतर बनाने का कार्य कर रहे हैं। इससे यह समस्याओं के समाधान का उपयुक्त मंच बन रहा है। यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ ने हिमालयी राज्यों को आपदाओं से सुरक्षित करने के लिए नदियों के कैचमेंट क्षेत्रों को सुरक्षित बनाने की पैरवी। कहा कि नदियों को चैनलाइज करने की दिशा में काम करने की आवश्यकता है। भाजपा की क्षेत्रीय परिषद की बैठक में सीएम योगी ने कहा कि मानसून के दौरान उत्तराखंड और हिमाचल के साथ हिमालयी राज्यों को आपदा की समस्या का सामना करना पड़ा है। अब कई नए क्षेत्र भी इसमें शामिल हो रहे हैं। उन्होंने नदियों के कैचमेंट एरिया को सुरक्षित किए जाने के साथ ही नदियों के चैनलाइजेशन की दिशा में पहल करने पर बल दिया।

साथ ही आकाशीय बिजली गिरने की घटनाओं को रोकने में भी मिशन मोड में कार्य करने पर बल दिया। योगी ने मानव वन्यजीव संघर्ष के विषय को भी क्षेत्रीय परिषद में रखा। कहा कि मानव वन्यजीव संघर्ष को कम करने को बेहतर व्यवस्था बनाने के लिए सभी राज्यों को परस्पर सहभागिता के साथ काम करना होगा।

ब्रिटेन में भारतवंशी मकान मालिक के खिलाफ मकान किराये पर देने के संबंध में 10 साल का प्रतिबंध

ब्रिटेन, एजेंसी।
इस डेटाबेस को पूरे ब्रिटेन में सभी स्थानीय अधिकारियों द्वारा देखा जा सकता है और यदि दास ने प्रतिबंध आदेश का उल्लंघन करने का प्रयास किया, तो उन्हें हिरासत में लिया जा सकता है या 30,000 पाउंड तक का जुर्माना लगाया जा सकता है। जॉनसन ने कहा, ''शेफील्ड सिटी काउंसिल आवास को किराये पर लगाने संबंधी गलत तौर-तरीकों और आपराधिक गतिविधियों पर कड़ी कार्रवाई करती है। काउंसिल शेफील्ड के लोगों की रक्षा करने और धोखेबाज मकान मालिकों को बाहर करने के लिए कदम उठाएगी।

ब्रिटेन में भारतीय मूल के एक मकान मालिक पर बार-बार सुरक्षा जरूरतों का उल्लंघन करने और आवास मानदंड संबंधी गंभीर अपराध करने के बाद उत्तरी इंग्लैंड में स्थानीय काउंसिल ने मकान किराये पर देने के संबंध में 10 साल तक का प्रतिबंध लगा दिया है। यह देश में इस तरह का अब तक का सबसे लंबा प्रतिबंध है। निलेंदु दास (55) को शेफील्ड में खतरनाक आवासीय इकाइयों को बार-बार किराए पर देने के बाद देश के जालसाज मकान मालिकों के डेटाबेस में शामिल किया गया है। इस डेटाबेस में नाम शामिल किए जाने पर उनके खिलाफ 10 वर्षों के लिए संपत्तियों को किराए पर देने या प्रबंधित करने पर प्रतिबंध लग गया है। शेफील्ड सिटी काउंसिल ने इस सप्ताह खुलासा किया कि मैनचेस्टर में प्रथम न्यायाधिकरण के फैसले के बाद अगस्त में प्रतिबंध जारी किया गया था और यह देश में सबसे लंबे समय तक प्रतिबंध वाला पहला आदेश है। शेफील्ड सिटी काउंसिल की हाउसिंग कमेटी के अध्यक्ष काउंसलर डगलस जॉनसन ने कहा ''निलेंदु दास की इकाइयों के खिलाफ जो प्रतिबंध लगाए गए हैं, वह उनके कृत्यों की गंभीरता, अग्नि सुरक्षा और अपने किरायेदारों की सुरक्षा के प्रति उनकी घोर लापरवाही को दर्शाती है। हम जालसाज मकान मालिकों के डेटाबेस में उनका नाम देखकर बहुत खुश हैं।'' उन्होंने कहा, ''दास के खिलाफ काउंसिल द्वारा पहले भी कई बार मुकदमा चलाया गया है। यह नया प्रतिबंध दास के आवास संबंधी अपराधों को जारी रखने के परिणामस्वरूप लगाया गया है। उनकी आवासीय इकाइयां काउंसिल के कानूनी अधिकारियों द्वारा देखी गई अब तक की सबसे खतरनाक इकाइयों में से थीं।'' इस डेटाबेस को पूरे ब्रिटेन में सभी स्थानीय अधिकारियों द्वारा देखा जा सकता है और यदि दास ने प्रतिबंध आदेश का उल्लंघन करने का प्रयास किया, तो उन्हें हिरासत में लिया जा सकता है या 30,000 पाउंड तक का जुर्माना लगाया जा सकता है। जॉनसन ने कहा, ''शेफील्ड सिटी काउंसिल आवास को किराये पर लगाने संबंधी गलत तौर-तरीकों और आपराधिक गतिविधियों पर कड़ी कार्रवाई करती है।

सिर्फ दवा खाकर ठीक हो गया महिला के तीसरे चरण का कैंसर, छह महीनों में कैसे हुआ चमत्कार

ब्रिटेन, एजेंसी। हर्निया पत्यारोपण के कारण महिला को दर्द हो रहा था। जांच के दौरान डॉक्टरों को उनके कैंसर के बारे में मालूम पड़ा। उन्हें स्वानसी में सिंगलटन अस्पताल के ऑन्कोलॉजिस्ट डॉ. क्रेग बैरिंगटन के पास भेजा गया जहां डॉक्टर ने उन्हें डोस्टारलिमैब निर्धारित की। वेल्स में रहने वाली एक महिला के साथ कुछ ऐसा चमत्कार हुआ, जिसके बारे में जानकर महिला खुद चकित रह गई। दरअसल, महिला तीसरे चरण के आंत कैंसर से ग्रस्त थी और एक नई दवाई के इस्तेमाल से ही वह पूरी तरह से ठीक हो गई। वेल्स की रहने वाली कैरी डाउनी ने महज छह महीने ही उस दवाई का सेवन किया था, और इतने कम समय में ही उनका कैंसर पूरी तरह से गायब हो गया। 42 वर्षीय कैरी डाउनी को एक साल पहले ही कैंसर का पता चला था जिसके बाद उन्हें छह महीनों तक डोस्टारलिमैब इन्फ्यूजन दिया गया था। हालांकि, इसके टेस्ट कराने पर पता चला कि उनका कैंसर पूरी तरह से ठीक हो चुका है। डोस्टारलिमैब इम्यूनोथेरेपी का एक रूप है, जो प्रतिरक्षा प्रणाली को कैंसर को नष्ट करने में मदद करता है। हर्निया प्रत्यारोपण के कारण महिला को दर्द हो रहा था। जांच के दौरान डॉक्टरों को उनके कैंसर के बारे में मालूम पड़ा। उन्हें स्वानसी में सिंगलटन अस्पताल के ऑन्कोलॉजिस्ट

डॉ. क्रेग बैरिंगटन के पास भेजा गया, उन्होंने ही महिला को डोस्टारलिमैब निर्धारित किया था। छह महीने के लिए महिला डोस्टारलिमैब दिया गया। महिला ने बताया, मैं थक चुकी थी, मुझे इधर-उधर दाने निकल गए थे, लेकिन यह कीमोथेरेपी, रेडियोथेरेपी या सर्जरी की तुलना में कुछ भी नहीं था। उनके उपचार के दौरान स्कैन से पता चला कि उनका ट्यूमर काफी ज्यादा सिकुड़ गया था और अंत में उनका कैंसर पूरी तरह से खत्म हो गया। पिछले साल भी 18 मलाशय कैंसर मरीजों को छह महीने तक यही दवाई दी गई थी और इस दवाई के उपयोग से सभी मरीजों का कैंसर पूरी तरह से खत्म हो गया।

जलवायु परिवर्तन के चलते समुद्री बर्फ पिघलने से 'पोलर बियर' का जीवन हुआ मुश्किल

ब्रिटेन, एजेंसी। इस दौरान हमने पाया कि तट पर अधिक दिन बिताने के कारण उनके दूध की गुणवत्ता और मात्रा में गिरावट आई। कुछ मादा भालुओं ने दूध देना पूरी तरह बंद कर दिया था। जिन भालुओं ने कम स्तनपान कराया, उन्हें अपनी ऊर्जा कम खर्च करने का फायदा हुआ। हालांकि जिन बच्चों को कम ऊर्जा वाला दूध मिला, उनके विकास पर इसका असर पड़ा। दीर्घावधि में, इससे बच्चों का जीवन कम हो सकता है और अंततः आबादी की गतिशीलता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

समुद्री बर्फ जब पिछलने लगती है, तो 'पोलर बियर' को कई महीनों तक बिना भोजन के भूमि पर रहना पड़ता है। भूखे रहने की यह अवधि सभी भालुओं के लिए चुनौतीपूर्ण होती है, खासकर उन मादा पोलर बियर के लिए, जो अपने बच्चों को स्तनपान कराती हैं। 'मरीन इकोलॉजी प्रोग्रेस सीरीज' में प्रकाशित हमारे शोध में पता चला है कि समुद्री बर्फ पिघलने पर भूमि पर बिताये जाने वाले समय बढ़ने से पोलर बियर के स्तनपान पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। खराब स्तनपान एक ऐसी वजह है, जिससे संभवतः हाल मेंपोलर बियर की आबादी में गिरावट हुई है। यह शोध बताता है कि ग्लोबल वार्मिंग के कारण समुद्री बर्फ के पिघलने से पोल बियर भविष्य में कैसे प्रभावित हो सकते हैं। समुद्री बर्फ आपको एक विशाल और अनुपयोगी चीज प्रतीत हो सकती है, लेकिन आर्कटिक की बर्फ में पोलर बियर को ऊर्जा से भरपूर सील मछली मिलती है, जिसका शिकार करके वे अपना पेट भरते हैं। कनाडा के पश्चिमी हडसन खाड़ी क्षेत्र में पोलर बियर मौसमी समुद्री बर्फ का अनुभव करते हैं, जो गर्मी के महीनों में पिघल जाती है। इसके चलते वे तब तक के लिए भूमि पर जाने के लिए मजबूर हो जाते हैं, जब तक कि सर्दी के ठंडे तापमान में समुद्री बर्फ फिर से न जम जाए। भूमि

पर रहते हुए, शिकार के अवसर बहुत कम होते हैं और पोलर बियर आमतौर पर अपना समय उपवास की स्थिति में बिताते हैं। इन मुश्किल महीनों के दौरान पोलर बियर जीवित रहने के लिए अपने शरीर में मौजूद विशाल वसा भंडार पर निर्भर रहते हैं। जब ये भालू गर्मी की शुरुआत में तट पर आते हैं, तो इनमें से कुछ के शरीर में लगभग 50 प्रतिशत तक वसा कम हो जाती है।

जमीन पर रहते हुए, पोलर बियर का वजन प्रति दिन लगभग एक किलोग्राम कम हो सकता है, इसलिए उन्हें अपनी ऊर्जा का सावधानीपूर्वक खर्च करने की आवश्यकता होती है। इसके लिए अधिकांश पोलर बियर गतिविधियां कम कर देते हैं और ऊर्जा बचाते हैं। मादाओं को बच्चों के स्तनपान के अतिरिक्त बोझ को भी ध्यान में रखना होता है। पोलर बियर के दूध में काफी ऊर्जा होती है। इसमें 35 प्रतिशत तक वसा होती है और यह क्रीम की तरह होता है। यह उच्च वसा वाला दूध बच्चों के तेज विकास में मदद करता है, जिनका वजन जन्म के समय केवल 600 ग्राम होता है, जो लगभग ढाई साल की उम्र तक पहुंचने पर 100 किलोग्राम से अधिक हो जाता है और वे अपनी माताओं को छोड़कर स्वतंत्र हो जाते हैं।

भूमि पर बिताए गए समय के दौरान मादा पोलर बियर को कठिन हालात का सामना करना पड़ता है। स्तनपान बंद करने पर उन्हें बढ़ते बच्चों के स्वास्थ्य के जोखिम में पड़ने का खतरा होता है जबकि स्तनपान जारी रखने पर उनकी खुद की जान खतरे में पड़ जाती है क्योंकि उनका ऊर्जा भंडार खत्म होने लगता है। मादाएं स्तनपान कैसे कराती हैं, यह बेहतर ढंग से समझने के लिए हमारी शोध टीम ने 1980 और 1990 के दशक में पोलर बियर के भूमि पर रहने के दौरान एकत्रित दूध के नमूनों से संबंधित डेटा पर गौर किया। हमने समुद्री बर्फ पिघलने की तारीखों के आधार पर अनुमान लगाया कि प्रत्येक मादा पोलर बियर कितने समय से उपवास कर रही थी।

इस दौरान हमने पाया कि तट पर अधिक दिन बिताने के कारण उनके दूध की गुणवत्ता और मात्रा में गिरावट आई।कुछ मादा भालुओं ने दूध देना पूरी तरह बंद कर दिया था। जिन भालुओं ने कम स्तनपान कराया, उन्हें अपनी ऊर्जा कम खर्च करने का फायदा हुआ। हालांकि जिन बच्चों को कम ऊर्जा वाला दूध मिला, उनके विकास पर इसका असर पड़ा। दीर्घावधि में, इससे बच्चों का जीवन कम हो सकता है और अंततः आबादी की गतिशीलता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक देवन प्रसाद द्वारा आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-24, सेक्टर-8, नोएडा, उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं - बी-126, मायापुरी इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित। सह संपादकः रंजीत राय फोन नं-011-45795464 (नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा दिल्ली उच्च न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. DELHIN/2010/32488, Email: news@pratahkiran.com, मो. 9212228045, 8130691216, 9971557129